ISSN-2347-5145 (Print)
ISSN- 2454-2687 (Online)

olume-7 | Issue-1 | January-March [illegible]

nternational Journal of Reviews and Research in Social Sciences

JRRSS

n International Peer-reviewed
urnal of Humanities and Social Sciences

ISSN 2347-5145 (Print)
2454-2687 (Online)

Available online at
www.anvpublication.org

Vol. 07| Issue-01|
January- March 2019

International Journal of Reviews and Research in Social Sciences

RESEARCH ARTICLE

सत्यभामा आड़िल के उपन्यास 'एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट' में नारी–पुरुष का अंतर्द्वन्द्व

डॉ. रेणु सक्सेना[1], श्रीमती संध्या पुजारी[2]
[1]प्राध्यापक–विभागाध्यक्ष (हिन्दी), शास. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान, महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
[2]शोध–छात्रा, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
*Corresponding Author E-mail:

ABSTRACT:
प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. सत्यभामा आड़िल ने 'एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक' में सामाजि चेतना तथा समाज में नारी को महत्व प्रदान करना एवं समाज और व्यक्ति के बीच जो भी समस्याएँ उन्हें भी सुधारने का प्रयास किया गया है। दलित वर्ग के शोषण के साथ–साथ नारी को भोग विलासिता की वस्तु समझा जाता है। मानव जीवन में अनिवार्य रूप से सुधार करने, प्राचीन कुरीतियों त्यागने का प्रयास भी इस उपन्यास का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। आड़िल जी की भाषा सरल, सहज त विषयवस्तु के अनुरूप है। इस उपन्यास के माध्यम से यथार्थ एवं व्यक्ति के अतीत का अनुभव ही व्यक्ति को आगे बढ़ ने की प्रेरणा दे ता है।

KEYWORDS: प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट

प्रस्तावना :–
भारत एक अति प्राचीन देश है, इस देश की प्र संस्कृति उच्च कोटि की रही है, जहाँ नारी यथेष्ट सम्मान एवं समानता का अधिकार प्राप्त विशेषकर वैदिक युग में। वेदों में नारी–जीवन सुखद वर्णन मिलता है, उसे अर्धांगिनी के रू समानता का अधिकार था। "शतपथ ब्राह्मण ग्र उसे 'अर्धो ह या एवः आत्मनो जाया' कहा है अ स्त्री अपना आधा भाग है, जो वैदिक स्त्रियों योग्यता प्रकट करता है। धार्मिक दृष्टि से यत्किंचित भी अपात्र नहीं समझा जाता था, यदि पुरुष विवाह करने से मना कर दे तो उस ऐसी अपात्रता का अधिकारी बनना पड़ता था। ग्रंथ अर्थात् शतपथ ब्राह्मण के वचन के अनु

Received on 18.11.2018 Modified on 12.12.2018
Accepted on 07.01.2019
© A&V Publications All right reserved
Int. J. Rev. and Res. Social Sci. 2019; 7(1):174-178.

SANDIPANI ACADEMY DIST. DURG (C.G.) ACHHOTI (MURAMUNDA)

'अयज्ञीयः वा एव य अपत्नीकः' जो विवाह नहीं करता वह अयज्ञीय अर्थात् यज्ञकर्म के लिए अपात्र है।"[1]

स्त्रियों के सम्मान में ऋग्वेद का भी कथन तत्कालीन समाज–व्यवस्था का विवरण देता है। "जाये दस्तं (ऋग्वेद – 3–53–4) अर्थात् पत्नी ही घर–गृह है। उसका विशदीकरण करते हुए मनु कहते हैं... 'न गृहम गृह मित्याहुः, गृहिणी गृह मुच्यते' अर्थात् केवल घर ही घर नहीं है, वास्तविक घर तो पत्नी है।"[2]

उक्त कालखंडों में यज्ञादि कार्यों में उसे समानता का अधिकार प्राप्त था, नारी का उपनयन संस्कार भी होता था। आगे चलकर स्मृतिकाल में किन्हीं कारणों से उन्हें उपनयन संस्कार से वंचित कर दिया गया। मध्ययुग में उन्हें वेदाधिकार से वंचित कर दिया गया। इस प्रकार क्रमशः पुरुष प्रधान समाज ने नारी के अधिकार क्षेत्र को पंगु व शिथिल कर दिया। इसके पीछे कई कारणों को कारणीभूत माना गया है। वर्तमान काल के विद्वानों ने इसे नारी के अधिकार पर कुठाराघात कहा है, कइयों ने अनेक कारणों को इसके लिए उत्तरदायी माना है।

शक, पार्शियन, कुषाण आदि जातियों के भारत पर अधिकार होने के कारण नारी विषयक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया, पश्चात् काल में अनार्य स्त्रियों से विवाह होने लगा, यह एक प्रकार का 'अनुलोम' विवाह था। अनार्य कुल की कन्याओं को संस्कृत का यथेष्ट ज्ञान नहीं होने के कारण उन्हें यज्ञाधिकार देना संभव नहीं समझा गया। उत्थान–पतन के क्रम में नारी के प्रति चिंतन की धारा में विकृतियाँ आती गई, उसे मात्र भोग की वस्तु ही समझा गया एवं उसे सबला से अबला बना दिया गया।

वर्तमान की भीषण परिस्थिति के लिए हमारा भारतीय समाज ही उत्तरदायी रहा है, जो चिंतनीय है। जहाँ पूर्व में नारी उत्कृष्ट गृहणी, श्रद्धालु, भक्तिमति, ब्रह्मवादिनी, प्रवीण व विदुषी हुआ करती थी, साथ ही युद्ध–क्षेत्र में भाग लेती थी। उनकी संततियों का वर्तमान कितना दुर्दशाग्रस्त एवं चिंतनीय बन गया है। इसके पार्श्व में हमारा अहंकारयुक्त सोच, एकता का अभाव, संकीर्णता आदि कारक रहे हैं।

भारतीय राष्ट्र व समाज में किसी सक्षम चक्रवर्ती सम्राट के अभाव के कारण छोटे–छोटे निरंकुश राज्यों का उदय हुआ। भोग–विलास की कुत्सित वृत्ति ने नारी की समानता पर मनवांछित प्रकोप को रोपित कर दिया, रहा–सहा कसर सम्राट पृथ्वीराज की पराजय व भारत पर पूर्णरूपेण विदेशी आक्रमणकारियों का प्रभाव भी नारी के ह्रास का एक मुख्य कारक रहा है। इस प्रकार हजारों वर्षों की नारकीय परतंत्रता ने नारी का जीवन संकटमय बना दिया। अंग्रेजों ने जमीदारी प्रथा को प्रारंभ कर सामंतवाद को शक्तिशाली बना दिया। सक्षमों ने नारी को मात्र भोग की वस्तु समझने की एकपक्षीय धारणा को बल प्रदान करने में अपनी सहभागिता की है, जो एक मानवीय कलंक है।

स्वतंत्रता के पश्चात् से नारी जाति की मानसिकता में परिवर्तन आया, जिसमें अनेक लेखकों एवं साहसी लेखिकाओं ने अपना अमूल्य योगदान दिया, जो निरंतर जारी है,

जिससे समाज में नारी–जाति का उत्थान परिलक्षित हो रहा है। उनकी भूमिका में गौरव का अनुभव होने लगा है, फिर भी यथेष्ट सफलता कोसों दूर है।

विविध आयामी व्यक्तित्व की धनी सत्यभामा आड़िल की साहित्यिक कृतियाँ हिंदी व छत्तीसगढ़ी गद्य और पद्य दोनों में उनकी लेखनी चली है। विचारों, कल्पनाओं का जीवंत प्रतिबिंब उनकी साहित्यिक कृतियों में देखते बनता है। छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की शृंखला में सत्यभामा आड़िल का नाम भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने एक महिला–साहित्यकार के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दी है। सत्यभामा आड़िल का पारिवारिक जीवन प्रारंभ से ही रा ट्रप्रेमी तथा स्वतंत्रता प्रेमी रहा है। सत्यभामा आड़िल ने अपनी गद्य–शैली में नारी–समस्या का जीवंत चित्रण किया है।

उपन्यास का मूल भाव :

डॉ. आड़िल के उपन्यास 'प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक' में नारी–जाति के प्रति संवेदना, सहानुभूति एवं चेतना का शंखनाद है, जो प्रशंसनीय है। उपन्यास में नारी–समाज में परिवर्तन के लिए जो बिंदु आवश्यक एवं अनिवार्य हैं, जैसे नारी–प्रताड़ना, भोग, वासना, वेश्यावृत्ति, आस्था–अनास्था, मैत्री, सामंतशाही आदि के स्थान–स्थान पर चित्रण हैं।

'अयज्ञीयः वा एव य अपत्नीकः' जो विवाह नहीं करता वह अयज्ञीय अर्थात् यज्ञकर्म के लिए अपात्र है।"[1]

स्त्रियों के सम्मान में ऋग्वेद का भी कथन तत्कालीन समाज–व्यवस्था का विवरण देता है। "जाये दस्तं (ऋग्वेद – 3–53–4) अर्थात् पत्नी ही घर–गृह है। उसका विशदीकरण करते हुए मनु कहते हैं... 'न गृहम गृह मित्याहुः, गृहिणी गृह मुच्यते' अर्थात् केवल घर ही घर नहीं है, वास्तविक घर तो पत्नी है।"[2]

उक्त कालखंडों में यज्ञादि कार्यों में उसे समानता का अधिकार प्राप्त था, नारी का उपनयन संस्कार भी होता था। आगे चलकर स्मृतिकाल में किन्हीं कारणों से उन्हें उपनयन संस्कार से वंचित कर दिया गया। मध्ययुग में उन्हें वेदाधिकार से वंचित कर दिया गया। इस प्रकार क्रमशः पुरुष प्रधान समाज ने नारी के अधिकार क्षेत्र को पंगु व शिथिल कर दिया। इसके पीछे कई कारणों को कारणीभूत माना गया है। वर्तमान काल के विद्वानों ने इसे नारी के अधिकार पर कुठाराघात कहा है, कइयों ने अनेक कारणों को इसके लिए उत्तरदायी माना है।

शक, पार्शियन, कुषाण आदि जातियों के भारत पर अधिकार होने के कारण नारी विषयक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया, पश्चात् काल में अनार्य स्त्रियों से विवाह होने लगा, यह एक प्रकार का 'अनुलोम' विवाह था। अनार्य कुल की कन्याओं को संस्कृत का यथेष्ट ज्ञान नहीं होने के कारण उन्हें यज्ञाधिकार देना संभव नहीं समझा गया। उत्थान–पतन के क्रम में नारी के प्रति चिंतन की धारा में विकृतियाँ आती गई, उसे मात्र भोग की वस्तु ही समझा गया एवं उसे सबला से अबला बना दिया गया।

वर्तमान की भीषण परिस्थिति के लिए हमारा भारतीय समाज ही उत्तरदायी रहा है, जो चिंतनीय है। जहाँ पूर्व में नारी उत्कृष्ट गृहणी, श्रद्धालु, भक्तिमति, ब्रह्मवादिनी, प्रवीण व विदुषी हुआ करती थी, साथ ही युद्ध–क्षेत्र में भाग लेती थी। उनकी संततियों का वर्तमान कितना दुर्दशाग्रस्त एवं चिंतनीय बन गया है। इसके पार्श्व में हमारा अहंकारयुक्त सोच, एकता का अभाव, संकीर्णता आदि कारक रहे हैं।

भारतीय राष्ट्र व समाज में किसी सक्षम चक्रवर्ती सम्राट के अभाव के कारण छोटे–छोटे निरंकुश राज्यों का उदय हुआ। भोग–विलास की कुत्सित वृत्ति ने नारी की सामानता पर मनवांछित प्रकोप को रोपित कर दिया, रहा–सहा कसर सम्राट पृथ्वीराज की पराजय व भारत पर पूर्णरूपेण विदेशी आक्रमणकारियों का प्रभाव भी नारी के ह्रास का एक मुख्य कारक रहा है। इस प्रकार हजारों वर्षों की नारकीय परतंत्रता ने नारी का जीवन संकटमय बना दिया। अंग्रेजों ने जमींदारी प्रथा को प्रारंभ कर सामंतवाद को शक्तिशाली बना दिया। सक्षमों ने नारी को मात्र भोग की वस्तु समझने की एकपक्षीय धारणा को बल प्रदान करने में अपनी सहभागिता की है, जो एक मानवीय कलंक है।

स्वतंत्रता के पश्चात् से नारी जाति की मानसिकता में परिवर्तन आया, जिसमें अनेक लेखकों एवं साहसी लेखिकाओं ने अपना अमूल्य योगदान दिया, जो निरंतर जारी है,

जिससे समाज में नारी–जाति का उत्थान परिलक्षित हो रहा है। उनकी भूमिका में गौरव का अनुभव होने लगा है, फिर भी यथेष्ट सफलता कोसों दूर है।

विविध आयामी व्यक्तित्व की धनी सत्यभामा आड़िल की साहित्यिक कृतियाँ हिंदी व छत्तीसगढ़ी गद्य और पद्य दोनों में उनकी लेखनी चली है। विचारों, कल्पनाओं का जीवंत प्रतिबिंब उनकी साहित्यिक कृतियों में देखते बनता है। छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की शृंखला में सत्यभामा आड़िल का नाम भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने एक महिला–साहित्यकार के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दी है। सत्यभामा आड़िल का पारिवारिक जीवन प्रारंभ से ही रा ट्रप्रेमी तथा स्वतंत्रता प्रेमी रहा है। सत्यभामा आड़िल ने अपनी गद्य–शैली में नारी–समस्या का जीवंत चित्रण किया है।

उपन्यास का मूल भाव :

डॉ. आड़िल के उपन्यास 'प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक' में नारी–जाति के प्रति संवेदना, सहानुभूति एवं चेतना का शंखनाद है, जो प्रशंसनीय है। उपन्यास में नारी–समाज में परिवर्तन के लिए जो बिंदु आवश्यक एवं अनिवार्य हैं, जैसे नारी–प्रताड़ना, भोग, वासना, वेश्यावृत्ति, आस्था–अनास्था, मैत्री, सामंतशाही आदि के स्थान–स्थान पर चित्रण हैं।

एक वेश्या द्वारा प्रताड़ित चुन्नी का हृदय–परिवर्तन, नारी के प्रति श्रद्धा–भाव का जागरण, परिस्थितियाँ एक सी नहीं रहती, नारी से घृणा करने वाला चुन्नी भगवत् कृपा अथवा सांई कृपा से मनुष्यता की ओर मुड़ता है, साथ–ही वेश्या में श्रद्धामयी नारित्व का दर्शन करता है; जिसे एक चमत्कार ही कहा जा सकता है। चुन्नी का नारी के प्रति श्रद्धा–भाव का जागरण तो हुआ, किंतु वह मानवीय जगत् से एकाएक उदासीन हो गया। सत्यभामा आड़िल ने पात्र चुन्नी के माध्यम से समाज के उतार–चढ़ाव, घृणा से श्रद्धा की ओर का मार्ग–प्रशस्त करने का प्रयास किया है।

उपन्यास के मूल कथानक में दो मित्रों के मध्य द्वंद्व, तर्क–कुतर्क, आचार–विचार, आदर्श–अनादर्श आदि को लेकर विचारों का चक्र चलता है। नारी के प्रति प्रतिशोध व मात्र भोग की कुत्सित भावना रखना, साथ–ही संस्कारहीनता की पराकाष्ठा का अतिक्रमण करना, अंत में हीन भावना से ग्रसित मित्र का सद्मार्ग ग्रहण करना, इस परिवर्तन में दूसरे मित्र के निष्काम आदर्श की महत्वपूर्ण भूमिका को लेखिका ने तथ्य एवं तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

चुन्नी उपन्यास का नायक है, जो एक असहज एवं अनास्थावादी युवक है, साथ–ही सामंतवादी अहम से ग्रस्त विकृत मानसिकता से परिपूर्ण है। नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण उद्दंड एवं प्रतिशोध से भरा हुआ है। वह नारी को शून्य समझता है। वह नारी को बर्बरतापूर्वक भोगने का आदी है, जिसे उसने अपनी वंश–परंपरा से प्राप्त किया है। इसके मूल में विकृति की एक कहानी है, जिससे वह अस्थिर व असहज आचरण करता है, उन्मुक्त भोग को तृप्ति का साधन समझता है। वहीं उसका परम मित्र व उपन्यास का खलनायक महेन्द्र एक आदर्श चरित्रवान युवक है, जो अपने मित्र चुन्नी को सद्मार्ग पर लाने के लिए कुछ भी त्याग करने के लिए प्रस्तुत रहता है। इस प्रकार दो विपरीत ध्रुवों की आश्चर्यजनक मित्रता को लेखिका ने सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। उपन्यास में निहित कुछ प्रमुख बिन्दुओं को प्रस्तुत करना समीचीन होगा, जैसे– सामंतशाही और नारी, आदर्श मैत्री, वंशदोष, वेश्या, व चुन्नी का सद्मार्ग पर आना। चुन्नी की पत्नी की परंपरा व संस्कृति पर अटूट श्रद्धा।

आदर्श मैत्री (मित्रता) :

महेन्द्र अपने मित्र चुन्नी को सुखद मार्ग में लाने के लिए कठिन प्रयास करता है। यद्यपि चुन्नी, महेन्द्र के प्रति श्रद्धा भाव रखता है, किंतु नारी–विषयक विचारों में उसका विरोधाभास रहता है। इसके लिए उसकी वंश पृष्ठभूमि के कलुषित विचार ही उत्तरदायी रहे हैं। चुन्नी एवं महेन्द्र के चरित्रगत विशेषताओं में अंतर होता है। चरित्र ही मनुष्य का सब कुछ होता है, उसके अभाव में मनुष्य में शून्यता आ जाती है। महेन्द्र में आदर्श और अनुशासन का विचित्र संगम होता है।

"आनुचर्य से अनुशासन बनता है और साहचर्य से चरित्र बनता है। अनुशासन और चरित्र का साथ चोली–दामन का है। दामन में आग लगे तो चोली पर दाग आना ही है, इसी तरह चोली में दाग लगे तो दामन में दाग आना ही है। इसी संदर्भ में अनुशासन ही चरित्र का सर्वस्व है और चरित्र ही अनुशासन का सर्वस्व है।"[3]

वंश–परंपरा एवं रक्त–दोष :

मनुष्य स्वेच्छाचारिता की भावना के कारण उच्छृंखल होता है, जिसके पार्श्व में धन एवं राजशक्ति का विशेष योगदान होता है। सामंतवादी परंपरा में नारी को तुच्छ एवं हेय दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति उसकी आसुरी प्रवृत्ति का परिचायक है। नारी की उपेक्षा एक अभिशाप है, जो उसके गले बाँध दिया गया है। सामंतवादी व्यवस्था में नारी को भोग की वस्तु समझा गया, उसके सौंदर्य भोग पर मात्र इन्हीं लोगों का ही एकाधिकार रहा है। इनकी निकृष्ट सोच ने नारी को खिलौना समझा, जिसका विकृत एवं घृणास्पद रूप अद्यपर्यंत भी किसी–न–किसी रूप में विद्यमान है। वंश–परंपरा एवं रक्त–दोष ने भी इस परंपरा को संबल दिया, जिससे सामंतवादी व्यवस्था ने नारी को अबला व असहाय बना दिया।

"मेरे रक्त में वंश–परंपरा का संस्कार मौजूद है महेन्द्र, जो मेरे पिता, दादा और परदादा में था। मेरे दादा ने पाँच शादियाँ की थी और तीन रखैलें थीं उनकी। मेरे पिताजी ने तीन शादियाँ की थी। मेरी माँ पंद्रह वर्ष की थी, पिताजी उस समय अधेड़ हो चुके थे.... करीब पैंतीस के। वे माँ पर बुरी तरह आशिक हो गए और उनसे शादी कर ली, क्योंकि माँ के बाप गरीब थे..... पैसे–पैसे के लिए मोहताज थे।

एक वर्ष बाद मैं पैदा हुआ। मैं दो वर्ष का भी नहीं हुआ था कि पिताजी ने माँ को छोड़ दिया.... हमेशा–हमेशा के लिए। उन्हें मेरी जरूरत थी वंश कायम रखने के लिए एक उत्तराधिकारी के रूप में। मुझे अपने पास ही रख लिया। मेरी दो सौतेली माँ पहले से मौजूद थीं। उन्हीं के संरक्षण में मेरा लालन–पालन हुआ।"[4]

नारी की उपेक्षा :

प्रायः नारी समाज को ही उपेक्षित रहने के लिए बाध्य किया गया। सीमोन द बोउवार ने स्त्री की विचित्र स्थिति का विश्लेषण करते हुए ठीक ही कहा है– "औरत बाध्य हुई, अन्याय की भूमिका निभाने के लिए, कभी वह गुलाम रही, कभी देवी बनी, किंतु अपने मानव स्वरूप का चुनाव वह कभी नहीं कर सकी।"[5]

वेश्यावृत्ति एवं उनका शोषण :

पुरुष प्रधान एवं भोगवादी प्रवृत्ति ने नारी को शोषण का शिकार बनाकर उसे वेश्या बनने के लिए विवश कर दिया। इस प्रकार की प्रथा मात्र आज की देन नहीं है, प्रत्युत यह एक प्राचीन परंपरा भी रही है। प्राचीनकाल में वेश्याओं की यथेष्ट मान्यता भी रही है, किंतु आज इसे हेय, घृणा व उपहास की दृष्टि से देखा जाता है। "मुझे नारी से अत्यधिक घृणा है, नफरत है, मैं उसे कुचलते जाता हूँ, रौंदते जाता हूँ। जब भी किसी लड़की को देखता हूँ, उसे रौंदने की, नोचने की तीव्र इच्छा जाग पड़ती है। इसलिए मैं 'प्रास' के यहाँ चला जाता हूँ, यह भी समाज का एक अंग है। समाज का बहुत बड़ा भाग, इससे संबंधित है, क्योंकि अभी संस्कारों की बेड़ियाँ इससे बँधी हैं। इन बेड़ियों से समाज मुक्त नहीं हुआ है और न कभी होगा। तुम देखो आदिकाल से लेकर अब तक का इतिहास। हर युग में यह अंग रहा है। कभी सामाजिक मान्यता मिली, कभी असामाजिक, अनैतिक करार किया गया। पर चाहे खुले रूप में हो या छुपे ढंग से यह अंग बना ही है, क्योंकि यह भी एक प्रकार का शोषण है। मनुष्य की अहं चेतना के कारण यह शोषण कभी खत्म नहीं होता।"[6]

पूर्व काल में वेश्या को इतना निकृष्ट नहीं समझा जाता था, उसका स्थान सम्मानयुक्त था। भरतमुनी ने नाट्यशास्त्र में इसका संकेत दिया है। नाट्यशास्त्र में वेश्याओं का विशिष्ट स्थान है। इस ग्रंथ में जिस समाज का चित्रण है, उसमें वेश्याएँ अवहेलित अथवा निंदित नहीं थी। रामायण, महाभारत जैसे प्राचीन धर्मग्रंथों में भी वारांगनाओं का समादर देखने में आता है। इसलिए भरत के नाटयशास्त्र में 23वें अध्याय में पूरी तरह वेश्याओं की ही चर्चा है। भरत ने मदनातुरा, कुलागनाओं तथा वेश्याओं का उल्लेख किया है। साथ–ही नाना प्रकार की नायिकाओं, उनके कामोपचार, दिव्य संभोग, केशाकर्षण, वस्त्राकर्षण आदि का भी वर्णन है।"[7]

उमा एक आदर्श नारी के रूप में :

उमा चुन्नी की पत्नी है, जो भारतीय संस्कृति में पली–बढ़ी है। उसके लिए वह सब कुछ है, वह दीदी (लेखिका) के भावना का आदर करते हुए कहती है, "आप चाहती हैं कि मैं अपने अधिकारों के लिए लड़ूँ। मगर, दीदी अधिकार लड़ने से नहीं मिलता, लड़कर लेने में कौन सा सुख मिल जाएगा, कौन सी शांति मिल जाएगी। शांति और सुख मन के अनुभव की वस्तु है दीदी।"[8]

"वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः समृतः
पतिसेवा गुरौ वासो गृहार्योऽग्निपरिक्रमा।। (मनु. 2167)

काल, क्लेश, कल्पना, कलि इन सबकी उत्पत्ति कलह से होती है। इसलिए सुख चाहने वाली स्त्रियों को चाहिए कि इसको अपने घर में प्रवेश ही नहीं दें। कलह धन, धर्म, गुण, शरीर और कुल को नाश करने वाला अग्नि है।"[9]

उपन्यास में खड़ी बोली, शुद्ध और परिष्कृत हिंदी, तत्सम एवं तद्भव शब्द, अंग्रेजी के शब्द, मुहायरों, कहावतों, शैलीगत विशेषताएँ, वातानुकूल सरस एवं प्रवाहमयी हैं। भावों की गति संयमित एवं नियंत्रित है। उपन्यास में वातानुकूल शैली का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार वर्णनात्मकता, आलंकारिता, व्यंग्य, घृणा आदि उनकी शैलीगत विशेषताएँ लक्षित होती हैं।

उपरोक्त प्रकार का आचरण करने वाली स्त्री देवी के तुल्य होती है। प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. सत्यभामा आड़िल ने नारी–चेतना के लिए अनेक बिन्दुओं को स्पर्श करते हुए उनके निराकरण एवं जागरण का सशक्त आह्वान किया है।

संदर्भ–ग्रंथ :

1. हरदास, महामहोपाध्याय बालशास्त्री. वैदिक राष्ट्र दर्शन. नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज झण्डेवाला, प्रथम संस्करण युगान्द 5093 (विक्रम संवत 2048) 1991 ई., द्वितीय संस्करण युगान्द 5101 (विक्रम संवत 2056) 2000 ई., पृ. 120.
2. हरदास, महामहोपाध्याय बालशास्त्री. वैदिक राष्ट्र दर्शन. नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज झण्डेवाला, प्रथम संस्करण युगान्द 5093 (विक्रम संवत 2048) 1991 ई., द्वितीय संस्करण युगान्द 5101 (विक्रम संवत 2056) 2000 ई., पृ. 121.
3. विष्णुशरण बाबा. ज्ञानगंगा. रायपुर : मानव मंगल साधना संस्थान, बसना, 1993, पृ. 110.
4. आड़िल, सत्यभामा. एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ. 19.
5. चटर्जी, रत्ना. हिंदी उपन्यासों में नारी अस्मिता. नई दिल्ली : बी.के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, 28, शॉपिंग सेंटर, कर्मपुरा, प्रथम संस्करण 2012, पृ. 62.
6. आड़िल, सत्यभामा. एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ. 16.
7. पांडेय, शशिभूषण (संपा.). डॉ. चन्द्र समग्र भाग–3, डॉ. चन्द्र के निबंधों, नाटकों, कहानियों आदि का संकलन, भारतेन्दु उदय एवं अस्त लेख. वाराणसी : हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा.लि. सी 21/30, प्रथम संस्करण 1996, पृ. 413.
8. आड़िल, सत्यभामा. एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ. 81.
9. गोयन्दका, जयदयाल. नारी धर्म. गोरखपुर : गोविन्द भवन कार्यालय गीता प्रेस, पृ. 12.

संदर्भ–ग्रंथ :

1. हरदास, महामहोपाध्याय बालशास्त्री. वैदिक राष्ट्र दर्शन. नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज झण्डेवाला, प्रथम संस्करण युगान्द 5093 (विक्रम संवत 2048) 1991 ई., द्वितीय संस्करण युगान्द 5101 (विक्रम संवत 2056) 2000 ई., पृ. 120.
2. हरदास, महामहोपाध्याय बालशास्त्री. वैदिक राष्ट्र दर्शन. नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज झण्डेवाला, प्रथम संस्करण युगान्द 5093 (विक्रम संवत 2048) 1991 ई., द्वितीय संस्करण युगान्द 5101 (विक्रम संवत 2056) 2000 ई., पृ. 121.
3. विष्णुशरण बाबा. ज्ञानगंगा. रायपुर : मानव मंगल साधना संस्थान, बसना, 1993, पृ. 110.
4. आड़िल, सत्यभामा. एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ. 19.
5. चटर्जी, रत्ना. हिंदी उपन्यासों में नारी अस्मिता. नई दिल्ली : बी.के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, 28, शॉपिंग सेंटर, कर्मपुरा, प्रथम संस्करण 2012, पृ. 62.
6. आड़िल, सत्यभामा. एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ. 16.
7. पांडेय, शशिभूषण (संपा.). डॉ. चन्द्र समग्र भाग–3, डॉ. चन्द्र के निबंधों, नाटकों, कहानियों आदि का संकलन, भारतेन्दु उदय एवं अस्त लेख. वाराणसी : हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा.लि. सी 21/30, प्रथम संस्करण 1996, पृ. 413.
8. आड़िल, सत्यभामा. एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ. 81.
9. गोयन्दका, जयदयाल. नारी धर्म. गोरखपुर : गोविन्द भवन कार्यालय गीता प्रेस, पृ. 12.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति लक्ष्य को प्राप्त करने की चुनौतियां

डॉ. संध्या पुजारी,
(विभागाध्यक्ष)
संदीपनी अकेडमी, अछोटी, दुर्ग, छत्तीसगढ़

सारांश

पाश्चात्य सभ्यता में भारतीय शिक्षा का स्तर बहुत ऊंचा था, परंतु समय के साथ विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण के पश्चात भारतीय शिक्षा का स्तर निरंतर गिरता गया। नई शिक्षा नीति शिक्षा सुधारों की नई उम्मीद प्रदान करती है। परंतु जब तक किसी भी नीति पर कानून नहीं लाया जाता उस नीति के असफल होने की प्रबल संभावनाएं होती हैं।

विविधताओं से भरे भारत देश में नई शिक्षा नीति को सभी राज्यों में भिन्न–भिन्न तरीके से लागू करने का प्रावधान किया गया। शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने नवाचार अनुसंधान शैक्षिक तकनीकी व्यवसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति की आवश्यकता है। भारत के निर्माण के लिए शिक्षा का ढांचा सुधारना ही होगा, कहीं ऐसा ना हो जाए कि शिक्षा की गुणवत्ता के मामले में हम कहीं दूर छूट जाए।

नई शिक्षा नीति 2020 से हम नव निर्माण की आशा रखते हैं। इसी के तहत केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 21वीं सदी के भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दी है। अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समक्ष ले आएगी।

शब्दकोश

शिक्षा, तकनीकी , अध्यापक ,राष्ट्रीय शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, गुणवत्ता, रूपरेखा, प्री स्कूल।

भूमिका

शिक्षा का अर्थ व्यापक होता है। शिक्षा से ही बालकों में नैतिकता स्वस्थ मानसिकता विवेक चारित्रिक एवं बौद्धिक विकास संभव होता है। शिक्षा का प्रभाव बालक के समुचित एवं संतुलित विकास पर पड़ना चाहिए। मात्र परीक्षा उत्तीर्ण करना ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए। शिक्षा के रूप में मानव सेवा, त्याग, प्रेम एवं सहानुभूति आदि की भी शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वह अनुशासन एवं नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की नई शिक्षा नीति है, जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत 2030 तक सफल नामांकन अनुपात को 100 प्रतिशत पर लाने का लक्ष्य रखा गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम परिवर्तन कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्य के तहत् वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत नामांकन के साथ–साथ पूर्व विद्यालय से माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के सार्वभौमिकता का लक्ष्य रखा गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम परिवर्तन कर शिक्षा मंत्रालय का दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्य के तहत वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत के साथ–साथ पूर्व विद्यालय से माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के सार्वभौमिकता का लक्ष्य रखा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य

उच्च शिक्षण संस्थानों में नए गुणवत्ता को स्थापित करना आसान पड़ता है, जो वैश्विक मानकों के अनुरूप होगा। 2030 तक शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय होगी।

नई शिक्षा नीति 2010 के महत्वपूर्ण प्रावधान

शिक्षण की न्यूनतम योग्यता 4 वर्ष एकीकृत बी.एड. शिक्षक, शिक्षा के लिए एक नवीन और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण परिषद तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के परामर्श से बनाई जाएगी । 2030 तक शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा की पहुंच एक बराबरी गुणवत्ता वहनीयता और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। नई शिक्षा नीति के तहत केंद्र व राज्य सरकार के सहायता से शिक्षा क्षेत्र पर देश की जीडीपी में 6 प्रतिशत निवेश का लक्ष्य रखा गया है।

भारतीय शिक्षा की विकास यात्रा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968

- स्वतंत्र भारत में शिक्षा पर यह पहली नीति कोठारी आयोग (1964 से 1966) की सिफारिशों पर आधारित थी।
- शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का विषय घोषित किया गया।
- 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का और शिक्षकों का बेहतर प्रशिक्षण और योग्यता पर फोकस।
- शिक्षा पर केंद्रीय बजट का 6 प्रशिक्षित वहन करने का लक्ष्य रखा गया।
- माध्यमिक स्तर पर 'त्रिभाषा सूत्र' लागू करने का आह्वान किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

इस नीति का उद्देश्य असमानताओं को दूर करने विशेष रुप से भारतीय महिलाओं, अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जाति समुदायों के लिए शैक्षिक अवसर की बराबरी करने पर विशेष जोर देना था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संशोधन 1992

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में संशोधन का उद्देश्य देश में व्यावसायिक और तकनीकी कार्यक्रम में प्रवेश के लिए अखिल भारतीय आधार पर एक आम प्रवेश परीक्षा आयोजित करना था।
- इसमें प्रवेश परीक्षा की बहुलता के कारण छात्रों और उनके अभिभावकों पर शारीरिक मानसिक और वित्तीय समस्याओं को हल किया।

शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता क्यों ?

- शिक्षा की गुणवत्ता को बनानी है।
- नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति की आवश्यकता थी।

जैसा कि वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए तथा शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिए परिवर्तन की आवश्यकता थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा की पहुंच, क्षमता, गुणवत्ता, वहनीयता और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों पर जिसने ध्यान दिया गया है। नई शिक्षा नीति के तहत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से क्षेत्र पर देश की जी.डी.पी. के 6 प्रतिशत के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत मानव संसाधन विकास मंत्रालय का

Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

DISABLED CHILDREN IN EDUCATION: INCLUSION AND INTEGRATION

Abha Dubey, Ph. D.[1] & Arun Kumar Dubey, Ph. D.[2]

[1] *Assistant Professor, Education, Sandipani Academy, Durg (C.G.)*

E-mail: mrs.abhadubey@gmail.com

[2] *Principal, Education, Columbia College, Raipur (C.G.)*

E-mail: mr.arunkumardubey@gmail.com

Abstract

The Present paper illuminates the various educational policies for children with disabilities and special needs. For bringing the children within the social stream a variety of policies, projects, and strategies have been formulated and implemented. The education of disabled children, their preventive and curative measures, and their rehabilitation need a genuine combined effort by family, society, educational institutions, and government. This paper contains A vivid description of the educational policies for making education available for all and the creation of an environment where every child learns according to their ability and inclination in a safe and protected environment at every level from elementary to higher education.

Keyword: *Disabiltiy, Children with Disabilities, Inclusive Education, National Policy of Education*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Introduction

"People with disabilities are vulnerable because of the many barriers we face: attitudinal, physical, and financial. Addressing these barriers is within our reach and we have a moral duty to do so...... But most important, addressing these barriers will unlock the potential of so many people with so much to contribute to the world. Governments everywhere can no longer overlook the hundreds of millions of people with disabilities who are denied access to health, rehabilitation, support, education, and employment- and never get the chance to shine."

Stephen Hawking

Education is the fundamental right of every person. Education enables people to understand other basic rights and persuade people to follow them. It is a strong tool that helps every individual to realize his/her innate potentialities and helps them to achieve a good life

[1] Assistant Professor, Education, Sandipani Academy, Durg (C.G.) E-mail: mrs.abhadubey@gmail.com
[2] Principal, Education, Columbia College, Raipur (C.G.) E-mail: mr.arunkumardubey@gmail.com

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

Why and How Teaching Profession Needs Best Talents

Abha Dubey, (Ph.D.), Department of Education, Sandipani Academy, Durg, Chhattisgarh, INDIA
Arun Kumar Dubey, (Ph.D.), Principal, Columbia College, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
Abha Dubey, (Ph.D.),
Department of Education,
Sandipani Academy, Durg, Chhattisgarh, INDIA
Arun Kumar Dubey, (Ph.D.), Principal,
Columbia College, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 29/10/2020
Plagiarism : 9% on 24/10/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Saturday, October 24, 2020
Statistics: 183 words Plagiarized / 2001 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Why and How Teaching Profession Needs Best Talents Abstract Teaching is a very rewarding job that requires a lot of dedication, sacrifices, hard work, and patience. But like every career, the teaching profession is also difficult. Teachers should have specialized skills and talents for success in this profession. The best teachers can influence students and help them to grow

Abstract

Teaching is a very rewarding job that requires a lot of dedication, sacrifices, hard work, and patience. But like every career, the teaching profession is also difficult. Teachers should have specialized skills and talents for success in this profession. The best teachers can influence students and help them to grow. The present study focuses on the various hurdles of the teaching profession that restrict the talented persons to make it their first choice even the anguishment of the in-service teachers for limiting their performance. This study also emphasizes an assortment of ways to overcome these hurdles and increase people's inclination towards this noble profession.

Keywords

Teaching Profession, Attributes of Teachers, Talents for Teaching.

Introduction

The contemporary world is changing rapidly which further impact the education system. The education system needs to be transformed to enhance quality in such a way so that nation can meet the demands of the modern world society. Education is one of the major factors which not only bring holistic growth in one's life and leads to the ultimate growth of a nation. This requires to incorporate fully enriched curriculum, diversified resources, and teachers professional growth so that teachers are inclined to give their utmost performances by studded themselves with new skills of teamwork, diversified ways of teaching, enriching their knowledge, incorporating information technologies which accomplish all basic and current requirements of soci

Impact Factor: 2.02

ISSN: 2582-1377

Global Journal of Emerging Trends in Education and Social Science

Peer Reviewed, Referred Journal

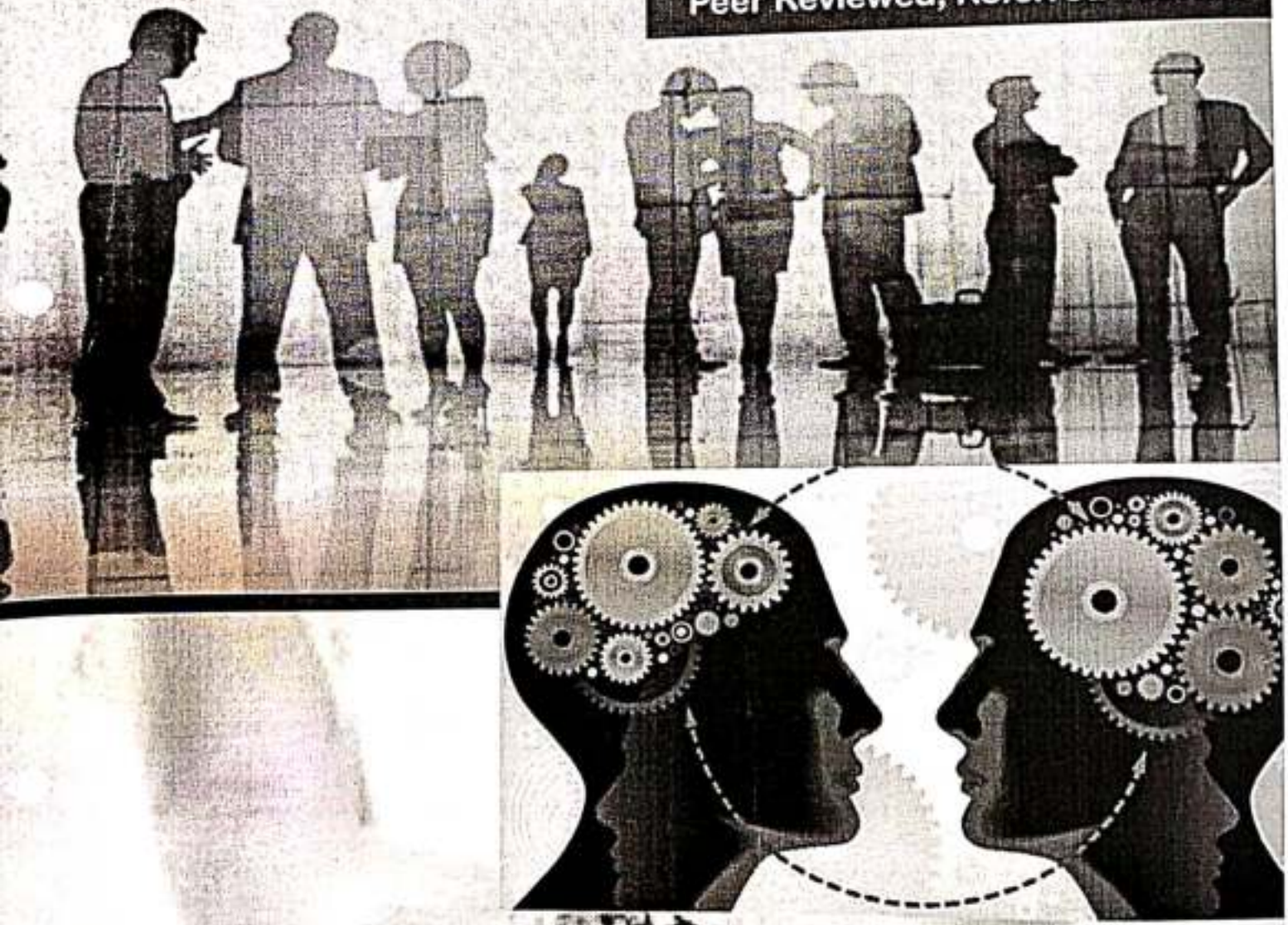

Eureka Journals

Volume 4, Issue 2, 2021

International Journal of Transformation in English & Education
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3951

Education for Global Peace in the reference of Nai Talim

Dr. Riya Tiwari[1], Dr. Abha Dubey[2]

[1]*PDF, (ICSSR New Delhi), Pt. Ravi Shankar Shukla University , Raipur (CG).*
[2]*Assistant Professor, Sandipani Academy, Achhoti Durg (CG).*

Abstract

The Father of the Nation Mahatma Gandhi's thoughts plays a significant role in global peace. Peace at the forefront of human survival and progress. Mahatma Gandhi was the most excellent promoter of world peace. His sensitivity to universal peace based on non-violence, individuality, soul power, and forgiveness. According to Mahatma Gandhi, "If we want to achieve true peace in the world, we must start with children." He said that school education is the most important place to learn value and peace education. We can understand the concept of peace-personal peace-peace with each other-social peace-national peace-global peace, peace began by cultivating one's thoughts and expanding globally. The most remarkable example of achieving peace was the Buddha, Mother Teresa, and Mahatma Gandhi, who started to spread peace from their souls and expanded worldwide.

Gandhi elegantly put it this way as an idea for countries that want peace and reconciliation: "Peace does not come from armed conflict, but from justice that has lived and done in the face of conflict by unarmed nations."

Keywords: Global Peace, Peace Education, Nai-Talim, Gandhian Thought.

Introduction

"By education I mean an all-round drawing out of the best in a child and man-body, mind and spirit. Literacy is not the end of education nor even the beginning. It is only one of the means whereby man and woman can be educated. Literacy in itself is no education. I would therefore begin the child's education by teaching it a useful handicraft and enabling it to produce from the moment it begins its training. Thus every school can be made self-supporting, the condition being that the State takes over the manufactures of these schools".

- M. K. Gandhi

The Father of the Nation, Mahatma Gandhi, play a vital role in global peace. Peace at the forefront of human survival and progress. From the very beginning, i.e., the main goal of Satyuga's life is to reach God through consensus. So the Acharyas wrote, designed, and-

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Holistic well being of the learners: Envisions in National Education Policy 2020

Dr. Arun Kumar Dubey
Principal,
Columbia College,
Raipur (C.G)

Dr. Abha Dubey
Asst. Professor,
Sandipani Academy,
Achhoti, Durg (C.G)

Dr. Divya Pandey
Principal,
Nakshaktra Kids
Academy, Raipur(C.G)

ABSTRACT

The present research article emphasizes the vision of National Education Policy 2020 to channelize the full learner's potentials for harnessing their inherent quality as well as their achieving the complete self. Education plays a key role to develop physical, social, emotional, intellectual, spiritual domains of life, thus establishes the harmony within as well as with the surrounding. Achieving this state resulted in sound health in physical, emotional, social aspects. The article focuses on to create understanding the provisions of NEP to achieve holistic well being physical social, emotional, mental, intellectual, and spiritual well being of the learners. These are the areas which are the pressing priority in this present era to achieve the goals of education and for the development of the self and the nation. National Education Policy has come in exixtence when the entire world struggled for survival and sustenance in the time of pendemic and felt the need of learning experiences which enabled him to be fit physically, emotionally, socially and spiritually.

Key words

Holistic well being, NEP, National Education Policy.

Introduction

The education system of our nation is known world wide from ancient time and privileged to be known as Vishwa guru. National education policy 2020 is the comprehensive policy and its foundation lies the Indian ethos and culture. For building the nation, its people should have sound physical, social, emotional health and this can be achieved through education system of the country because education is the strongest tool to unveil the curtain of ignorence and bring forthh the light of knowledge. The National Education Policy, 2020 has introduced about a enormous alternate in our education system. In doing so, it has additionally positioned excessive precedence on children's health and their well being. Health and education are interconnected (Zajacova and Lawrence, 2019). While healthy people are much more likely to have higher training outcomes, proper training can enhance the health fame of a household. It proposes to carry a paradigm shift in Indian education. In doing so, it acknowledges the want for correct nourishment and suitable fitness to resource highest quality learning, and proposes certain health-associated interventions.

It has positioned excessive priority for physical and mental fitness for students. Even though the policy emphasises on the budding level, but it is our responsibility to understand the need of student's fitness holistically. In addition to normal school schedules, there also are numerous new programs which have been placed down by the policy to holistically contend with fitness. Understanding NEP 2020 with specific understanding of well being concerned of learners physically, mentally, emotionallly, socially, intellectually, spirituality. Holistic development refers to the development of intellectual, mental, physical, emotional, and social abilities (Nipuan Bharat, 2021). This fitness needs to establish inter-personal and intra-personal relationship for effective and healthy living for the self, family, society and the nation.

NEP 2020 and Holistic Education

Multidisciplinarity and holistic education are a part of the key standards of the NEP. Along with subjects like sciences and social sciences, the curriculum ought to include courses that make schooling well-rounded,

beneficial and fulfilling, consisting of games, sports activities and fitness.

At the school level, the NEP proposes sports-integration, or utilising physical activities in pedagogical practices, to grow the students' cognitive abilities, at the same time as promoting their physical and mental well-being. Sports-incorporated learning will assist students acquire health levels envisaged within side the fit India movement, and adopt health as a lifelong attitude. It may also expand their capabilities like collaboration, self-initiative, teamwork and responsibility.

The NEP has a larger quantity of policies which have kept in mind student's intellectual and bodily fitness. With lesser faculty days, no bag days, no extra disturbing assessments and different schemes are aimed to lessen the worry among students. With Fit India Movement and different such star actions with inside the policy the Government has kept in mind the wishes of the students and made the policy intellectual fitness exclusive. However, this will take place only if the policy is applied with inside the proper manner via way of means of all schools across the length and the breadth of the country.

It focuses on students improving their very own and others' health, safety, well being and physical activity participation in various and changing contexts. The curriculum focuses on helping students to develop the knowledge and capabilities they require to make wholesome and secure choices that will beautify their very own and others' fitness and well being.

Studies focus on the wellbeing interventions

Many studies indicated that how health interventions are important in educational settings (Seligman et al., 2015).

Studies also explored the need of interventions which develops mental health and well-being topics or skills training within curriculum (Conley et al., 2015; Seligman et al., 2009), but very less studies explored impact of the design and delivery of learning experiences causes well-being. Some articles established the impacts of learning experiences on particular aspects of well-being such as social connection or resilience (Ewert & Yoshino, 2011; Rowe & Stewart, 2011), the benefits of specific teaching practices such as facilitation techniques, on student well-being given by Adriansen and Madsen (2013), Byrd and Mckinney (2012), Dooris and Doherty (2010), Okanagan (2015) found the importance of institutional factors, such as learning environments, on student well-being.

Principles of NEP 2020

The fundamental principles of NEP2020 themselves reveal the vision and are the torch bearer and guide students, teachers, policy makers, management, administration and create the behavior pattern under which they play their part accordingly to achieve the goals of NEP, Principles are:

- Recognizing, identifying, and fostering the unique capabilities of each student, by sensitizing teachers as well as parents to promote each student's holistic development in both academic and non-academic spheres;
- According the highest priority to achieving Foundational Literacy and Numeracy by all students by Grade 3;
- Flexibility, so that learners have the ability to choose their learning trajectories and programmes, and thereby choose their own paths in life according to their talents and interests;
- No hard separations between arts and sciences, between curricular and extra-curricular activities, between vocational and academic streams, etc. in order to eliminate harmful hierarchies among, and silos between different areas of learning;
- Multidisciplinary and a holistic education across the sciences, social sciences, arts, humanities, and sports for a multidisciplinary world in order to ensure the unity and integrity of all knowledge;

- Emphasis on conceptual understanding rather than rote learning and learning-for-exams;
- Creativity and critical thinking to encourage logical decision-making and innovation; ethics and human & Constitutional values like empathy, respect for others, cleanliness, courtesy, democratic spirit, spirit of service, respect for public property, scientific temper, liberty, responsibility, pluralism, equality, and justice;
- Promoting multilingualism and the power of language in teaching and learning;
- Life skills such as communication, cooperation, teamwork, and resilience;
- Focus on regular formative assessment for learning rather than the summative assessment that encourages today's 'coaching culture';
- Extensive use of technology in teaching and learning, removing language barriers, increasing access for Divyang students, and educational planning and management;
- Respect for diversity and respect for the local context in all curriculum, pedagogy, and policy, always keeping in mind that education is a concurrent subject;
- Full equity and inclusion as the cornerstone of all educational decisions to ensure that all students are able to thrive in the education system;
- Synergy in curriculum across all levels of education from early childhood care and education to school education to higher education;
- Teachers and faculty as the heart of the learning process – their recruitment, continuous professional development, positive working environments and service conditions;
- A 'light but tight' regulatory framework to ensure integrity, transparency, and resource efficiency of the educational system through audit and public disclosure while encouraging innovation and out-of-the-box ideas through autonomy, good governance, and empowerment; outstanding research as a corequisite for outstanding education and development;
- Continuous review of progress based on sustained research and regular assessment by educational experts.

Reflections of NEP for Holistic Well being

Holistic Well being has been evident in NEP 2020, The 35.3% young population resides in India 41% of the population account for less than 18 years of age (Census, 2001). The future of the nation depends on the quality of the youth and the type of education they acquire. The quality refers to their well being in all its aspects the value system they developed through their education. The study is Decoding the various reflections pervading throughout the policy advocating the holistic growth and well being of the learners.

1. Multidisciplinary Learning

The priority of today's circumstances of pandemics and social issues is to introduce multidisciplinary learning for collaborative research in various diseases management, development of vaccines and health facilities and social research. language, literature, debate, music, sports, etc. Over time, such activities could be incorporated into the curriculum once appropriate faculty expertise and campus student demand is developed. Faculty will have the capacity and training to be able to approach students not just as teachers, but also as mentors and guides.

Outcome: Learners will be multitalented, multitasking, problem solving, innovative, inquisitive, collaborative thus resulted in mentally healthy, physically, socially and spiritually human being.

2. Learning Pattern

21st century demands the skills sets, suitable to meet the quickly changing requirements of time on the global context. Learners should place on the position to not only learn but know the entire process of learning

how to learn. Education should transform from less content to higher cognitive learning as critical thinking, problem solving learning which imbibe creativity, innovativeness, adaptive and flexible.

Outcome: Higher order cognitive development

3. Pedagogical Approach

NEP focuses on more process based learning rather product approach and rote memorization. Pedagogical approach should involve more experiential, holistic, integrated, inquiry-driven, discovery-oriented, learner-centred, discussion-based, flexible, and, of course, enjoyable. The curriculum must include basic arts, crafts, humanities, games, sports and fitness, languages, literature, culture, and values, in addition to science and mathematics, to develop all aspects and capabilities of learners; and make education more well-rounded, useful, and fulfilling to the learner. Education must build character, enable learners to be ethical, rational, compassionate, and caring, while at the same time prepare them for gainful, fulfilling employment.

Outcome: Holistic, well rounded, flexible, good human being, become the active learners

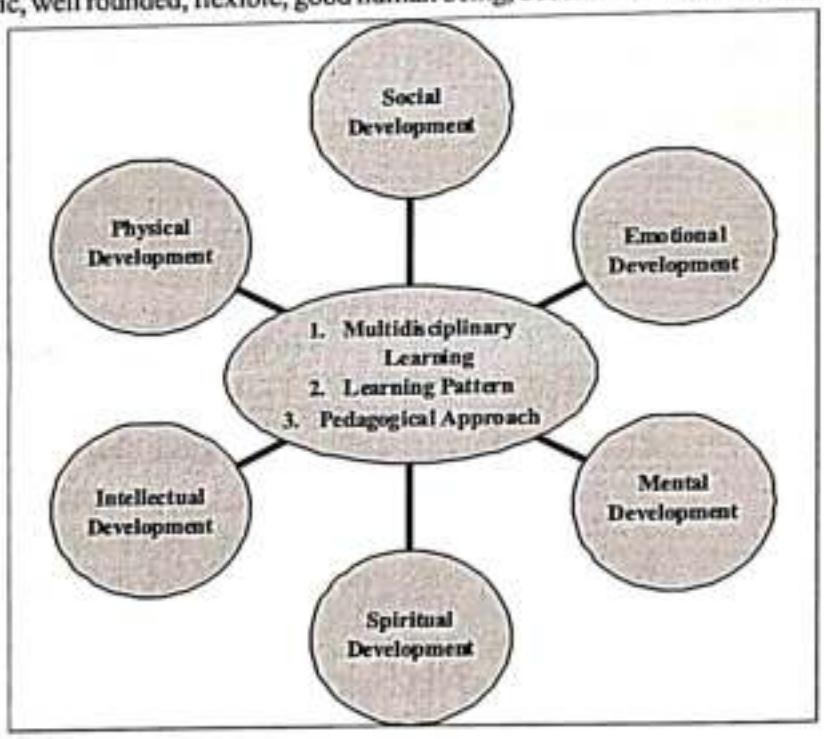

Figure 1 : Personality Domains

Envisioning Holistic well being of the learner

The basic understanding is being drawn to strengthen education system to give maximum benefits to the stakeholders, So many provisions have been there for the holistic wellbeing of the learners. All students, irrespective of their place of residence, birth, caste, religion have the right to access a quality education system, particularly historically marginalized, disadvantaged, and underrepresented groups. Economic and social mobility, inclusion, and equality are possible only through education.

1. Creative potential of learners should be developed.

Education must develop not only cognitive capacities- both the 'foundational capacities of literacy and numeracy and 'higher-order' cognitive capacities, such as critical thinking and problem solving - but also social, ethical, and emotional capacities and dispositions.

2. Early Childhood Development, Care, and Education (ECCE)

Providing intensive early childhood care and stimulation of the brain for healthy brain development and growth. Universal provisioning of quality early childhood development, care, and education must thus be achieved as soon as possible, and no later than 2030, to ensure that all students entering Grade 1 are school ready.

3. Attractive and Flexible curricular Structure

ECCE has attractive and Flexible curricular structure, including multi-faceted, multi-level, play-based, activity-based, and inquiry-based learning, comprising of alphabets, languages, numbers, counting, colours, shapes, indoor and outdoor play, puzzles and logical thinking, problem-solving, drawing, painting and other visual art, craft, drama and puppetry, music and movement.

4. Character and Value Development

Curriculum also includes a focus on developing social capacities, sensitivity, good behavior, courtesy, ethics, personal and public cleanliness, teamwork, and cooperation. The overall aim of ECCE will be to attain optimal outcomes in the domains of physical and motor development, cognitive development, socio-emotional-ethical development, cultural/artistic development, and the development of communication and early language, literacy, and numeracy.

5. Healthy and Nutritious Food

It is recommended that every child before the age of five must go to preparatory class or balvatika, where focus on to develop cognitive, affective and psychomotor ability through play base learning and to achieve these learners should provide with healthy and nutritious diet along with the learning. The mid-National Education Policy 2020 8 day meal programme shall also be extended to the Preparatory Classes in primary schools. Health check-ups and growth monitoring that are available in the Anganwadi system shall also be made available to Preparatory Class students of Anganwadi as well as of primary schools for optimal learning, the nutrition and health (including mental health) of children will be addressed, through healthy meals.

6. Role of social workers, counsellors, and community

Involvement of social workers, counsellors, and community into schooling system and establishing support system at college and universities in every education institution, there shall be counselling systems for handling stress and emotional adjustments. Furthermore, a systematized arrangement shall be created to provide the requisite support to students from rural backgrounds, including increasing hostel facilities as needed. All HEI's will ensure quality medical facilities for all students in their institutions.

7. Health Checkups

100% immunization in schools and health cards will be issued to monitor the same.

8. Holistic and Multidisciplinary Learning

Developing and channelizing the capacities of individual by integrating intellectual, aesthetic, social, physical, emotional, and moral capacity of individual. Such an education will help develop well-rounded individuals that possess critical 21st century capacities in fields across the arts, humanities, languages, sciences, social sciences, and professional, technical, and vocational fields; an ethic of social engagement; soft skills, such as communication, discussion and debate; and rigorous specialization in a chosen field or fields. Such a holistic education shall be, in the long term, the approach of all undergraduate programmes, including those in professional, technical, and vocational disciplines. Pedagogy will have an increased emphasis on communication, discussion, debate, research, and opportunities for cross-disciplinary and interdisciplinary thinking.

9. Integration of Kalas with Science

Ancient Indian literary works such as Banabhatta's Kadambari described a good education as

2. Early Childhood Development, Care, and Education (ECCE)

Providing intensive early childhood care and stimulation of the brain for healthy brain development and growth. Universal provisioning of quality early childhood development, care, and education must thus be achieved as soon as possible, and no later than 2030, to ensure that all students entering Grade 1 are school ready.

3. Attractive and Flexible curricular Structure

ECCE has attractive and Flexible curricular structure, including multi-faceted, multi-level, play-based, activity-based, and inquiry-based learning, comprising of alphabets, languages, numbers, counting, colours, shapes, indoor and outdoor play, puzzles and logical thinking, problem-solving, drawing, painting and other visual art, craft, drama and puppetry, music and movement.

4. Character and Value Development

Curriculum also includes a focus on developing social capacities, sensitivity, good behavior, courtesy, ethics, personal and public cleanliness, teamwork, and cooperation. The overall aim of ECCE will be to attain optimal outcomes in the domains of physical and motor development, cognitive development, socio-emotional-ethical development, cultural/artistic development, and the development of communication and early language, literacy, and numeracy.

5. Healthy and Nutritious Food

It is recommended that every child before the age of five must go to preparatory class or balvatika, where focus on to develop cognitive, affective and psychomotor ability through play base learning and to achieve these learners should provide with healthy and nutritious diet along with the learning. The mid-National Education Policy 2020 8 day meal programme shall also be extended to the Preparatory Classes in primary schools. Health check-ups and growth monitoring that are available in the Anganwadi system shall also be made available to Preparatory Class students of Anganwadi as well as of primary schools for optimal learning, the nutrition and health (including mental health) of children will be addressed, through healthy meals.

6. Role of social workers, counsellors, and community

Involvement of social workers, counsellors, and community into schooling system and establishing support system at college and universities in every education institution, there shall be counselling systems for handling stress and emotional adjustments. Furthermore, a systematized arrangement shall be created to provide the requisite support to students from rural backgrounds, including increasing hostel facilities as needed. All HEI's will ensure quality medical facilities for all students in their institutions.

7. Health Checkups

100% immunization in schools and health cards will be issued to monitor the same.

8. Holistic and Multidisciplinary Learning

Developing and channelizing the capacities of individual by integrating intellectual, aesthetic, social, physical, emotional, and moral capacity of individual. Such an education will help develop well-rounded individuals that possess critical 21st century capacities in fields across the arts, humanities, languages, sciences, social sciences, and professional, technical, and vocational fields; an ethic of social engagement; soft skills, such as communication, discussion and debate; and rigorous specialization in a chosen field or fields. Such a holistic education shall be, in the long term, the approach of all undergraduate programmes, including those in professional, technical, and vocational disciplines. Pedagogy will have an increased emphasis on communication, discussion, debate, research, and opportunities for cross-disciplinary and interdisciplinary thinking.

9. Integration of Kalas with Science

Ancient Indian literary works such as Banabhatta's Kadambari described a good education as

create the individual holistically having good and sound health in all its domains. Curriculum, pedagogy, infrastructure, multidisciplinary institute, provisions for health, sports, co-curricular, inclusive education and other recommendations definitely realize the envision of NEP for holistic growth of the learners.

References

1. Adriansen, H. K., & Madsen, L. M. (2013). Facilitation: A novel way to improve student well-being. *Innovative Higher Education*, 38(4), 295-308. http://dx.doi.org/10.1007/s10755-012-9241-0
2. Baum, F., MacDougall, C., & Smith, D. (2006). Participatory action research. *Journal of Epidemiology and Community Health*, 60(10), 854-857. http://dx.doi.org/10.1136/jech.2004.028662
3. Byrd, D. R., & McKinney, K. J. (2012). Individual, interpersonal and institutional level factors associated with the mental health of college students. *Journal of American College Health*, 60(3), 185-193. http://dx.doi.org/10.1080/07448481.2011.584334
4. Conley, C., Durlak, J., & Kirsch, A. (2015). A *meta-analysis of universal mental health prevention programs for higher education students*. http://dx.doi.org/10.1007/s11121-015-0543-1
5. Dooris, M., & Doherty, S. (2010). Healthy universities: Current activities and future directions-Findings and reflections from a national level qualitative research study. *Global Health Promotion*, 17(3), 6-16. http://dx.doi.org/10.1177/1757975910375165
6. Ewert, A., & Yoshino, A. (2011). The influence of short-term adventure-based experiences on levels of resilience. *Journal of Adventure Education and Outdoor*. http://dx.doi.org/10.1080/14729679.2010.532986
7. Nipun Bharat (2021). *A National Mission on Foundational Literacy and Numeracy National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy*. Retrived on 25/11/2021 from https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2021/jul/doc20217531.pdf
8. Pietromonaco, P. R., & Collins, N. L. (2017). Interpersonal mechanisms linking close relationships to health. *American Psychologist*, 72(6), 531-542. https://doi.org/10.1037/amp0000129
9. Rowe, F., & Stewart, D. (2011). Promoting school connectedness through whole school approaches. *Health Education*, 111(1), 49-65. http://dx.doi.org/10.1108/09654281111094973
10. Seligman, M. E. P., Ernst, R. M., Gillham, J., Reivich, K., & Linkins, M. (2009). *Positive education: Positive psychology and classroom interventions*. http://dx.doi.org/10.1080/03054980902934563
11. Zajacova, A., & Lawrence, E. M. (2018). The Relationship Between Education and Health: Reducing Disparities Through a Contextual Approach. *Annual review of public health*, 39, 273-289. https://doi.org/10.1146/annurev-publhealth-031816-044628

International Journal of Current Research in Education, Culture and Society
Vol. 4, Issue 2 - 2020
ISSN: 2581-4028

Educational Empowerment of Minorities: Schemes and Achievements

Dr. Abha Dubey[1], Dr. Arun Kumar Dubey[2]
[1]Assistant Professor, Sandipani Academy, Achhoti, Durg (C.G.)
[2]Principal, Columbia College, Tekari, Raipur (C.G.)

Abstract

India is the birthplace of several religions, Hinduism, Buddhism, Jainism, and Sikhism, and home for thousands of years to Jewish, Zoroastrian, Muslim, and Christian communities (Gandhi, 2018). The vast majority of citizens of all religious groups live in peaceful coexistence and are conscious of religious freedom and minority rights (US Department of State, 2009). The Ministry of Welfare of the Government of India issued a gazette notification on 23 October 1993 under the National Minorities Commission Act-1986 to the five religious communities Muslim, Christian, Sikh, Buddhist, and Parsi (Parsi) to be a minority, the Central Government also recognized the Jain community as a minority in 2014 (Ministry of Minority Affairs, 2014). Education is the foundation for the national development and basic human right that create nation's human resource more powerful which in turn contribute towards the development of the countries and it is believed that countries become successful when they empower their human resources. National Commission for Minorities (NCM) was set up by the Union Government of India in 1992 to protect the existence of minorities all over India and look after the minority communities of India to get benefits in education and employment opportunities. Minorities belonging to the region have established many educational centers and institutions to uplift their culture and language. Besides, they are entitled to reserve a specific quota of seats for students and teachers to their own communities. Various Government schemes provide direct aid to students and educational institutions for promoting minority communities in India.

Keywords: Minority, Schemes for Minorities, Educational Empowerment of Minorities.

India is the birthplace of several religions, Hinduism, Buddhism, Jainism, and Sikhism, and home for thousands of years to Jewish, Zoroastrian, Muslim, and Christian communities

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 4, Issue 2 – 2021
ISSN: 2582-1377

Learners' Preferences of Teaching Methodology

Dr. Arun Kumar Dubey[1], Dr. Abha Dubey[2]
[1]*Principal, Columbia College, Raipur (C.G.)*
[2]*Asst. Prof., Sandipani Academy, Achhoti, Durg (C.G.)*

Abstract

The paper insists the learners' preferences of teaching methodology and their selective perception and interest they show the way teachers engage learners in teaching and learning process. In this study a survey was conducted through online media, questionnaire was prepared in Google form and collected response from the students of 12th class of Krishna Public School, Dunda, Raipur (C.G.). The purposive sampling was used and 50 students were selected from different stream like Mathematics, Humanity, Commerce, and Biology. Results indicated that 95% of students selected active methods of learning as their preferences. The reasons they shared that ALM enhances their receptivity and stability of knowledge and they are more able to focus on the study. The result also shows that the traditional methods are more common among teachers though their inclination towards innovative methods is increasing.

Keywords: Learners' Preferences, Teaching Methodology, Innovative Methods, Active Learning Method, ALM.

Introduction

Creating proper learning environment is the prime aim of the educational institution, that includes communication among students, teachers, and parents; academic expectations of teachers; students', teaching methodology, active participation in the learning process; and student support. Teaching methods are the phase of implementation of the planning of entire process, hence very significant to achieve teaching aims.

The number of methods are employed by teachers comes under categories of active learning methods is also called student centric to traditional teaching methods is called as teachers' centric. Now a days various technological and digital platforms are used more commonly, so digital and technological methods are evolved with the time arises.

Teaching methods include lecturing, discussion, problem solving, question-answer, demonstration, role play, sample case, experiment, and cooperative teaching (Sisman, 2002; Ozdemir et al., 2008; Mocinic, 2010) and proposed the following list of active learning

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 4, Issue 2 – 2021
ISSN: 2582-1377

Appraise the Use of Social Media Platforms in Learning Process through Multiple Dichotomy Analysis

Dr. Riya Tiwari[1], Dr Abha Dubey[2]

[1]*Principal, Gracious College of Education, Abhanpur, Chhattisgarh.*
[2]*Assistant Professor, Sandipany Academy, Kumhari Durg, Chhattisgarh.*

Abstract

The present research study explores the impact of social media in the pedagogical process as well as the experience of learners while applying social media during the process of teaching and learning. The social media platforms are gradually expanding their grapples on every aspects of life. In educational field, social media is widely applied over the time for educational purposes. This paper also inclines to get better understanding to know the interest of the users in tapping social platforms as you-tube, whatsaap, Facebook, LinkedIn, edu-blogs. The choice of the proper platforms depends on their applicability, ease of accessing and the authenticity. The paper also reveals the type of learning materials as PDF, videos, PPT, Word Documents, Pictures appeals the learner most. Significant contribution of these learning platforms, help as communicative and informative tools , as well as the source of knowledge for almost every subjects which attract the learners and educators for enhancing their effectiveness and obtaining the educational objectives. A descriptive research study, in which self made questionnaire was prepared for data collection. By using random sampling method, sample of the study was obtained. The survey method was used for data collection and multiple dichotomy was used for data analysis. YouTube found as a comfortable authentic and convenient source for learning process, respondents prefer videos instead of PPT and Pictures as a learning material. Social media platforms widely used in research work.

Keywords: Social Learning Platforms, Facebook, whatsaap, LinkedIn, Edu-blogs.

Introduction

Social network sites are used tremendously for educational purposes. In this contemporary situation, various social learning platforms are being used at each level of education system from primary to higher education. The researchers incline to study the effects of SMP on the educational field include the learners, teachers, educators, academicians, and administrative educational purposes. Kaplan and Haenlein (2010) explained social media as "the Internet-based

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

Study of Cognitive Style in the Context of Emotional Intelligence of Adjusted Students

Rush Kumar Bagel[1]* Saroj Shukla[2] Suryadev Yadav[3]

Abstract – Cognition is a diffused term, utilized in various controls. In brain science it alludes to a data handling perspective on a person's mental capacities. Different translations of the importance of cognition connect it to the improvement of ideas; singular personalities, gatherings, associations, which can be displayed as social orders which participate to shape ideas. The self-ruling components of each "society" would have the chance to show new conduct even with some emergency or opportunity. Cognition can likewise be deciphered as "understanding and attempting to comprehend the world".

Keywords: Cognitive, Style, Emotional, Intelligence, Students

---------------------------------X---------------------------------

INTRODUCTION

Cognitive-Style is a speculative development that has been created to clarify the procedure of intervention among improvement and reaction. The term Cognitive Style alludes to the 2 trademark manners by which an individual theoretically sorts out the earth. It is seen that Cognitive Style alludes to the way an individual fitters and procedures upgrades with the goal that the earth takes on mental importance. As such cognitive portrayals adjust the coordinated connection among upgrade and reaction, on the off chance that it were not for these cognitive portrayals; boosts would have been unimportant for the person as the individual would react to the incitement in a robot like style. Cognitive Style is likewise comprehended regarding steady examples of sorting out and handling data. Cognitive Style with methods of conduct as opposed to interceding forms. They utilized the term Cognitive Style to mean textures in singular methods of working in an assortment of social circumstances. Accordingly, it is legitimate to make reference to here that Cognitive Style is considered as one of the parts of mental separation. Mental separation alludes to separate method of seeing, judging and assessing things to which individuals are presented to under various conditions.

CONCEPT OF COGNITIVE STYLE

The concept of cognitive styles is one that crosses numerous controls. At first piece of the domain of Jungian/Piagetian brain research, cognitive style inquire about is presently a significant piece of fields, for example, instruction, PC programming, and data science. These fields have shared objectives for studying cognitive style, to be specific, how clients (students, instructors, or data searchers) process data and how frameworks (showing styles or data frameworks) can be better worked to oblige the assorted variety of the clients. To comprehend cognitive style, a meaning of cognition should initially be comprehended. Cognition is an assortment of mental procedures that incorporates mindfulness, observation, thinking, and judgment. Cognitive styles can for the most part be portrayed as the way in which data is procured and handled. Cognitive style measures don't demonstrate the substance of the data yet just how the mind sees and procedures the data. The term cognitive style alludes to the trademark manners by which an individual conceptually arranges nature and the way an individual channels and procedures upgrade with the goal that the earth takes on mental importance. Cognitive style truly has alluded to a mental measurement speaking to textures in a person's way of cognitive working, especially as for obtaining and handling data Defined cognitive styles as steady perspectives, inclinations, or ongoing procedures that decide individuals" methods of seeing, recollecting, thinking, and critical thinking.

CONCEPT OF EMOTIONAL COMPETENCE

Emotional capability is a vital component of human character, which gives an individual a serious edge over other. To be effective in any association, it isn't sufficient if an individual has specialized or information expertise however to be a "top individual", one must be emotionally brilliant. The last is the new measuring stick to pass judgment on the conceivable contender to be chosen, selected, advanced and recognized for authoritative viability. Emotional administration

mindfulness is the key factor in emotional intelligence. Be that as it may, it doesn't mean emotional concealment or affectability. How an individual acknowledges analysis, input, damages, disappointments or victories, honeyed words and so on are immensely significant viewpoints which decide the ability. A really equipped individual communicates sentiments fittingly and sufficiently. Emotional skill is the ability to control the feelings all the more effectively and effectively. Emotional skill can be characterized as a capacity to screen one's own and other's sentiments and feelings to separate among them and to utilize this data to manage one's reasoning and activities.

COGNITIVE STYLE AND ACADEMIC ACHIEVEMENT

Cognitive Style presents the concept of cognitive style. They mean cognitive style is wide precise trademark influencing a person's observation to various circumstances. It implies the cognitive style is attributes self-reliable methods of working which people appear in their perceptual and scholarly exercises. The cognitive style whose presence has been exhibited incorporates field-subordinate free, leveling honing, checking – centering and various others. For this study we have taken just Field – Dependence and Field – Independence as a proportion of cognitive style. It was discovered that people either demonstrated predictable dependence on Field power subsequently called Field-Dependent or displayed an inclination to work autonomously of field powers consequently called field – Independence.

Improvement of the Group Embedded Figure Test (GEFT) looks at field ward and Field Independent. The GEFT includes having somebody discover straightforward graphical figures which are installed inside progressively complex foundation, contends that "The style of working we originally got in recognition.

Shows itself too learned action. ."Field – Dependence or Field-Independence are the perceptual segments of a specific cognitive style. Accordingly "at one extraordinary there is inclination for experience to be diffuse and worldwide; the association of a field in general directs the manner by which its parts are experienced. At the other extraordinary the propensity is for experience to be outlined and organized; portions of a field are experienced as discrete and the field all in all is organized." The build Field Dependence (FD) and Field – Independence (FID) has gotten wide throughout the years and includes cognitive and met cognitive components as well as the socio – full of feeling side of the student. Anyway we won't work out this angle in more detail now but instead allude to a progressively constrained form of the Field-Dependence and Field. Freedom division which was created with exceptional reference to training and which has unique noteworthiness for a person's decision of learning methodologies. We discovered Field ward and Field free is generally significant for cognitive style in the people. Here understudy is our eventual fate of the real world and fate of society they are not make their cognitive and not appropriate created style at that point understudy's psyche would be misbalanced.

Edward Tolman, one of the author cognitive analysts, has made prominent commitments in the field of getting the hang of, thinking capacity and innovative working, while at the same time clarifying the critical thinking conduct of the higher creatures; He expressed that the living being attempts to set up mental

A theory about the approaches to take care of issues and afterward embarks to test these speculations through intentional conduct.

Jean piaget, Swiss clinician, who has been the most noticeable among the contemporary cognitive therapists, has demonstrated unmistakable fascination for the study of improvement of cognitive style and capacities and activity of cognitive procedure in youngsters. He has delineated an unequivocal example and phases of advancement of cognitive of cognitive capacities relying on the organic preparation of the understudy.

EMOTIONAL INTELLIGENCE AND ACADEMIC ACHIEVEMENT

Emotional intelligence (EI) has as of late pulled in a ton of enthusiasm for the scholastic research. The distal foundations of emotional intelligence can be followed back to the concept of "Social intelligence" instituted by E.L Thronalike (1930) to allude to the capacity to comprehend and oversee individuals and to act admirably in human relations. Presently I will examine a short history of Emotional Intelligence (EI).

1940s David Wechsler recommends that emotional parts of intelligence might be fundamental to accomplishment throughout everyday life. 1950s Humanistic therapists, for example, Abraham Maslow depict how individuals can manufacture emotional quality. In 1975 Howard Gardner Publishes "The broke Mind", which presents the concept of various intelligences? 1985 Wayne payne presents the terms emotional intelligence in his doctoral thesis entitled – "A study of feeling: creating emotional intelligence; self-reconciliation; identifying with dread, torment and want (Theory, structure of the real world, issue – unraveling, compression/extension, [illegible] in/coming out/giving up)."

SANDIPANI ACADEMY DIST.-DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

In 1987 of every an article distributed in Mensa Magazine, Keith Beasley utilizes the expression "Emotional remainder." It has been proposed this is the

First distributed utilization of the term, in spite of the fact that Reuven Bar – on cases to have utilized the term in an unpublished form of his alumni theory. In 2014 clinicians Peter Salovey and John Mayer distribute their milestone article, "Emotional Intelligence" in the diary creative mind, cognition and character. 2011 the concept of Emotional Intelligence is promoted after distribution of therapist and New Year Times science composed Daniel Gole man's book "Emotional Intelligence : Why it can Batter More Than IQ."

Emotional intelligence is an alternate kind of intelligence. It's tied in with being 'Heart keen' not simply 'Book shrewd.' The proof shows that emotional intelligence matters the same amount of as scholarly capacity, if not more thus, with regards to satisfaction and achievement throughout everyday life. Emotional intelligence helps fabricate solid connections, prevail at work, and accomplishes the objectives. The aptitudes of emotional intelligence can be created all through life. The greater parts of us have learned not to confide in our feelings. We have been told feelings contort the more 'exact' data our acumen supplies. Indeed, even the term 'Emotional' has come to mean feeble, wild and adolescent.

Emotional intelligence consists of five key skills these are –

1. The capacity to rapidly lessen pressure.
2. The capacity to perceive and deal with the various feelings.
3. The ability to connect with others uses nonverbal correspondence.
4. To capacity to utilize diversion and play to manage difficulties
5. The capacity to determine clashes emphatically and with certainty.

These five abilities of emotional intelligence can be learned by anybody, at whenever. In any case, there is a contrast between finding out about Emotional intelligence and applying that in our life. Because we realize we ought to accomplish something doesn't mean we will – particularly evident with regards to the aptitudes of emotional intelligence. Salovey and Mayer proposed a model that recognized four distinct components of emotional intelligence – The view of feeling, the capacity reason utilizing feelings, the capacity to get feeling and the capacity to oversee feeling. I will talk about the term of definition in this paper.

Daniel Goleman presented the concept of emotional intelligence to acquire a transformation the field of kid care, home, school and scholarly life. Emotional intelligence helps the students considerably towards one's capacity to live, progress in their scholastic life and change in accordance with other. In all sense, emotional intelligence basically mirrors understudy's capacity to manage others and with their own sentiments. Since these characteristics check essentially towards an understudy accomplishment in their general vicinity of scholarly accomplishment, it might initiate him like astute to make the necessary progress. The majority of the issues in understudy of puberty issue, scholastic issue. On the off chance that legitimate endeavors are made for preparing the feelings and creating appropriate emotional intelligence potential among the individuals directly from their youth, at that point it will doubtlessly help in bringing common emotional getting, sympathy, went with right activities and conduct with respect to the people and gatherings, to have a superior existence in harmony and co-activity.

Emotional response merits genuine consideration in any thought of the issues of human turn of events, particularly as these apply to kids and young people. On the off chance that as in usually accepted feelings are essential to inspiration of conduct, their temperament and source ought to be comprehend just as the methods by which they can be managed and made more help ready to singular society and their scholarly accomplishment.

In 2002 Rozell, Petti John and parker discovered there was a little, however huge connection between scholastic achievement, as estimated by grade bring up normal and three of the five factors inside the used emotional intelligence scale using the Goleman (2011) scale Petrides, Frederickson, and Furnham (2011) took a gander at the connections between attribute emotional intelligence, scholarly execution and cognitive capacity they found that emotional intelligence directed the connection between scholarly execution and cognitive capacity.

In a study directed by Rode, Mooney, Arthaud Day, Near, Baldiwin, Rubin and Bommer (2007), it was anticipated that emotional intelligence was identified with scholastic execution for two reasons. In the first place, scholarly execution includes a lot of uncertainty (Astin 2012), which has been appeared to cause felt pressure . Students are required to deal with various assignments work autonomously toward targets, and oversee clashing scholarly accomplishment.

STUDIES ON COGNITIVE STYLE

The most recognizable wide pattern in the last a few decades in concentrates in brain research of education is the expanding consideration regarding

and acknowledgment of cognitive brain science in its various measurements.

Cognitive style eludes to the qualities self-reliable methods of working showed by a person in cognitive character. There are singular contrasts in styles of seeing, recalling, thinking and judging and these individual varieties are related with different non-cognitive components of character.

Shrivastava Madhulika (2013) an examination concerning the logical fitness of higher auxiliary science students according to their cognitive style goal of this study is to evaluate the logical inclination of students corresponding to the cognitive style of the individuals who need to execute their investigations in the field of science utilized instruments aptitudes test K.K. Agraucals and stubbornness scale by Hasan, in light of the 'D' type of the first Rokeach's scale. The male and female students of low logical inclination had noteworthy distinction on stubbornness.

Pandey, A.K. (2013) study of dissimilar deduction corresponding to academic accomplishment cognitive style, self-concept and intrigue design. Here instrument utilized inserted figure test by mind families and academic accomplishment test created by the scientist. There was a huge connection between different reasoning and cognitive style self-concept, intrigue example and educational example. There was a huge distinction between field reliance and field-freedom cognitive style on the rule of different reasoning.

Dutt, Sunil (2013) examined the impact of critical thinking systems on critical thinking capacity in study of secondary school students corresponding to nervousness level cognitive style and intelligence. The critical thinking capacity test in study of the agent is the gathering installed figure test by mind family, outman and Raskin the general mental capacity test by S. Jalota and the far reaching uneasiness test by sinha. Discoveries of this study are cognitive style and intelligence was found to contribute fundamentally to the absolute fluctuation in critical thinking capacity uneasiness didn't make any noteworthy commitment.

Rai et al (2013) made an endeavor to answer whether students' cognitive styles were distinctively identified with all out scholarly fulfillments by controlling GEFT on graduate students. He found that cognitive style of the subjects didn't rely upon the accomplishment cognitive style didn't rely upon the sex. Male and female subjects didn't rely upon the degree of their accomplishment.

Sheik (2014) contemplated cognitive style corresponding to intelligence, inventiveness and scholastic accomplishment of 185 teenagers of Govt. school. The outcome showed that high intelligence and high innovative gathering. Normal intelligence bunch yet high and normal imaginative gathering don't show any critical distinction in the cognitive style female students had more noteworthy FID than their partner male pre-adult.

Panda S. (2015) contemplated age and sexual orientation contrasts in the FD-FID cognitive style of p[re younger students and analyzed its relationship with intelligence, open jargon and nine distinct parts of independent accomplishment endeavoring. No noteworthy contrast in the degree of field-autonomy of young men and young ladies. Where as a formative increment towards field-freedom was very clear educated capacity and the factors of independent accomplishment endeavoring were for the most part established to be fundamentally corresponded with field-autonomy just for the multi year old kid's example for the 4 and multi year period of tests none of the factors had all the earmarks of being associated with field freedom.

Shukle. M. (2015) considered the impact of kid raising practices on the advancement of cognitive style and locus of control among people of various region SES and family structure. Discoveries is no connection between cognitive style and locus of control on the locus of control the impacts of neighborhood, SES and family structure had all the earmarks of being noteworthy.

Shrivastara, Priyambada (2016) to investigate the cognitive style according to educational enthusiasm, learning style and scholastic accomplishment she utilized devices is bunch inserted figure test (GEFT) by Oltman, Ruskin and mind kinfolk and scores acquired in the last board assessments (Mean, SD, two-way ANOVA and Cochran's test). Discoveries is students indicating high and low enthusiasm for farming, business, humanistic home science and innovation didn't show any noteworthy distinction in their FD-FID cognitive style. Understudy showing systematic study truth maintenance and elaborative handling learning style didn't show any huge distinction in their FD-FID cognitive style. More students accomplishing high in writing, math, science, social investigations and on by and large accomplishment showed FID cognitive style than those accomplishing low.

STUDIES IN EMOTIONAL INTELLIGENCE:

As of late, Emotional intelligence (EI) has been well known subject of discussion in the field of education. Analyst guaranteed that emotional intelligence predicts achievement of school. As indicated by salovy and Mayer in 2014 about Emotional intelligence. The said that "The capacity to screen one's own and others feelings to separate among them and to utilize Bhadouria Preeti (2012) decides the components which are influencing the improvement of emotional intelligence and its job in scholastic

accomplishment in understudy. Here the apparatuses are analysts auxiliary information has been gathered out of which we discover the relationship between's emotional intelligence and scholastic accomplishment. Discoveries of this study is scholarly accomplishment without emotional intelligence doesn't demonstrate future achievement and nonappearance of emotional intelligence likewise show the week character and capacity to fabricate relations at working spot too in schools and it is profoundly significant for quality education.

Rastegar Mina, Karami Maliheh (2013) examine connections among Iranian student's emotional intelligence their full of feeling and social technique use and their scholarly accomplishment. Apparatuses are emotional intelligence scale by schutte et.al. (2017) and system stock for language learning by oxford (2014). Discoveries of this study is emotional intelligence and full of feeling procedure use, emotional intelligence and social technique use, emotional intelligence and scholarly accomplishment huge positive relationship and no noteworthy relationship were found between the members emotional and social methodology use and their scholastic accomplishment.

OBJECTIVES OF THE STUDY

1. To measure the emotional intelligence of the students viable.
2. To measure the cognitive style and furthermore locus of control of the students viable.

RESEARCH METHODOLOGY

The current study would be an overview going under the class of unmistakable research. So various connections among free and ward factors would be examined. The greatness of the relationship would be resolved using coefficient of connection. Numerous relapses is one of the most much of the time utilized techniques of breaking down information in this exploration. In this study one significant goal is to anticipate scholastic accomplishment in students can be anticipated based on factors like cognitive style, emotional intelligence and locus of control. The specialist in this way chose to follow step down different relapse examination procedure.

Sample of the study

From the total population the researcher of adjusted randomly from different urban and rural schools.

Sample design and techniques

The quantity of students choose from various foundations and the examining configuration are given underneath. The areas, schools and students were chosen haphazardly.

DATA ANALYSIS

Organization of Data

In this study the scientist utilized factual strategy for the breaking down information. The score of scholastic accomplishment emotional intelligence, cognitive style and locus of control were gotten by following the fitting scoring techniques for the separate tests.

Presentation of Data

Statement of statistics of the academic achievement in emotional intelligence, cognitive style, locus of control scores acquired by understudy.

The analyst figured the insights of the conveyance of score got by the students. Here mean, middle, standard Deviation, P25, P75 was utilized as proportions of engaging measurements. The inferential measurements were utilized to discover the hugeness of contrast if any on every factor viable.

The restorative strategy like various connections and different relapse examination were utilized to decide the degree of relationship existing if any among the indicators and measure and furthermore to decide the limit of the indicator factors in anticipating the model variable.

CONCLUSION

Cognitive style for the most part relies upon how individuals see and compose data from their general surroundings. They generally comprise of seeing, recollecting, thinking, critical thinking, dynamic and impression of issue. It becomes significance for Teacher Educators to look at the exhibition of Student Teachers corresponding to their cognitive styles. Consequently Teacher Educators can classify the Student Teachers as indicated by their cognitive styles regardless of the varieties in the zone. To Enhance Student Teachers' getting the hang of, thinking, memory and critical thinking, by raising the familiarity with cognitive styles just as their Social and Emotional Intelligence procedures.

REFERENCES

[1] Rai et al (2013): "Essentials of Examination System" Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

[2] Aggarwal J.C (2008): Essentials of Educational psychology, New Delhi Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

[3] Aggarwal J.C (2010): "Landmarks in the History of Modern Indian Education" Vikas Publishing House Pvt. Ltd, Seven Edition.

[4] Aggarwal J.C (2010): "Theory and Principles of Education" Vikas Publishing House Pvt. Ltd. Thirteenth Edition.

[5] Pandey, A.K. (2013) "Research Methods" Rawat Publications Jaipur, New Delhi, Banglaore, Hyderabad, Guwahati.

[6] Anastasi. A (2018): "Psychological Testing". The Mac MillanCo. Mac Millan Ltd.

[7] Buch M.B: A Survey of Research in Education – Centre of Advanced study in Education Faculty of Education and psychology – M.S University of Baroda, BARODA India.

[8] Buch M.B (1978): Second Survey of Research in Education Society for Educational Research and Development Baaroda, India.

[9] Dutt, Sunil (2013): Comparative education second Revised dand Enlarged Edition Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

[10] Sheik (2014): Skishar Itihas O Sampratic Ghotona Probaho Classic books

[11] Das. B, Sengupta D. Roy R.P (2005): "Sikhay Babosthapane" Paschim Banga Rajya Pustak Parsad.

[12] Panda S. (2015): "Statistical Methods in Commerce, Accountancy and Economics" M. Das and Co. Calcutta – 64.

[13] Directorate of Distance Education (2007): "Methodology of Educational Research and Educational Statistics." Rabindra Bharati University, Kolkata – 91

[14] Ebel R.L and D.A Frisbie (2015): "Essentials of Education Measurement" Prentice – hall – Inc Engle wood cliffs.

[15] Shrivastava Madhulika (2013) personality and experimental psychology: the unification of psychology and the possibility of a paradigm, Journal of personality and social psychology 73, pp. 1224-1237.

Corresponding Author

rnal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

नमाध्यम, सोशल मीडिया और कंप्यूटर नवाचार का बच्चों पर प्रभाव

Saroj Shukla[1]* Ishwar Prasad Yadu[2]

[1] Assistant Professor, Sandipani Academy, Achhoti, Durg

[2] Assistant Professor, Shri Rawatpura Sarkar Institute, Dhaneli, Raipur

– सोशल मीडिया हमारी आंखों के सामने तेजी से विकसित हो रहा है और इस नवीनतम तकनीक से हमारे बच्चों को अस्वीकार ना और छिपाना व्यावहारिक रूप से मुश्किल है। मीडिया एक्सपोजर का परिमाण मुख्य रूप से अधिक है। सर्वेक्षण कहता है कि और % भारतीय बच्चे सेल फोन उपयोगकर्ता हैं और हर साल गेमिंग और इंटरनेट के आदी बच्चों का प्रतिशत बढ़ रहा है। 2017 में, रत में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की वृद्धि की वार्षिक दर लगभग 129: है, जो चीन (109:) से भी अधिक है। हमारे देश के विभिन्न हरों में इंटरनेट डेडडिक्शन सेंटर शुरू किए गए हैं। प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का बच्चों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों भाव पड़ता है। यह भविष्य की पीढ़ी के इष्टतम विकास और विकास के लिए प्रभावी रूप से उपयोग करने के लिए प्रौद्योगिकी और डिया के लाभों और नकारात्मक प्रभावों को समझने का उच्च समय है। 21 वीं सदी को हम यदि मीडिया की सदी कहें तो कोई तिश्योक्ति नहीं होगी। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये आयामों द्वारा शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियों का पहाड़ सा खड़ा कर दिया समें मीडिया की लोकप्रियता सर्वत्र छायी रही। मीडिया ने न केवल वर्तमान में अपितु स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपनी पत्रकारिता के ाध्यम से राष्ट्रीय तथा स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक अभिलेख प्रस्तुत किया है। संभवत अखबार ही पहला जनसंपर्क माध्यम था, जिसमें मल्टीमीडिया का प्रयोग हुआ। 1985 में मारकोनी ने बेतार रेडियो संदेश भेजा था, फिर 1901 में टेलीग्राफ का प्रयोग रेडियो के द्वारा शुरू हुआ, आज भी रेडियो तरंग ऑडियो प्रसारण में प्रयोग हो रहा है। अपने शुरुआती दौर में सोशल नेटवर्क एक सामान्य सी दिखने वाली साईट होती थी और इसके जरिए उपयोगकर्ता एक दूसरे से चैटरूम के जरिए बात करते थे और अपनी निजी जानकारी व विचार एक दूसरे के साथ बांटते थे।

----------X----------

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिस समाज में मनुष्य रहता है उस समाज के बारे में वह अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। समाज में कब, कहाँ, क्यों, कैसे क्या हो रहा है? इन सबको जानने का एकमात्र माध्यम मीडिया है। जो समाचार द्वारा लोगों की जिज्ञासाओं को पूर्ण करता है। आए दिन कुछ न कुछ ऐसी घटनाएं व बातें मीडिया द्वारा प्रदर्शित की जातीं हैं। जिसका संबंध कहीं न कहीं आम लोगों के जीवन से होता है।

तकनीकी विकास जहाँ हमें इतना कुछ दे रहा है वहीं बहुत कुछ छीन भी रहा है। यह हमारे ऊपर है कि हम किस प्रकार इससे लाभ ज्यादा और हानि कम उठायें। जहाँ सोशल मीडिया लोगों को करीब लाता है वहीं इसके बहाने लोगों ने एक-दूसरे से मिलना भी छोड़ दिया। जहाँ लोग कम से कम छः महीने में एक-दूसरे से मिल लेते थे वहीं यह अवधि और बढ गई है और लोग सोशल मीडिया पर ही मेल-मुलाकात कर लेते हैं। कुछ लोग सोशल मीडिया के जरिये देश में अशांति व द्वेश फैलाने का निन्दनीय काम भी करते हैं। किसी भी छोटी सी खबर को धर्म व जाति से जोड़ कर और नमक-मिर्च लगा कर सोशल मीडिया पर डाल देते हैं जिससे वह आग की तरह फैल जाती है। देश में कई ऐसी घटनायें देखने में आई हैं। कई बार सोशल मीडिया पर ऐसी बातें डाल देते हैं कि वह देश या विश्व का मुद्दा बन जाती हैं। कई बार नकली एकाऊण्ट बना कर तो कई बार अपनी पहचान बदल कर लोग अपहरण, हत्या जैसी साजिशों के लिए भी सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं। इन सभी बातों का युवाओं के मन-मस्तिष्क पर बहुत प्रभाव पड़ता है। कहीं

SANDIPANI ACADEMY DIST. DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

www.ignited.in

का नकारात्मक तो कहीं सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव पर देखा गया है।

नेक युग में सोशल मीडिया का समाज पर बहुत अधिक पड़ रहा है। लेकिन युवा पी ढ़ी सबसे अधिक प्रभावित हो है। आज का युवा इन्टरनेट, फेसबुक, मोबाइल फोन दि पर अपना अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं। ान समय में सोशल मीडिया ने चारों तरफ धूम मचा रखी आज हम घर बैठे देश-विदेश तथा सभी छोटी या बड़ी कारी मीडिया के माध्यम से आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। ाल मीडिया ने प्रिन्ट मीडिया, पत्र-पत्रिकाओं आदि को पीछे ड़ दिया है। हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय सोशल डिया का समय है इस में समय व धन की बचत होती है ारी सरकार भी इसे ब ढा वा दे रही है और इस क्षेत्र में काफी ासरत है। युवाओं पर इस के सकारात्मक व नकारात्मक नों तरह के प्रभाव देखने को मिलेंगे।

दि हम पूरे विश्व को एक ही परिवार बनाने की बात सोचते हैं तो सोशल मीडिया से ब ढ कर और कोई दूसरा माध्यम नहीं हो सकता। यह आजकल के समय की आवश्यकता भी बन गया है। चाहे वह नेता हो या अभिनेता, बहुत बड़ा उद्योगपति हा या साहित्यकार, हर प्रसिद्ध व्यक्ति सोशल मीडिया पर अपने को अपडेट रखता है जिससे उसके प्रशंसक उसकी गतिविधियों से अवगत रहें। अपने आप को समाज से जोड़े रखने के लिए सोशल मीडिया ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। जिन लोगों से हम वर्षों से नहीं मिले उन्हें मिलने का सोशल मीडिया से बढ़िया तरीका और क्या हो सकता है। लोग भी खुश हैं कि आजकल के व्यस्त समय में अगर हम किसी से मिलने नहीं जा सकते तो कम से कम फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप् आदि के जरिये वे एक दूसरे के बारे में मालूम तो कर ही लेते हैं।

व्हाट्सएप और कई सोशल नेटवर्किंग साइट्स के द्वारा लोगों ने आय प्राप्त करने के तरीके भी ढूँढ लिये हैं। कई सोशल मीडिया की साइट्स पर घरेलू महिलाएं अपने व्यंजन बनाने के हुनर का वीडियो अपलोड करके नाम और पैसा कमा रही हैं और सिर्फ अपने शहर ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में जानी-पहचानी जा रही हैं। मात्र यह ही नहीं, कई तरह के हुनर में पारंगत लोगों के वीडियो आप इसमें देख सकते हैं कुछ लोग तो इसके जरिये अपने हुनर को और लोगों को भी सिखा रहे हैं। अब कोई भी खबर मात्र टैलीविजन, रेडियो या अखबार के द्वारा ही लोकप्रिय नहीं होती बल्कि सबसे ज्यादा प्रचार का कार्य सोशल मीडिया कर रहा है। कई बार लोग पैसे के अभाव में अपनी कला का प्रदर्शन बड़े स्तर पर नहीं कर पाते थे लेकिन सोशल मीडिया से बढ़िया मंच क्या होगा जिसके जरिये वे रातों-रात लोकप्रिय हो गये।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एक इन्टरनेट आधारित साॅफ्टवेयर और इन्टरफेस है। जो व्यक्तियों को एक-दूसरे के साथ बात-चीत करने के लिए तथा उनकी व्यवसायिक जानकारी, निजी तस्वीरें और विचारों के रूप में, तथा उनके जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए अनुमति देतें हैं। सोशल मीडिया युवा पीढी को काफी प्रभावित कर रहा है क्योंकि यह सांस्कृतिक जीवन, रहन-सहन, खान-पान, पहनना, ओढना, भाषा, कला आदि सभी सांस्कृतिक पक्षों पर अपना प्रभाव डालता है। सोशल मीडिया के द्वारा युवा पी ढी इससे काफी लाभान्वित भी हो रही है।

आज सोशल मीडिया का बहुत ज्यादा बोल बाला है। ये एक ऐसा मंच है। जहाँ से लोग अपनी बात पूरी दुनिया तक पहुँचा सकते हैं। सोशल मीडिया के द्वारा कोई भी जो इन्टरनेट का इस्तेमाल करना जानता है। लाखों करोड़ों लोगों से ऑनलाईन बात-चीत कर सकता है। इसके लिए उसे अपने विचारों और योजनाओं को दर्शकों तक पहुँचाने के लिए किसी नेता, पत्रकार या किसी अधिकारी पद पर होने की आवश्यकता नही है। जो कि परम्परागत रूप से आवश्यक होती है।

मीडिया का महत्व: मीडिया एक ऐसा जरिया है जिसके द्वारा देश-विदेश की जानकारी, डाटा को एक साथ लाखों लोगों तक पहुँचाया जाता है पहले लोग अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए डांस, गाने, नाटक आदि का प्रयोग करते थे। जिससे वे अपनी बात दूसरों तक आसानी से पहुँचा सकें। समय के साथ-साथ इसमें बदलाव आया और इसकी जगह प्रिंट मीडिया फिर मास मीडिया और अब सोशल मीडिया के द्वारा लोग अपनी बात सबके सामने रखते हैं। मीडिया संचार का एक बहुत आसान और मजबूत तरीका है। आज कल मीडिया के बहुत आसान तरीके हैं।-रेडियो, टीवी, न्यूजपेपर एवं इंटरनेट आदि। मीडिया का हमारी सोसाइटी में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

किशोरों और सोशल मीडिया का जोखिम

सोशल मीडिया का उपयोग करना वयस्कों के एहसास की तुलना में किशोरों के लिए अधिक जोखिम भरा हो जाता है। ये जोखिम निम्नलिखित श्रेणियों में आते हैंय सहकर्मी को सहकर्मी, अनुचित सामग्री, ऑनलाइन की समझ की कमी - गोपनीयता के मुद्दों और निम्नलिखित के तहत तीसरे पक्ष के विज्ञापन समूहों के बाहर का प्रभावरू

www.ignited.in

कैबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न – यह किसी अन्य व्यक्ति के बारे में झूठी, शर्मनाक या शत्रुतापूर्ण जानकारी संवाद करने के लिए डिजिटल मीडिया का उपयोग करने की एक प्रक्रिया है। यह सभी किशोरों के लिए सबसे आम ऑनलाइन जोखिम है और एक सहकर्मी से सहकर्मी जोखिम है। ऑनलाइन उत्पीड़न शब्द 'साइबरबुलिंग' शब्द के साथ अक्सर अंतर-प्रयोग किया जाता है। साइबरबुलिंग काफी आम है और अवसाद, चिंता, गंभीर अलगाव और दुखद आत्महत्या सहित गहन मनोवैज्ञानिक परिणाम पैदा कर सकता है।

सेक्स करना – यह सेल फोन, कंप्यूटर या अन्य डिजिटल उपकरणों के माध्यम से यौन संदेश, तस्वीरें या चित्र भेजना, रिकॉर्ड करना या अग्रेषित करना है। ज्यादातर बार, इन छवियों को सेल फोन या इंटरनेट के माध्यम से वितरित किया जाता है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (2010) के एक हालिया सर्वेक्षण में पता चला है कि 20% किशोरों ने नग्न या सेमिनूड तस्वीरें या स्वयं के वीडियो भेजे या पोस्ट किए हैं। कुछ किशोर जो सेक्सटिंग में लिप्त हैं, उन पर नाइजीरिया के कुछ राज्यों में भी गुंडागर्दी करने के आरोप लगे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में पीड़ित। हालांकि कई परिस्थितियों में, सेक्सिंग की घटना को एक छोटे सहकर्मी समूह या एक जोड़े से परे साझा नहीं किया जाता है।

- **फेसबुक डिप्रेशन** – फेसबुक एक्सेस पर अत्यधिक पोस्टिंग पर शोध ने 'फेसबुक डिप्रेशन' नामक एक नई घटना का प्रस्ताव किया है जिसे डिप्रेशन (हेन्किंस एंड जिओ (1999) के रूप में परिभाषित किया गया है जो तब विकसित होता है जब पूर्व-किशोर और किशोर सोशल मीडिया साइटों पर बहुत समय बिताते हैं। फेसबुक के रूप में और फिर अवसाद के क्लासिक लक्षणों का प्रदर्शन करना शुरू करते हैं। साथियों द्वारा स्वीकृति और संपर्क किशोरों के जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। ऑनलाइन दुनिया की तीव्रता को एक कारक माना जाता है जो कुछ किशोरों में अवसाद को ट्रिगर कर सकता है। जैसे कि ऑफलाइन अवसाद। preadolescents और किशोर जो फेसबुक अवसाद से पीड़ित हैं, सामाजिक अलगाव के लिए जोखिम में हैं और कभी-कभी 'सहायता' के लिए जोखिमपूर्ण इंटरनेट साइटों और ब्लॉगों की ओर रुख करते हैं जो मादक द्रव्यों के सेवन, असुरक्षित यौन व्यवहार या दमनकारी या आत्म-विनाशकारी व्यवहार को बढ़ावा दे सकते हैं।

- **डिपेक्टिव सोशल रिलेशन** – इंटरनेट पर अनगिनत घंटे बिताने से बच्चे परिवार और वास्तविक दोस्तों के साथ बहुत सीमित समय बिताते हैं। यह पारिवारिक बंधन को कमजोर करता है और वास्तविक लोगों के साथ बातचीत को सीमित करता है। ये बच्चे विभिन्न रिश्तेदारों के साथ वास्तविक जीवन की बातचीत को याद करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप विकृत सामाजिक कौशल और सीमित वास्तविक जीवन सामाजिक नेटवर्क होता है जो सामाजिक अलगाव के लिए अग्रणी होता है। हैंकिंस, और जियाओ (1999) और वैंकेनबर्ग (2009) का मानना है कि जिन किशोरों में घनिष्ठ मित्रता नहीं होती है, उनमें आत्मसम्मान और मनोवैज्ञानिक दुर्भावना के मनोवैज्ञानिक लक्षणों का स्तर लगातार कम होता है। जब लोगों का सामाजिक संपर्क अधिक होता है, तो वे शारीरिक और मानसिक रूप से खुश और स्वस्थ होते हैं।

- **विस्तारित वास्तविकता की गहनता** – एक राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण से पता चला कि आधे किशोर, उम्र 13-18 अक्सर इंटरनेट के माध्यम से किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संवाद करते हैं जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं मिला है। एक तिहाई ने संभावित रूप से आमने-सामने बैठक के बारे में बात की है (पेली क्लास फाउंडेशन, 2006)। कुछ लोगों ने सिंथिया ओसोकोगो 2013 ग्लागोस सेगाच् के मामले की तरह अपने जीवन को खतरे में डाल दिया है, जहां उसके फेसबुक मित्र ने उसके साथ बलात्कार किया और एक व्यापारिक सौदे के लिए सामना करने के लिए लागोस नाइजीरिया के एक होटल के कमरे में उसकी गला दबाकर हत्या कर दी। (न्यू नाइजीरिया न्यूज पेपर 13 जून 2012) कई सोशल मीडिया साइटें कई विज्ञापन प्रदर्शित करती हैं जैसे बैनर विज्ञापन, व्यवहार विज्ञापन जो लोगों को उनके वेब-ब्राउजिंग व्यवहार और जनसांख्यिकीय-आधारित विज्ञापनों के आधार पर लक्षित करते हैं जो एक विशिष्ट आधार पर लोगों को लक्षित करते हैं कारक जैसे कि उम्र, लिंग, शिक्षा, मार्शल स्थिति आदि। यह न केवल पादरियों और किशोरों की प्रवृत्ति को प्रभावित करता

w.ignited.in

है, बल्कि सामान्य क्या है, इसके बारे में भी उनके विचार हैं। माता-पिता के लिए व्यवहार संबंधी विज्ञापनों से अवगत होना उचित है क्योंकि वे सोशल मीडिया साइटों पर आम हैं और साइट का उपयोग करने वाले व्यक्ति पर जानकारी इकट्ठा करके संचालित करते हैं।

ल मीडिया का उपयोग करके बच्चों और किशोरों के लाभ

ल मीडिया साइट्स किशोर को कुछ ऐसे कार्यों को पूरा ने की अनुमति देती हैं जो उनके लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं दोस्तों और परिवार से जुड़े रहना, नए दोस्त बनाना, चीजें साझा करना और विचारों का आदान-प्रदान करना। सी और, सोशल मीडिया भागीदारी किशोरों को गहरे लाभ न कर सकती है जो स्वयं, समुदाय और दुनिया के ष्टिकोण में विस्तार करते हैं। यह और अधिक फायदेमंद हो ता है यदि वयस्क बच्चों के साथ जुड़ जाते हैं और शैक्षिक सॉफ्टवेयर के उपयोग और टीवी शो को देखने के माध्यम से गुणवत्ता वेबसाइटों पर मीडिया के उपयोग में मार्गदर्शन करते जो अतिरिक्त सीखने के अवसर प्रदान करते हैं। जब ये यस्क बच्चों के साथ टीवी और फिल्में देखते हैं, प्लॉट पर चर्चा रते हैं, कि बच्चे फिल्म में होने वाली घटनाओं के बारे में कैसा हसूस करते हैं और गलत और अवैध कार्यों के वास्तविक जीवन के परिणामों की तुलना समाज में बच्चे के विकास में तुलन बनाते हैं।

मीडिया जीवन में विभिन्न उम्र में व्यक्ति को लाभान्वित करता है। छोटे बच्चों के लिए, मीडिया के विकासात्मक लाभ हैं

- कौशल कौशल - उदाहरण के लिए प्ले स्कूल या शैक्षिक कंप्यूटर गेम या तिल स्ट्रीट जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अक्षर सीखना।
- कौशल कौशल – प्ले स्कूल कार्यक्रमों के माध्यम से गिनती सीखना।
- सोशल स्किल्स – टीवी कार्यक्रमों का सीखना और कंप्यूटर गेम और एबीसी जैसे बच्चों के लिए वेबसाइटों का उपयोग करना जो सहकारी और मदद करने वाले व्यवहार दिखाते हैं।
- काल्पनिक और दस्तावेजी सामग्री में पाए गए लोगों के साथ पारिवारिक मूल्यों की तुलना करके विकासशील समस्याएँ सुलझाने और आलोचनात्मक सोच के साथ-साथ नैतिक विकास पर अधिक ध्यान देने के साथ-साथ बौद्धिक लाभ।
- उत्कृष्ट लाभ - कल्पना, कला और मॉडलिंग, संगीत और मीडिया के माध्यम से कौशल विकसित करना एक चित्र बनाने के लिए या एक टीवी शो द्वारा कुछ बनाने के लिए प्रेरित होने के लिए।
- सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर दूसरों से जुड़ने के जरिये ऐसा करने से कौशल, किशोर अपने कौशल का विकास कर सकते हैं।
- मीडिया में अच्छे रोल मॉडल देखने के माध्यम से विचार।

समाचार, करंट अफेयर्स और वृत्तचित्रों को देखकर राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता।

- चिल्ड्रेन के उद्देश्य - बच्चे मनोरंजन और विश्राम के उद्देश्यों के लिए मीडिया का उपयोग करते हैं जो कि बोरियत दूर करने के लिए, खेल खेलने के लिए या सामाजिक संपर्क के लिए और पहचान बनाने के लिए करते हैं।
- **किशोरों का मकसद** - वे इसका उपयोग सामाजिक संपर्क, सामाजिक पहचान, सहकर्मी बातचीत, स्थिति को बढ़ावा देने और प्रतीक, संचार जैसे ई-मेल या चैट, फेसबुक, ट्विटर के लिए भी करते हैं। जैसे-जैसे वे परिपक्व होते हैं, वे करियर, बिजनेस नेटवर्किंग और पसंद के प्रति वैश्विक संपर्क के लिए इंटरनेट का उपयोग करना शुरू करते हैं।
- **मदकमत अंतर** - लड़कियों के इंटरनेट उपयोग के लिए अलग-अलग उद्देश्य हैं जो हैं- लड़के
- मनोरंजन के लिए, वीडियो गेम, कंप्यूटर गेम और अवसरों में अधिक रुचि रखते हैं
- ऑनलाइन गेम, डाउनलोड, साथियों से समाचार/जानकारी प्राप्त करना (बीयर्ड और व्हार्फ 2001) लड़कियों - होमवर्क सामाजिक संपर्क के लिए जानकारी प्राप्त करने के लिए, दोस्तों के साथ संपर्क में रहें
- चैटिंग, करियर और ज्ञान संवर्धन, पुस्तक आदि में नए आधार तोड़ें (जोचेन और वाल्केनबर्ग, 2008)।

www.ignited.in

ब्लॉग, चैट रूम का उपयोग करने और संदेश बोर्ड जैसे फ़ोरम और समाचार साइटों में शामिल होने के माध्यम से लेखन, लेखन और महत्वपूर्ण सोच कौशल।

र

शल मीडिया साइटें कई विज्ञापन प्रदर्शित करती हैं जैसे विज्ञापन, व्यवहार विज्ञापन जो अपने वेब-ब्राउजिंग र और जनसांख्यिकीय आधार विज्ञापनों के आधार पर को लक्षित करते हैं जो एक विशिष्ट कारक जैसे आयु, शिक्षा, मासिक के आधार पर लोगों को लक्षित करते हैं स्थिति जो न केवल विद्यार्थियों और किशोरों की खरीदारी वृत्ति को प्रभावित करती है, बल्कि उनके विचार भी न्य हैं। माता-पिता के लिए व्यवहार संबंधी विज्ञापनों से त होना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे सोशल मीडिया साइटों ाम हैं और किसी साइट का उपयोग करने वाले व्यक्ति पर कारी इकट्ठा करके संचालित करते हैं। ऑनलाइन दुनिया के ो बच्चों और किशोरों को शिक्षित करने और इसके खतरों प्रबंधन और बचाने के लिए एहतियात बरतना चाहिए। माता- ा की एक प्रमुख चिंता यह है कि इंटरनेट बच्चों के ाजिक कौशल को प्रभावित करता है। इसको देखने के दो के हैं इंटरनेट आलोचक कहेंगे कि बच्चे सामाजिक तिविधियों में कम समय व्यतीत करते हैं या परिवार और तों के साथ संवाद करते हैं। दूसरी ओर इंटरनेट उन्हें नए त बनाने में सक्षम बनाता है जो दूर स्थानों पर स्थित हैं।

र्भ सूची

1. https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/technology.
2. https://sites.ewu.edu/cmst496-stafford/2012/.../the-effects-of-socialmedia-on-children.
3. Smartphone Users around the World – http://www.go-gulf.com/blog/smart phone.
4. https://economictimes.indiatimes.com.
5. homework.uoregon.edu/pub.
6. https://docslide.com.br/education/imp act-of-social-media-on-the-future.
7. M. Ray, K. RamJat (2010). Effect of electronic media on children, Indian Pediatrics; 47: pp. 561–8.
8. https://www.slideshare.net/tasneemasif/media-and-children-54188487.
9. J.K. Mathew (2009). A study to evaluate the effectiveness of structured teaching programme on knowledge regarding negative influence of mass media among high school children in selected high schools tumkur.
10. Times Now. Delhi High Court lifts smoking ban in films, TV. http://news.bollysite.com/bollywood/h c-lifts-ban-on-smoking-in-films.html. Accessed November 14, 2009.
11. J.W. Grube, E. Waiters (2005). Alcohol in the media: content and effects on drinking beliefs and behaviors among youth, Adolesc Med Clin.; 16: pp. 327–43p.
12. G.M. Connolly, S. Casswell, J.F. Zhang, P.A. Silva (1994). Alcohol in the mass media and drinking by adolescents: a longitudinal study, Addiction; 89: pp. 1255–63.
13. B.A. Primack, K.L. Kraemer, M.J. Fine, M.A. Dalton (2008). Association between media exposure and marijuana and alcohol use in adolescents, J Adolesc Health; 42: S3p.
14. www.slideshare.net/.../technologyleadership-in-early-childhoodeducation.
15. https://docslide.net. 2017.
16. D. Johnson, A. Ozdowska, P. Wyeth (2013). Active versus Passive Screen Time for Young Child. P. Sweester (ed.), Queensland University of Technology, 29 July 2013.
17. Screen Time Higher Than Ever for Children. NYTimes.com. The New York Times, Lewin, Tamar. 25 Oct. 2011.
18. Http://www.milliganstampede.com/2013/04/19/bloghow-Social-media-canpositively-impact-educationalprocesses/.
19. https://www.teenshield.com/blog/2016/06/28/positive-effects-of-socialmedia/.
20. K. Arya K. (2004). Time spent on television viewing and its effect on changing values of school going children, Anthropologist; 6: pp. 269–71.

व्यवसायिक शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्यौगिकी की भूमिका का अध्ययन

सरोज शुक्ला,
शोधार्थी,
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. रेखा नरेन्द्र जीभकाटे,
प्राध्यापक
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़

सांराश

शिक्षा विकास का वह नाम है जिससे मानव अपने को आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। यदि हम व्यवसायिक शिक्षा को ही लेते है तो यह विकास के पथ का एक ऐसा माध्यम है जो सिर्फ राष्ट्र को विकासशील ही नहीं बनाती है, अपितु उस राष्ट्र के प्रत्येक निवासी की आर्थिक स्थिति को दृढता प्रदान कर उसे संर्पूणता आत्मनिर्भर बनाता है। बदलते इस युग के साथ सरकारी/गैरसरकारी द्वारा व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनेको कार्य किये जा रहें हैं। अतः व्यवसायिक शिक्षा का योगदान सराहनीय हैं। अब 21वीं शताब्दी में केवल वे लोग जो किसी भी तकनीकी क्षेत्र में विशेषज्ञ है, अच्छी नौकरियां सुरक्षित कर सकते है इसलिये सरकारी और या व्यवसायिक दोनो क्षेत्रों में उच्च स्तर की कौशल मांग में वृद्धि हुई है। शैक्षिक प्रौद्यौगिकी को सर्वाधिक सरलता और सहजता से ऐसे उपकरणों की एक सारणी के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। जो शिक्षार्थी के सीखने की प्रकिया में सहायक सिद्ध हो रही है। शैक्षिक प्रौद्यौगिकी, शब्द की एक व्यापक परिभाषा पर निर्भर करती है।

मुख्य शब्द

व्यवसायिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम, शैक्षिक प्रौद्यौगिकी, कम्यूटर,व्यवहार एवं अनुदेशन।

प्रस्तावना

भारत में व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रथम पंचवर्षीय से अब तक अनेक सुधार व परिवर्तन किये गये जिससे व्यवसायिक शिक्षा में कौशल विकास को महत्व दिया गया तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में कौशल को आवश्यक माना गया, जिसके तहत व्यवसायिक पाठ्यक्रम का न सिर्फ नवीनीकरण किया गया है। अपितु अनेक नवीन पाठ्यक्रमों को भी प्रौद्यौगिकी से जोड़ा गया है। बढ़ती हुई आबादी के कारण बेरोजगारी सुरसा (राक्षस) की तरह मुँह फैलाये हुए है, अतः इसकी आवश्यकता को महसूस करते हुए शैक्षिक प्रौद्यौगिकी के द्वारा भारत के प्रत्येक नागरिक को योग्य एवं सफल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। नई दिल्ली प्रौद्यौगिकीयों का बडे पैमाने पर पहला उपयोग प्रशिक्षण फिल्मों और अन्य मिडिया सामग्री के माध्यम से द्वितीय विश्वयुद्ध के अमेरिका सैनिको के प्रशिक्षण में पाया जा सकता है। आज की प्रस्तुतिकरण आधारित प्रौद्यौगिकी इस विचार पर आधारित प्रौद्यौगिकी इस विचार पर आधारित है कि लोग विषय वस्तु को श्रव्य और दृश्य अभिग्रंथ से सीख सकते है जो अनेक प्रारुपो में उपलब्ध है, जैसे स्ट्रीमिंग ऑडियों और विडियों पावर पाइट प्रस्तुतीकरण ।

आवाज (1940) के दशक का एक अन्य रोचक अविष्कार हाइपर टेक्सट यानि वी बुश का मेमेक्स था। 1950 के दशक में दो प्रमुख लोकप्रिय अभिकल्प दिये। स्किनर्स ने अनुदेशनात्मक विषय वस्तु को छोटी ईकाईयों में विभाजित कर तथा सही अनुक्रियाओं को अक्सर जल्दी पुरस्कृत कर क्रमादेशिक अनुदेशों का व्यवहार अन्य लक्ष्यों के संरुपरण पर ध्यान केन्द्रीत करना संभव बनाया। अपने बौद्धिक व्यवहारों के वर्गीकरण के आधार अधिगम के प्रति प्रवीण दृष्टिकोण की वकालत करते हुए ब्लूम में अनुदेशात्मक तकनीको का समर्थन किया जिसने शिक्षार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अनुदेश एवं समय दोनों परिवर्तित किया। 1970 के दशक से 1990 के दशक ऑनलाईन अधिगम के दो प्रमुख प्रारुपों में अंतर लोकप्रिय हुई जिसमें कम्यूटर आधारित सी.वि.टी है। कम्यूटर आधारित प्रशिक्षण अधिगम पूर्व के इन दोनों ही प्रकारों ने एक ओर छात्र और कम्यूटर अभ्यास एवं अनुशिक्षण तथा

व्यवसायिक शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्यौगिकी की भूमिका का अध्ययन

सरोज शुक्ला,
शोधार्थी,
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. रेखा नरेन्द्र जीभकाटे,
प्राध्यापक
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़

सांराश

शिक्षा विकास का वह नाम है जिससे मानव अपने को आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। यदि हम व्यवसायिक शिक्षा को ही लेते है तो वह विकास के पथ का एक ऐसा माध्यम है जो सिर्फ राष्ट्र को विकासशील ही नहीं बनाती है, अपितु उस राष्ट्र के प्रत्येक निवासी की आर्थिक स्थिति को दृढता प्रदान कर उसे संर्पूणता आत्मनिर्भर बनाता है। बदलते इस युग के साथ सरकारी/गैरसरकारी द्वारा व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनेको कार्य किये जा रहें हैं। अतः व्यवसायिक शिक्षा का योगदान सराहनीय हैं। अब 21वीं शताब्दी में केवल वे लोग जो किसी भी तकनीकी क्षेत्र में विशेषज्ञ है, अच्छी नौकरियां सुरक्षित कर सकते है इसलिये सरकारी और या व्यवसायिक दोनो क्षेत्रों में उच्च स्तर की कौशल मांग में वृद्धि हुई है। शैक्षिक प्रौद्यौगिकी को सर्वाधिक सरलता और सहजता से ऐसे उपकरणों की एक सारणी के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। जो शिक्षार्थी के सीखने की प्रकिया में सहायक सिद्ध हो रही है। शैक्षिक प्रौद्यौगिकी, शब्द की एक व्यापक परिभाषा पर निर्भर करती है।

मुख्य शब्द

व्यवसायिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा कार्यकम, शैक्षिक प्रौद्यौगिकी, कम्यूटर,व्यवहार एवं अनुदेशन।

प्रस्तावना

भारत में व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रथम पंचवर्षीय से अब तक अनेक सुधार व परिवर्तन किये गये जिससे व्यवसायिक शिक्षा में कौशल विकास को महत्व दिया गया तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में कौशल को आवश्यक माना गया, जिसके तहत व्यवसायिक पाठ्यकम का न सिर्फ नवीनीकरण किया गया है। अपितु अनेक नवीन पाठ्यकमों को भी प्रौद्यौगिकी से जोड़ा गया है। बढ़ती हुई आबादी के कारण बेरोजगारी सुरसा (राक्षस) की तरह मुँह फैलाये हुए है, अतः इसकी आवश्यकता को महसूस करते हुए शैक्षिक प्रौद्यौगिकी के द्वारा भारत के प्रत्येक नागरिक को योग्य एवं सफल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। नई दिल्ली प्रौद्यौगिकीयों का बडे पैमाने पर पहला उपयोग प्रशिक्षण फिल्मों और अन्य मिडिया सामग्री के माध्यम से द्वितीय विश्वयुद्ध के अमेरिका सैनिको के प्रशिक्षण में पाया जा सकता है। आज की प्रस्तुतिकरण आधारित प्रौद्यौगिकी इस विचार पर आधारित प्रौद्यौगिकी इस विचार पर आधारित है कि लोग विषय वस्तु को श्रव्य और दृश्य अभिग्रंथ से सीख सकते है जो अनेक प्रारुपो में उपलब्ध है, जैसे स्ट्रीमिंग ऑडियों और विडियों पावर पाइट प्रस्तुतीकरण ।

आवाज (1940) के दशक का एक अन्य रोचक अविष्कार हाइपर टेक्सट यानि वी बुश का मेमेक्स था। 1950 के दशक में दो प्रमुख लोकप्रिय अभिकल्प दिये। स्किनर्स ने अनुदेशनात्मक विषय वस्तु को छोटी ईकाईयों में विभाजित कर तथा सही अनुक्रियाओं को अक्सर जल्दी पुरस्कृत कर क्रमादेशिक अनुदेशों का व्यवहार अन्य लक्ष्यों के संरुपरण पर ध्यान केन्द्रीत करना संभव बनाया। अपने बौद्धिक व्यवहारों के वर्गीकरण के आधार अधिगम के प्रति प्रवीण दृष्टिकोण की वकालत करते हुए ब्लूम में अनुदेशात्मक तकनीको का समर्थन किया जिसने शिक्षार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अनुदेश एवं समय दोनों परिवर्तित किया। 1970 के दशक से 1990 के दशक ऑनलाईन अधिगम के दो प्रमुख प्रारुपों में अंतर लोकप्रिय हुई जिसमें कम्प्यूटर आधारित सी.वि.टी है। कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण अधिगम पूर्व के इन दोनों ही प्रकारों ने एक ओर छात्र और कम्प्यूटर अभ्यास एवं अनुशिक्षण तथा

बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती सरोज शुक्ला

शोध विद्यार्थी, श्री रावतपुरा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

सारांश– प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की विवेचना करना है। 100 बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों को यादृच्छिक रूप से चयनित करते हुए तथा संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु सिंह तथा जायसवाल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी 2021 का प्रयोग करते हुए संवेगात्मक बुद्धि हेतु आँकड़े एकत्र किए गए। शैक्षणिक उपलब्धि हेतु द्वितीय एवं तृतीय सेमेस्टर के बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के परीक्षा परिणाम के अंकों का संकलन किया गया। सांख्यिकी टी – परीक्षण के माध्यम से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होता है।

प्रस्तावना – शिक्षा, दर्शनशास्त्र का अभिन्न अंग है। यह जीवन के विचारों को साकार करने का साधन है, व्यावहारिक है तथा सक्रिय ताप है। शिक्षा, जीवन का अत्यंत आवश्यक पक्ष है। एक बेहतर जीवन प्राप्ति हेतु समाज में स्थान प्राप्ति हेतु, ज्ञानवर्धन हेतु शिक्षा अति उत्तम साधन है।

शिक्षक प्रशिक्षण स्नातक डिग्री को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत छात्र बी.एड. प्रशिक्षु कहलाते है जो कि दो वर्षीय पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद बी. एड. की डिग्री प्राप्त करते है। शिक्षण की गुणवत्ता निरंतर अभ्यास से अनवरत रूप से बढ़ती है। एक शिक्षक न केवल विषय का शिक्षक होता है बल्कि वह एक मनोवैज्ञानिक, कोच, मित्र सहायक उत्साहवर्द्धक, कांउसलर, विशेषज्ञ भी होता है।

सांवेगिक रूप से सक्षम व्यक्ति अपने जीवन को शांतिपूर्वक तथा खुशी के साथ जीता है ऐसा व्यक्ति स्वयं के साथ, अपने आस-पास और अपने से जुड़े लोगों के साथ सुखद जीवन जीने का प्रयास करता है। ऐसे व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ होने की संज्ञा दी जा सकती है और ऐसे व्यक्ति की विशेषताएँ होती है– सदा नया कुछ सीखने की इच्छा, व्यवहारिक लोचपन, हँसमुख, आशावादी विचारधारा वाले, सामाजिक रूप से सक्रिय, अपने जीवन में एक निश्चित दर्शन रखने वाले होते है। अतः भावनाओं को विकसित होना अति आवश्यक है ताकि व्यक्ति एक सौहार्दपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। संतुलन तथा स्थिरता जीवन में बनी रहे इसके लिये उचित शिक्षा प्रशिक्षण, भावनाओं पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। अतः व्यक्ति के सामंजस्य पूर्ण विकास के लिये भावनाओं का विकसित होना अति महत्वपूर्ण है। सहानुभूति, आत्मजागरूकता, भावनात्मक स्थिरता, पारस्परिक संबंध अंतर्वैयक्तिक संबंध, आत्म प्रेरणा, भावनाओं को प्रबंधित करना ही किसी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से गठित करता है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विभिन्न शैक्षणिक विषयों में छात्रों की उपलब्धि से है। शिक्षक सामान्यतया, छात्रों की उपलब्धि का आंकलन कक्षा कक्ष में शैक्षिक प्रदर्शन, मानक परीक्षा परिणामों द्वारा तथा उत्तीर्ण प्रतिशत द्वारा करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि एक ऐसा क्षेत्र है जिसके द्वारा छात्र, शिक्षक, शिक्षण संस्थाएँ लघु या दीर्घ उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकते हैं। शैक्षिक उपलब्धि का संबंध उस बौद्धिक व्यवहार तथा अभिव्यक्ति से है जिसका विकास स्कूल तथा छात्रों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण से होता है। शैक्षिक उपलब्धि का मापन प्रायः सतत् मूल्यांकन और परीक्षा परिणामों से किया जाता है ताकि छात्रों के बौद्धिक विकास के स्तर का पता लगाया जा सके। शैक्षिक उपलब्धि द्वारा ही छात्रों के लिये भविष्य कथन कहा जा सकता है कि कौन सा छात्र कौन से विषय में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन कर सकता है या किस विषय में और अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। अतः शैक्षिक उपलब्धि द्वारा छात्रों के बौद्धिक स्तर का विश्लेषण करने में सहायता प्राप्त होती है।

उद्देश्य

बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि तथा उनके शैक्षणिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं पाया जायगा।

शोध प्रविधि

जनसंख्या – दुर्ग जिले के समस्त बी. एड. प्रशिक्षु महाविद्यालय के छात्र ।

न्यादर्श – यादृच्छिक रूप से चयनित 100 बी. एड. प्रशिक्षु छात्र ।

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

करण -1. संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु सिंह तथा नारायण द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी 2021 का उपयोग किया गया है।

2. शैक्षणिक उपलब्धि के मापन हेतु द्वितीय एवं तृतीय सेमेस्टर के बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के परीक्षा परिणाम के अंकों का संकलन किया गया है।

विश्लेषण

एस. पी. एस. एस. सॉफ्टवेयर की सहायता से तथा टी - परीक्षण द्वारा विश्लेषण निम्न रूप से है।

चर	कुल	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मान	पी - मूल्य	
संवेगात्मक बुद्धि	100	21.83	4.15	1.65	.01	.05
शैक्षणिक उपलब्धि		85.19	31.97		सार्थक नहीं	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि टी का मान 1.65 प्राप्त हुआ जो कि .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना "बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई अंतर नहीं पाया जायगा", स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष - उपरोक्त परिणाम के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संभावित कारण यह है कि जिन बी. एड. प्रशिक्षु छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि अच्छे स्तर की है उनकी शैक्षणिक उपलब्धि निश्चित रूप से अच्छे स्तर की होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Aggarwal, Y.P. (2000). Statistical Methods. New Delhi: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

Narang, S. K. (2015). 'A Study of Academic Performance with Reference to some Personality and Perception Variables', Ph. D Thesis submitted to Department of Education, Gujarat University.

Dev, M. (2016) Factors Affecting the Academic Achievement: A Study of Elementary School Students of NCR Delhi, India. *Journal of Education and Practice* Vol.7, No.4, 2016

भावनात्मक बुद्धि का विकास एवं महत्व

सरोज शुक्ला

शोधार्थी, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश

वर्तमान में भावनात्मक बुद्धि (ई.आई.) की अवधारणा व्यावहारिक भिन्नता को समझने के लिए एक संभावित निर्माण के रूप में आयी है। आज की समकालिन भावनात्मक बुद्धि संतुलन भावनाओं और महत्वपूर्ण कौशल के बारे में अधिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण तकनीकों का उपयोग करते है। भावनात्मक बुद्धि की धारणा में कई शोधार्थियों ने दिलचस्पी ली है, और जैसे जैसे क्षेत्र में अनुसंधान बढ़ता गया, इसकी अवधारणा के बारे में लोगों की समझ भी विकसित होती गई है, परन्तु भावनात्मक बुद्धि का विचार कैसे आया ? इतिहास क्या था यह पेपर ई. आई की जड़ें स्थापना एवं महत्व के बारे में दर्शाता है। यहाँ भावनात्मक बुद्धि के विकास का पता लगाने के लिए 18वीं शताब्दी के बाद से भिन्न-भिन्न शोधार्थियों ने इस पर अध्ययन करते रहे है। ई. आई की जड़ें प्राचीन काल के भारतीय साहित्य में भी देखने को मिला है।

महत्वपूर्ण शब्द:- भावनात्मक बुद्धि, भावनात्मक सूचिमा, भावनात्मक चिंता।

प्रस्तावना

सभी मानव ने हमेशा से जानना चाहा कि ये "अहम" को समझें, मानव मन की अनुभूतियाँ....? रहस्य क्या है....? मानवीय व्यवहार क्या है.......? मानव मन.....? इन सवालों ने उन्हें शोध करने के लिए मजबूर कर दिया और समयानुसार हम इनका उत्तर पाने का प्रयास करते रहे हैं। जिसके लिए अनेक सिद्धांत एवं विचार दिये गये है। ऐसे में अमेरिका के डेनियल गोलमेन की पुस्तक 'इमोशनल इंटेलिजेंस' 1995 में प्रकाशित हुई जो सबसे अधिक पुस्तक बिकने वाली थी। इस तरह भावनात्मक बुद्धि को व्यापक रूप से जाना जाने लगा डेनियल गोलमेन ने कई समान प्रकाशनों का अनुसरण किया। जो इस शब्द के उपयोग को मजबूत करते गये।

गोलमेन ने बुद्धि की तीव्रता के स्थान पर भावना की तीव्रता को महत्व देकर सनसनी पैदा कर दी है। अपने प्रयोग और आँकड़ों से उन्होंने प्रमाणित किया है कि जीवन में बुद्धि से अधिक भावना की तीव्रता का महत्व है, क्योंकि जीवन से जटिल परिस्थिति को मापने में भावना की तीव्रता ही कारगर होती है, बुद्धि की नहीं। 19वीं सदी के अंत में ही दार्शनिक जॉनडेवी ने भावना और शिक्षा के महत्व की ओर ध्यान आकृष्ट किया था। पर तब उनको अनसुनी कर दी गई थी। गीता के गुणत्रय विभाग योग नामक चौदहवें अध्याय में मानव जीवन के गुण विकास के विषय पर प्रकाश डाला गया है। स्वतंत्रता आंदोलन के युग में भारत की सामयिक चेतना को जगा कर रजोगुण और सत्व गुण से सम्पन्न कर भावना संस्कार के इसी मार्ग को अपनाया गया था। भावना के संस्कार से ही मनुष्य हैवान से इंसान बनता है। हर दोपाया यदि इंसान होता तो संसार में इतनी अशांति क्यों होती ? मनुष्य वस्तुतः भावना के वशीभूत होकर ही सुकर्म और दुष्कर्म करता है।

भावनात्मक बुद्धि का विकास (इतिहास)

पहले युग में ऋग्वेद/ दूसरे युग में योग वाशिष्ठ, तीसरे द्वापर में गीता और कलयुग में विवेक चूड़ामणी में "मन" और "बुद्धिमत्ता" के संदर्भ है। यह साहित्य के माध्यम से प्राप्त किया कि इन सभी कालों युगों में सफलता प्राप्त करते गये मार्ग को स्वयं प्रभावित करने वाले व्यवहार के माध्यम से किया गया है और दूसरा जो स्वयं के समान है सार्थकता का और "रथ" प्रबंधन भावनात्मक बुद्धिमत्ता से भी संबंधित है। उदाहरणतः - जब अर्जुन जैसा योद्धा अपनी भावना को नियंत्रित न कर सके युद्ध में हथियार डालने को तत्पर हो गये थे। तब भगवान श्रीकृष्ण ने भगवान कृष्ण के विराट रूप के दर्शन कर उनकी भावनात्मक बुद्धि को मजबूती प्रदान कि गई थी जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने उस युद्ध में विजय प्राप्त की थी।

- इमोशनल स्ट्रैन्थ को पहली बार 1950 के दशक में अब्राहम मास्लो ने पेश किया था। शब्द 'इमोशनल इंटेलिजेंस' पहली बार माइकलबेलडोक के 1964 के एक पेपर में दिखाई दिया और 1966 में भी ल्यूनर के पेपर में इमोशनल इंटेलिजेंस एंड इमेन्सीपेशन शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जो साइकोथेराप्युटिक जर्नल प्रेक्टिस में छपा था। (बाल मनोविज्ञान और बाल मनोचिकित्सक में)
- 1983 में हावर्ड गार्डनर के फ्रेमस ऑफ माइंड द थ्योरी ऑफ "मल्टीपल इंटेलिजेंस" ने इस विचार को प्रस्तुत किया कि पारंपरिक प्रकार की बुद्धि जैसे की एक संज्ञानात्मक क्षमता को पूरी तरह से समझाने में विफल है। उन्होंने जो दोनों विचार प्रस्तुत किया वे अधिक प्रतिभाओं जो दोनों शामिल पारस्परिक सूचिमता और इरादे, मंशा, और अन्य लोगों की इच्छाओं को समझने के लिए क्षमता Interpersonal सूचिमता (अपने आपको समझने के लिए क्षमता), एक की भावनाओं भय और मंशा की सराहना करने के लिए।
- IQ., शब्द का पहला प्रकाशित प्रयोग कीथ बेस्ली का 1987 में ब्रिटिश मेन्सा पत्रिका में लेख है।
- 1998 के अंत में "व्हाट मेकस अ लीडर" - शीर्षक से एक हावर्ड बिजनेस रिव्यु लेख ने जॉनसन एण्ड जॉनसन कि उपभोक्ता कंपनियों के वरिष्ठ प्रबंधन का ध्यान आकर्षित किया। इस लेख में नेतृत्व की सफलता में भावनात्मक सूचिमता EI के महत्व पर बात की और कई अध्ययनों का हवाला

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

दिया जो दर्शाता है कि EI अक्सर महान नेताओं और औसत नेताओं के बीच विशिष्ट कारक है।

- 1989 में, स्टेनली ग्रीन स्पैन ने EI का वर्णन करने के लिए एक मॉडल सामने वाला [illegible] प्रकाशित किया।

हालांकि यह शब्द गोलमैन की पुस्तक ''इमोशनल इंटेलिजेंस''-व्हाट कैन मैटर मैन आई क्यू (1995) के प्रकाशित होने के बाद [illegible] जाने लगा और यह पुस्तक सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक थी।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लाभ/महत्व:-

- भावनात्मक बुद्धि (EI) एक अवधारणा जो लोकप्रिय हुई डेनियल गोलमैन अपनी खुद की भावनाओं और दूसरों की पहचान करने, समझने और विनियमित करने की क्षमता है। कई शोध है जिन्होंने अपने लाभ दिखाये हैं और इसका मतलब है कि [illegible] कार्य स्थल के साथ-साथ शैक्षिक या नैदानिक सेटिंग में भी लागू किया गया है।
- आत्म जागरुकता और निर्णय लेने में सुधार करता है- आत्म ज्ञान यह आत्म सम्मान पर और विभिन्न [illegible] सकारात्मक प्रभाव डालता है।
- कार्य प्रदर्शन में सुधार काम के लिए लागु भावनात्मक बुद्धिमान विभिन्न पहलुओं में बेहतर [illegible] है।
- तनाओं से बचाएँ और बचे- सही भवनात्मक प्रबंधन तनाओं को बचाने के लिए उतना महत्वपूर्ण है जितना [illegible] नहीं।
- पारस्परिक संबंधों में सुधार करता है -स्वस्थ पारस्परिक संबंधों को बनाये रखने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण है।
- व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तिगत विकास हाथ से जाने जाते है, [illegible] भावनाओं के प्रबंधन के बिना नही समझा जा सकता है।
- प्रभाव और नेतृत्व के लिए क्षमता प्रदान करता है - भावनात्मक बुद्धिमत्ता यह नेताओं की एक आवश्यक [illegible] आत्म नियंत्रण या दूसरों को समझने का तरीका जानना नेतृत्व कौशल का एक अच्छा उदाहरण है।
- यह मनोवैज्ञानिक के कल्याण को बढ़ावा देता है - हाथ के वर्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता [illegible] मनोवैज्ञानिक कल्याण के लिए लाते है।
- चिंता को कम करें और अवसाद को दूर करने में मदद करें भावनात्मक बुद्धिमत्ता [illegible] मदद मिल सकती है।
- प्रेरणा बढ़ाए और लक्ष्य हासिल करने में मदद करें - कई अध्ययनों से पता चला है की भावनात्मक बुद्धि [illegible] बात आती है जो यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- बेहतर सोने में मदद करें - भलाई और भावनात्मक संतुलन में सुधार [illegible] लिए चिन्ता का कारण बनता है। अतः हमारी भावनाओं को सही तरीके से समझने में मदद करता है।

निष्कर्ष:-

पश्चिमी और भारतीय मॉडल कि तुलना, इस प्रकार प्रकट करती है कि भारतीयों में EI 'स्वयं' के [illegible] बाहरी दुनिया के साथ स्वयं को संरेखित करता है आत्मा और बाहरी आत्मा के साथ इसका संतुलन [illegible] के बजाय प्रकृति में पारलौकिक/ भौतिकवादी चेतना की जागरूकता इस हद तक की एक व्यक्ति [illegible] को पूरा परिवार की तरह मानता हैं ''वासुदेव कुटुम्बकम'' - यह सहिष्णुता और विविधता में एकता [illegible] करता है।

भारत एक बहुजातिय और बहुभाषीय देश होने के साथ ही भावनात्मक बुद्धि अधिक गहराई से अंतर्निहित है।

संदर्भग्रन्थ

1. पत्रिका का शिक्षा : रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय
   आई.एस.एस.एन : 0972-7175
   भावनात्मक खुफिया : इसके विकास का एक अध्ययन सविधान।
   सुश्री नुपूर सुरती
2. जोसेफ सियारौचि जे.सी. (2006) भावनात्मक बुद्धि कि जिंदगी में IGENCE में [illegible]
   न्यूयार्क: मनोविज्ञान प्रेस
3. भावनात्मक बुद्धि : Y.in.translate.google
4. मेयर पी.एच.(1997) भावनात्मक विकास और भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शिक्षात्मक अध्याय।
5. https://h.salnet.anastasie.org
6. पी.डी.एवं भाव : researchgat.net
7. भावनात्मक बुद्धि : hmood.in
8. https://him.wikipedia.org.wiki
   सिद्धेश्वर प्रसाद भारतीय साहित्य विकिपिडिया
9. Emotional Intelligence Organization google.

मराठा कालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सन 1741 से 1818)

डॉ० डिश्वर नाथ खुटे

शोध निर्देशक, इतिहास अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

ममता ध्रुव

शोधार्थी, इतिहास अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश-

छत्तीसगढ़ में अरण्यक तथा अर्ध-नागरिक सभ्यताएं एक साथ पाई जाती थी। अरण्यक सभ्यता के रूप में हमें आदिवासियों की अनोखी रीति-नीति दिखलाई पड़ती है। अर्ध-नागरिक सभ्यता के उन लोगों में दिखाई पड़ती है, जो यहां मैदानी क्षेत्र में दूसरे प्रदेश से आकर रहने लगे है। परिणामतः यहां की सभ्यता को मिश्रित सभ्यता कहा जा सकता है। अपनी इन्हीं भौगोलिक विशेषताओं के कारण छत्तीसगढ़ अपने में अनेक संस्कृतियों का पोषण कर उन्हें बनाये रखने में सफल रहा है।

सामान्यतः आधुनिकतम सभ्यता इस क्षेत्र से प्रायः दूर ही रही है। कारण यह है कि इस भौगोलिक रचना ने इसके सामाजिक जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है। यहां के लोग प्रकृति पर ही निर्भर रहते हैं और प्रकृति की अनुकम्पा प्राप्त करने के लिये अनेक देवी-देवताओं की आराधना-अर्चना करते रहे हैं। समय-समय पर जो अन्य लोग (इस क्षेत्र के बाहर के लोग) यहां आये उनका प्रभाव भी यहां के निवासियों के जीवन पर पड़ा है।

लोग स्वभाव से सरल, उदार, कृतज्ञ और सहिष्णु होते थे। शिक्षा की कमी एवं शासकों की उपेक्षा के कारण यहां के जीवन में विशेष विकास या सुधार सैकड़ों वर्षों तक नहीं हो सका था और बहुत कुछ सीमा में यह पिछड़ापन आज भी अपने पूर्ण रूप से विद्यमान है। छत्तीसगढ़ में यद्यपि वर्ण-व्यवस्था प्रचलित थी तथापि उनमें कट्टरता कम थी। ब्राह्मण लोग पूजनीय माने जाते थे। क्षत्रिय और वैश्य भी समान आदर के अधिकारी थे।

छुआछूत का भी अधिक प्रचार नहीं था। इसके विपरीत समय-समय पर जादू-टोने आदि के व्यभिचार-कृत्यों में शूद्र-वर्ग को जो इसमें निष्णात माने जाते बहुत आदर प्राप्त होता था। बैगा, गुनिया आदि लोगों का समाज में सम्मान होता था। आदिवासी क्षेत्रों 565 में तो इनका महत्त्वपूर्ण स्थान था। आदिवासी सभ्यता का प्रभाव मैदानी सभ्यता पर भी पड़ा। इसलिए तन्त्र-मन्त्र सम्बन्धी कृत्यों के लिये सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ एक ही प्रकार की मान्यता वाला क्षेत्र बन गया।

अन्ध-विश्वास का यहां महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। कभी-कभी तो यह भावना पराकाष्ठा को पहुंच जाती थी और वशीकरण, उच्चाटन आदि विद्याओं में निपुण व्यक्तियों को ग्राम-बहिष्कार शारीरिक यातना और कभी-कभी प्राण-दण्ड की सजा का भी भाजन होना पड़ता था। वर्तमानकाल की ही तरह आलोच्य काल में भी छत्तीसगढ़ के गाँवों के लोग प्रायः कृषि कार्य करते थे। इस कार्य में सभी वर्गों के लोगों में सहयोग एवं सहकारिता की भावना होती थी।

विशिष्ट धंधा करने वाले लोगों को समाज में विशेष सम्मान प्राप्त होता था। लुहार, नाई, धोबी, कुम्हार और कहार आदि को अवसर के अनुकूल अभीष्ट सम्मान मिलता था। यहां के समाज में यथा सम्भव समानता का व्यवहार किया जाता था। अंग्रेजों के आगमन के पूर्व छत्तीसगढ़ की सामाजिक दशा का उल्लेख अंग्रेजी अभिलेखों में भी मिलता है।

शब्द कुंजी-वेशभूषा, रीति रिवाज, भाषा, प्रकृतिवाद, धर्म, संस्कार, जनजाति, सहकारिता, सभ्यता।

उद्देश्य-

इस अध्ययन का लगातार बदलती राजनीति के दौर में मराठा कालीन शासन व्यवस्था का छत्तीसगढ़ की सामाजिक [illegible] वाले प्रभाव का अध्ययन करना। पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के आगमन से छत्तीसगढ़ के सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे में आमूल-चूल [illegible] शोधार्थी की इस विषय पर अध्ययन करने के पीछे निहित उद्देश्य उस काल के लोगों के आचार, विचार, पहनावा, भाषा, व्यवहार व [illegible]र में पड़ने [illegible] प्रभाव का अध्ययन करना है।

कृषि के अन्तर्गत नवीन तकनीकों का उपयोग एवं कृषकों की आय पर उसका प्रभाव: मेरठ जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन–ओम प्रकाश 3488
समावेशन की राह में बाधा- 'अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की मनोवृत्ति के सन्दर्भ में'–डॉ० मोनिका सरोज; सुधीर कुमार रंजन 3494
सोशल मीडिया का आज की युवा पीढ़ी पर प्रभाव–सविता देवी; डॉ० सुमन 3498
भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधान मंत्री आवास योजना: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–शक्ति शंकर कुमार 3500
राष्ट्रीय आन्दोलन और जवाहर लाल नेहरू - एक संक्षेपण–डॉ० श्रुति कुमारी 3504
भारत में गाँवों के विकास के लिए कृषि की उन्नति वर्तमान आवश्यकता–ओंकार यादव 3507
हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान–डॉ० कनुभाई बिछिया भाई विनामा; ओमप्रकाश 3510
'गुड़िया भीतर गुड़िया': स्त्री अस्मिता की एक खोज–पूनम जायसवाल 3514
बस्तर में आदिवासियों का परलकोट विद्रोह: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन–डॉ० ईश्वर नाथ खुटे; ईश्वर लाल 3517
मराठा कालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सन 1741 से 1818)–डॉ० ईश्वर नाथ खुटे; ममता ध्रुव 3525

आधुनिक भारत में उच्च शिक्षा के विकास का इतिहास : एक अध्ययन

ममता ध्रुव,
शोधार्थी
पं. रविशंकर विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़

सारांश

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। यह शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में और उसमें स्वस्थ दृष्टिकोण एवं अच्छे संस्कार सम्मिलित करने में सहायक होता है। भारत में शिक्षा का उद्गम वैदिक युग से ही है। प्राचीन साहित्य जैसे वेदों ब्राह्मण और उपनिषदों आदि का ज्ञान हमें प्राचीन ऋषियों के माध्यम से प्राप्त होता है। संसार का सबसे प्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला में स्थापित किया गया था।

नालंदा विश्वविद्यालय चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भारतीय शिक्षा प्राणाली का केंद्र था, जहां प्राचीन संस्कृति का संरक्षण किया गया और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दिया गया। वहां सामाजिक उत्तरदायित्व और सामाजिक मूल्यों की भावना का भी संचार किया। भारत में उच्च शिक्षा का इतिहास काफी पुराना है। इसके मूल में 19 वीं शताब्दी है, जब वायसराय लॉर्ड मेकाले ने अपनी सिफारिशें रखी थी। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के उपरांत सन् 1857 में कोलकाता मुंबई तथा मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना तत्कालीन लंदन विश्वविद्यालय के नमूने पर हुई थी। भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के पश्चात आरंभ हुआ। इसमें ब्रिटिश कालीन अधिनियम रिपोर्ट एवं आयोग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

उच्च शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक विकास को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। चार्टर अधिनियम 1813 द्वारा ब्रिटिश भारत में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार प्रारंभ हुआ एवं एलीफिंस्टन रिपोर्ट 1823 ई. में जिला परीक्षा अधिकारी की नियुक्ति किया गया।

मैकाले रिपोर्ट 1835 में ब्रिटिश सरकार के विधि सदस्य मैकाले ने धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित पश्चिम देशों की शिक्षा पद्धति के सामान भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विकास पर जोर दिया। हंटर आयोग 1882 ई. में शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1854 के बाद की गई प्रगति की समीक्षा, 1902 ई. के विश्वविद्यालय आयोग व्दारा लॉर्ड कर्जन ने विश्वविद्यालयों की स्थिति जांचने एवं सुधार लाने में महत्वपूर्ण प्रयास किया। उच्च शिक्षा सामाजिक आर्थिक राजनीतिक न्याय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–21 लागू की गई है, जिसके तहत महत्वपूर्ण प्रावधान लागू किए गए हैं।

शब्द कूंजी

शिक्षा, आत्मबोध, गुरुकुल, प्रौद्योगिकी, बोर्ड, उर्दू, दूरस्थ, तकनीकी शिक्षा, अनुसंधान, ढांचा।

भूमिका

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास रहा है। भारतीय समाज के विकास और उस में होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। प्राचीन काल में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था, वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट थी। प्राचीन काल में शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी।

प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुलों में दिया जाता था, जहां मोक्ष और आत्मबोध पर आधारित शिक्षा दिया जाता था। भारत में आधुनिक शिक्षा के नींव यूरोपीय लोगों ने रखी है। उन्होंने कई विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों की स्थापना किए। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को लॉर्ड मैकाले की देन माना जाता है। इस शिक्षा

व्यवस्था में स्वतंत्रता से पूर्व और अब तक इसमें अनेक सुधार किए जा चुके हैं।

भारत में शिक्षा के स्तर को 3 वर्गों में बांटा गया है, जिसमें से तृतीय स्तर उच्च शिक्षा है। उच्च शिक्षा का अर्थ सामान्य रूप से सब को दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, वृहद तथा सूक्ष्म शिक्षा के ऊपर दी जाने वाली शिक्षा से है, जो विश्वविद्यालय व व्यवसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालय, प्रौद्योगिकी संस्थानों एवं अन्य कालेजों में दिया जाता है। यह प्राय: ऐच्छिक होता है जो किसी राष्ट्र के विकास और प्रगति की रीढ़ होता है। वर्तमान में उच्च शिक्षा संस्थान 1000 से अधिक हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से अपेक्षा है कि यह शिक्षा संस्थानों की समस्या के समाधान पर कार्य करने के लिए प्रेरित कर भारत में उच्च शिक्षा के परिदृश्य में परिवर्तन कर देगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुधार का एक परिणाम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 है।

यह अच्छी नीति है, क्योंकि यह शिक्षा प्राणी को समग्र लचीला बहुविषयक और 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने पर लक्षित है। नीति को लागू करने की सोच आदर्श प्रतीत होती है लेकिन इसकी सफलता उसके कुशल कार्यान्वयन पर निर्भर करता है। शुरुआत कोलकाता में 1817 ई. में हिंदू कॉलेज की स्थापना के साथ शुरू हुई।

वायसराय लार्ड मेकाले की अनुशंसा के आधार पर 1857 ई. में लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर कोलकाता मुंबई तथा मद्रास विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। वर्ष 1918 में हैदराबाद में निजाम ने उस्मानिया विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिसमें उच्च शिक्षा का माध्यम उर्दू को बनाया गया। वर्ष 1913 से 1921 के मध्य 6 आवासीय एवं शिक्षण विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

1920 में सर सैयद अहमद खां के द्वारा मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। उसके बाद बीसवीं शताब्दी में सन 1925 में हंटर यूनिवर्सिटी बोर्ड की स्थापना की गई थी जिसका नाम बाद में भारतीय विश्वविद्यालय संघ रख दिया गया। इस संस्थान के अंतर्गत सभी विश्वविद्यालय के 20 सैनिक संस्कृति और संबंधित क्षेत्र के बारे में सूचना का आदान प्रदान किया जाने लगा था।

स्वतंत्रता उपरांत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं यह 21वीं शताब्दी की पहला शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षी लक्ष्य जिनमें एसडीजी 4 शामिल हैं।

शिक्षा से ना केवल साक्षात्कार बल्कि संख्या ज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ–साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना बल्कि नैतिक सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है। वैश्विक महत्व की इस समृद्ध विरासत को आने वाली प्रयोग के लिए सहेज कर संरक्षित रखने की जरूरत है बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था द्वारा उस पर शोध कार्य किया जा रहा है, उसे और समृद्ध किया जा रहा है।

शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे बुनियादी बदलाव के केंद्र में अवश्य ही शिक्षक का योगदान देखने को मिल रहा है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई जिसे सभी के परामर्श से तैयार किया गया है। इसे लाने के साथ–साथ देश में शिक्षा पर व्यापक चर्चा आरंभ की गई। नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा महत्वपूर्ण कार्य भी किया गया।

शोध प्रविधि

किसी भी राष्ट्र का सर्वांगिण विकास वहां की सुव्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। आधुनिक शिक्षा विशय के अंतर्गत किसी भी महत्वपूर्ण शोध बिंदु पर शोध कार्य का प्रत्यक्ष संबंध समाज एवं शिक्षा से होने के कारण

महत्वपूर्ण होता है। शोध कार्य के प्रत्येक चरण को सटीक और प्रमाणित बनाने के लिए शोध की एक विशिष्ट प्रविधि का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुत विषय आधुनिक शिक्षा का शोध विषय है जिसके लिए ऐतिहासिक एवं आधुनिक शोध प्रविधि को अपनाया गया।

प्रभावी अध्ययन के लिए शोध पत्र से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर के स्रोत विभिन्न रिपोर्ट्स "प्योर्स नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन आगरा","ए. पी. एच. पब्लिशंन कारपोरेशन नई दिल्ली", "नई शिक्षा नीति 2020 शासकीय रिपोर्ट्स गजेटियर, सुंदरलाल शर्मा ग्रंथालय रायपुर, महानदी भवन शासकीय ग्रंथालय रायपुर, आधुनिक शिक्षा नीति से संबंधित समय–समय पर प्रकाशित समाचार पत्र, पत्रिका, प्रकाशित दस्तावेज आदि को अध्ययन में शामिल किया गया है तथा इसे अपने शोध पत्र में संकलित किया गया है।

भारत में उच्च शिक्षा की संरचना

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के खंड 3 के तहत मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्थापना की गई है। मंत्रालय ने कार्यों को सुविधाजनक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग में उच्चतर शिक्षा विभाग की स्थापना की है। शिक्षा से जुड़े मामलों में शिक्षण संस्थान उच्च शिक्षा विभाग हैं। उच्च शिक्षा विभाग के घटक विश्वविद्यालय तकनीकी शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, भाषा शिक्षा है।

1. विश्वविद्यालय आयोग 1902

लॉर्ड कर्जन ने स्थापित विश्वविद्यालयों की स्थिति की जांच करने उन पर विचार करने तथा कार्य में सुधार करने आदि के लिए 27 जनवरी 1902 में टामस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति की। इस आयोग की सिफारिश के आधार पर भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम 1904 बनाया गया।

2. राष्ट्रीय शिक्षा परिषद 1905

वर्ष 1950 में बंगाल विभाजन के बाद स्वदेशी आंदोलन के दौरान राष्ट्रवादियों द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की गई। इसके साथ ही कई अन्य संस्थाओं की स्थापना हुई जिसमें एक स्वतंत्रता के पश्चात जाधवपुर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। श्री रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांतिनिकेतन विद्यापीठ पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में स्थित है। यह एक शिक्षा केंद्र है जिसका मुख्य कार्य राष्ट्रीय भाषाओं के विकास के साथ भारतीय परंपराओं एवं संस्कृति का प्रसार करना था ।

3. कोलकाता विश्वविद्यालय आयोग 1917

वर्ष 1917 में सरकार ने माइकल सैडलर के नेतृत्व में कोलकाता विश्वविद्यालय की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक आयोग का गठन किया। इस आयोग ने निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की:

- इंटरमीडिएट कक्षाए विश्वविद्यालय से पृथक की जाए।
- इंटरमीडिएट परीक्षाओं के संचालन के लिए माध्यमिक बोर्ड का गठन किया जाए।
- स्नातक स्तर पर 3 वर्षीय पाठ्यक्रम हो।
- प्रत्येक विश्वविद्यालय मे कुलपति नियुक्त किया जाए तथा एक अंतर विश्वविद्यालय स्थापित हो।
- महिला शिक्षा पर बल दिया जाए तथा औद्योगिक एवं प्रशिक्षण से जुड़ी समस्याएं विश्वविद्यालय द्वारा सुविधा की जाएगी।

वर्धा शिक्षा योजना 1937

गांधी जी द्वारा हरिजन में शिक्षा पर लिखे लेख तथा अक्टूबर 1937 में वर्धा मे आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी द्वारा शिक्षा पर प्रस्तुति योजना के आधार पर मूलभूत शिक्षा की वर्धा योजना प्रस्तुत की गई इस योजना की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित है:

- 7 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था हो।

- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए जिससे कि विद्यार्थी स्वयं भी बन सके।
- छात्र को उसकी रुचि के अनुरूप व्यवसायिक शिक्षा मिले।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में उच्च शिक्षा और शोध का उद्भव

स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा के विकास एवं सुधार के लिए सरकार ने कई प्रकार की समितियों एवं आयोग का गठन किया तथा समिति एवं आयोग की सिफारिश ने भारत में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

1. राधाकृष्णन आयोग वर्ष 1948

विश्वविद्यालय ने शिक्षा पर रिपोर्ट देने के लिए नवंबर 1948 में सरकार ने डॉक्टर राधाकृष्णन की अध्यक्षता में एक आयोग की नियुक्ति की गई। आयोग ने अगस्त 1949 में अपनी सिफारिश प्रस्तुत की ।

- विश्व विद्यालय पूर्व 12 वर्ष का अध्ययन।
- विश्व विद्यालय में परीक्षा दिवस के अतिरिक्त कम से कम 180 दिन पढाई होनी चाहिए जो 11 सप्ताहों के 3 सत्रों में विभाजित होनी चाहिए।
- उच्च शिक्षा के तीन मुख्य उद्देश्य होनी चाहिए सामान्य, सरकारी शिक्षण और व्यवसायिक शिक्षा।
- प्रशासनिक सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय की स्नातक की उपाधि आवश्यक नहीं होनी चाहिए।
- विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों की वेतन में वृद्धि की जाए।

वर्ष 1952 में सरकार ने निर्णय लिया कि केंद्रीय और उच्च शिक्षा संस्थानों को दिए जाने वाले वित्तीय सहयोग के मामले को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधीन लाया जाएगा। इस तरह 28 दिसंबर 1953 ई. को तत्कालीन शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने औपचारिक तौर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नींव रखी थी। इसके बाद 1956 में यूजीसी को संसद में पारित कर एक विशेष विधि के तहत सरकार के अधीन लाया गया और औपचारिक तौर पर इसे स्थापित माना गया।

- विश्वविद्यालय शिक्षा का समन्वय और उस को बढ़ावा देना।
- विश्वविद्यालय में शिक्षण परीक्षा और अनुसंधान के मानकों का निर्धारण और अनुरक्षण।
- शिक्षा के नियमों के न्यूनतम स्तर का निर्धारण।
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हो रही प्रगति और घटनाओं का अवलोकन।
- विश्वविद्यालय और कॉलेजों को अनुदान वितरण।
- उच्च शिक्षण संस्थानों संघ सरकार और राज्य सरकारों के बीच में एक कड़ी का कार्य करना।
- विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार के लिए केंद्र और राज्य सरकार को परामर्श देना।

यूजीसी समय–समय पर विश्वविद्यालयों में उपकुलपति प्राध्यापक और अन्य मुख्य अधिकारियों के चयन के लिए योग्यता निर्धारण का कार्य भी करता है। इसके अलावा विश्वविद्यालय में नियुक्त होने वाले विशेष अधिकारियों, प्राध्यापकों आदि के वेतन निर्धारण में दिशा–निर्देश जारी करता है।

यूजीसी ने विभिन्न शिक्षण कार्यक्रमों का मॉडल पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम भी अपनी वेबसाइट के माध्यम से विश्वविद्यालयों द्वारा अनुसरण हेतु उपलब्ध कराया गया है। इसी विश्वविद्यालय में नए भर्ती हुए प्राध्यापकों के लिए फैकल्टी डेवलपमेंट या रिफ्रेशर कोर्स भी आयोजित करवाता है। केंद्र सरकार यूजीसी को अनुदान देती है और देश में केंद्रीय विश्वविद्यालयों एवं राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं की स्थापना करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधान

स्कूली शिक्षा संबंधी प्रावधान

1. नई शिक्षा नीति में 534 डिजाइन वाली शैक्षणिक संरचना का प्रस्ताव किया गया है जो 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चों को शामिल किया गया।
2. 5 वर्ष की फाउंडेशन स्टेज 3 साल का प्री प्राइमरी स्कूल और ग्रेड 1, 2
3. तीन वर्ष का प्रीपेरेटरी स्टेज।
4. तीन वर्ष का मध्य या उच्च माध्यमिक चरण ग्रेड 6 ,7, 8वीं।
5. वर्ष का उच्च माध्यमिक चरण ग्रेड 9 ,10, 11 ,12 वीं।

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना का प्रस्ताव किया गया। इसके द्वारा 2028 तक कक्षा उच्चतर के बच्चों के लिए आधारभूत कौशल सुनिश्चित किया जाएगा।

भाषागत विविधता का संरक्षण

- नई शिक्षा नीति 2020 में कक्षा 5 तक की शिक्षा में मातृभाषा स्थानीय क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा आठ और आगे की शिक्षा के लिए प्रमाणिकता देने का सुझाव दिया गया है।
- स्कूली उच्च शिक्षा में छात्रों के लिए संस्कृत और अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध होगा, परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाध्यता नहीं होगी।

शारीरिक शिक्षा

विद्यालयों में सभी स्तर पर छात्रों को बागवानी नियमित रूप से खेलकूद, योग, नित्य मार्शल आर्ट को स्थानीय उपलब्धता के अनुसार प्रदान करने की कोशिश की जाएगी, ताकि बच्चे शारीरिक गतिविधि एवं व्यायाम में भाग ले सकें।

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन संबंधी सुधार

1. इस नीति में प्रस्तावित सुधारों के अनुसार कला और विज्ञान व्यवसाय तथा शैक्षणिक विषयों एवं पाठ्यक्रम व पाठ्येत्तर गतिविधियों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होगा।
2. कक्षा 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यवसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमें इंटर्नशिप की व्यवस्था भी की जाएगी।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जाएगी।
4. छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा 10 और कक्षा 12 की परीक्षाओं में बदलाव किया जाएगा। इसमें भविष्य में समस्या या बहुविकल्पी प्रश्न आदि जैसे सुधारों को शामिल किया जा सकता है।
5. छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारित निकाय के रूप में परख नामक एक नए राष्ट्रीय आंकलन केंद्र।
6. छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन तथा छात्रों को अपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग।

शिक्षण व्यवस्था से संबंधित सुधार

- शिक्षण की नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन तथा समय–समय पर किए गए कार्य प्रदर्शन आंकलन के आधार पर पदोन्नति।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 20–21 तक शिक्षक के लिए राष्ट्रीय व्यवसायिक मानक का विकास किया जाएगा।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के परामर्श के आधार पर अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का विकास किया जाएगा।
- वर्ष 2030 तक अध्यापन के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी .एड डिग्री का होना अनिवार्य किया जाएगा।

उच्च शिक्षा से संबंधित प्रावधान

- नई शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में सकल नामांकन अनुपात को 26.3 से बढ़ाकर 50 तक का करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही देश के उच्च शिक्षण संस्थाओं में 3.5 करोड़ नई चीजों को जोड़ा जाएगा।
- नई शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एक विजिट व्यवस्था को अपनाया गया है। इसके तहत 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुसार डिग्री या प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। 1 वर्ष के बाद प्रमाणपत्र, 2 वर्ष के बाद एडवांस डिप्लोमा 3 वर्ष के बाद स्नातक की डिग्री तथा 4 वर्षों के बाद शोध के साथ स्नातक।
- विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिए 11 एडमिट बैंक ऑफ क्रेडिट दिया जाएगा ताकि अलग–अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके।
- नई शिक्षा नीति के तहत एम. फिल. कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया।

विकलांग बच्चों हेतु प्रावधान

इस नई नीति में विकलांग बच्चों के लिए काम, विकलांगता प्रशिक्षण संसाधन केंद्र, आवास सहायक उपकरण उपयुक्त प्रयोग की आधारित उपकरण, शिक्षकों का पूर्ण समर्थन एवं प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा तक नियमित रूप से स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना आदि प्रक्रियाओं को सक्षम बनाया जाएगा।

डिजिटल शिक्षा से संबंधित प्रावधान

- एक स्वतंत्र निकाय के रूप में राष्ट्रीय शैक्षणिक प्रतियोगिता मंच का गठन किया जाएगा जिसके द्वारा शिक्षण मूल्यांकन योजना एवं प्रशासन में अभिवृद्धि हेतु विचारों का आदान प्रदान किया जा सकेगी।
- डिजिटल शिक्षा संस्थानों को विकसित करने के लिए अलग प्रतियोगी की इकाई का विकास किया जाएगा जो डिजिटल बुनियादी ढांचे सामग्री और क्षमता निर्माण हेतु समन्वयक का कार्य करेगी।
- पारंपरिक ज्ञान संबंधी प्रावधान।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली है जिसमें जनजाति एवं स्वदेशी ज्ञान शामिल होंगे पाठ्यक्रम में सटीक एवं वैज्ञानिक तरीके से शामिल किया जाएगा।
- आकांक्षी जिले जैसे क्षेत्र जहां बड़ी संख्या में आर्थिक, सामाजिक व जातिगत बाधाओं का सामना करने वाले छात्र पाए जाते हैं, उन्हें विशेष शैक्षणिक क्षेत्र के रूप में शामिल किया जाएगा।
- देश में क्षमता निर्माण हेतु केंद्र सभी लड़कियों और ट्रांसजेंडर छात्रों को समान गुणवत्ता प्रदान करने की दिशा

3. सार्थक योजना की रूपरेखा स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा तैयार की गई है।
4. देश के 75 वर्ष पूरे होने की खुशी में बनाए जा रहे अमृत महोत्सव के अंतर्गत इस योजना को जारी किया गया ।

निष्कर्ष

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 21वीं सदी के भारत की जन्म जरूरतों को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 20–20 को मंजूरी दी है अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समक्ष ले जाएगी। नई शिक्षा नीति 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चे को शिक्षा का अधिकार कानून 2019 के अंतर्गत रखा गया है।

34 वर्षों पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। इसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व प्राथमिक शिक्षा 36 वर्ष की आयु सीमा को सर्वभौमिक बनाया है। स्नातक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीन, डेटा विश्लेषण, जैव प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों के समावेशन से अत्याधुनिक क्षेत्रों में भी कुशल पेशेवर तैयार होंगे और युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी।

ऐसे क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए नेशनल एजुकेशन पॉलिसी लागू किया गया जिससे व्यवसायिक शिक्षा अध्यापक शिक्षा नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना करना, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना ,सीखने के लिए सर्वोत्तम वातावरण एवं छात्रों को सहयोग प्रदान करना, विदेशी छात्रों के लिए अंतरराष्ट्रीय छात्र कार्यालय की स्थापना करना, छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, स्कूल बैग का वजन तथा होमवर्क कम किया जाएगा। शिक्षा में प्री प्राइमरी भी शामिल किया गया।

संदर्भ सूची

1. ग्रोवल, जे .एस.,"वोकेशनल एनवायरमेंट एंड एजुकेशन", प्योर्स नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा।
2. राव, बी. के, "वोकेशनल एजुकेशन", ए. पी. एच. पब्लिशंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
3. ग्रोवर, यशपाल, "आधुनिक भारत का इतिहास",एस चन्द प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. मंत्रालय, मानव संसाधन एवं विकास, भारत सरकार, "नई शिक्षा नीति 2020", शासकीय रिपोर्ट्स, नई दिल्ली।

नई शिक्षा नीति और स्कूल शिक्षा

विवेक कुमार गौतम,
शोधार्थी
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वी शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य देश के शिक्षा में नवाचार के साथ संशोधन कर नवीन शिक्षा प्रणाली को लागू करना है। नई शिक्षा नीति के तहत सभी विद्यार्थियों के लिए चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना। यह शिक्षा नीति केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की संरचना करती है जो छात्रों को उच्च गुणवत्ता से युक्त शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हो। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा जी से जिसे 1992 में संशोधित किया गया था के अधूरे कार्य को इस नीति के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराने में पूर्णतः सक्षम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समिति का गठन 2016 में अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की प्रारम्भिक शिक्षा को उच्चतर श्रेणी में परिवर्तित कर नया आगाम देने में पूर्णतः सक्षम है। इसमें पठन–पाठन के साथ–साथ छात्रों के व्यवसायिक परीक्षण हेतु व्यापक टाँचा निहित है, जिसका एक मात्र लक्ष्य विद्यार्थियों व्यवसायिक शिक्षा प्रदान कर सुयोग्य कामयाब नागरिक बनाना है। छात्रों के सार्वभौमिक विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा और रोजगार व्यक्ति के विकास अहम कड़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों को प्रारंभिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में देने की कार्य योजना है, जिससे वे शीघ्र अधिगम कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यवसायिक शिक्षा पर ज्यादा बल देती है, विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षण द्वारा छात्रों को प्रशिक्षित करना इस शिक्षा नीति लक्ष्य है। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य 2040 तक पूर्ण रूप से भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, तकनीकी, गुरुकुल, राष्ट्र, भाषा, कौशल।

प्रस्तावना

मानव व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। समुचित शिक्षा ही मानव को पूर्ण बनने में अद्भुत सहयोग प्रदान करती है। यों कहें तो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का अहम रोल है। इन्हीं स्थितियों को ध्यान में रखते हुए 1986 में तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी ने नई शिक्षा नीति पर शिक्षाविदो का ध्यान केन्द्रित कर लागू किया था। पिछली शिक्षा नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा के मुद्दों तक पहुँचने का था। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति जिसे 1992 एन पीई 1986–92 में संशोधित किया गया था, के अधूरे काम को इस नीति के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है। 1986–92 की पिछली नीति के बाद से एक बड़ा कदम निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहा है जिसने सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध करवाया। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने पूर्व (पिछली) शिक्षा नीति में संशोधन कर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने हेतु 2016 में अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरी रंगन के नेतृत्व एक कमेटी का गठन किया।

प्रविधि

प्रभावी अध्ययन के लिए शोध पत्र से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर के स्रोत विभिन्न रिपोर्ट, सोर्स नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन आगरा ए.पी.ए. पब्लिकेशन कारपोरेशन नई दिल्ली, नई शिक्षा नीति 2020 की रिपोर्ट,

Principal (Education)

...रीयर सुंदरलाल शर्मा ग्रन्थागार रायपुर, महानदी भवन शासकीय संग्रहालय रायपुर आधुनिक शिक्षा नीति के ...समय–समय पर प्रकाशित समाचार पत्र पत्रिका एवं प्रकाशित दस्तावेज आदि को अध्ययन में शामिल किया ...है तथा इसे अपने शोध पत्र में संकलित किया गया है।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्र की प्रारंभिक शिक्षा को उच्च श्रेणी में परिवर्तित करना।

कक्षावार स्कूली शिक्षा का विभाजन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में, शिक्षा अधिकार कानून के दायरे में 6 से 14 वर्ष के आयु वाले बच्चों की बात की गई है। इसके पूर्व पिछली शिक्षा नीति में प्राथमिक कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक शिक्षा कानून लागू करने की बात की गई थी। डॉ. के. कस्तूरी रंगन ने नर्सरी से 12वीं कक्षा की पढ़ाई को 5+3+3+4 के फार्मूले के तहत चार चरणों में विभाजित किया है। जो इस प्रकार है

पहला चरण

3 से 8 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए। इसे फाउंडेशनल स्टेज कहा गया है, जिसमें 3 साल की प्री स्कूली शिक्षा को सम्मिलित किया गया है, जिसके अन्तर्गत छात्रों का भाषा कौशल और शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन होगा।

दूसरा चरण

तीसरी से 5वीं तक के बच्चों के लिए। इसे प्रिपेटरी स्टेज कहा गया है, जिसमें नई शिक्षा नीति के स्टेज में छात्रों का संख्यात्मक कौशल मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा तथा सभी बच्चों को क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान दिया जाएगा।

तीसरा चरण

छठी से 8वीं तक के बच्चों के लिए। इसे मीडिल स्टेज कहा गया है, इसमें छठवीं से आठवीं तक के बच्चों को शामिल किया गया है। जिसमें छठवीं कक्षा के बच्चों से कोडिंग सिखाना शुरू किया जाएगा। चौथा अंतिम चरण 9वीं से 12वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए इसे सेकेन्ड्री स्टेज कहा गया है। इस स्टेज में 9वीं से 12 वीं कक्षा तक के छात्रों को सम्मिलित किया गया है, इसके अन्तर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम को समाप्त करके बहुवैकल्पिक शैक्षिक पाठ्यक्रम को प्रारम्भ किया जाएगा, जिसमें छात्र किसी निर्धारित स्ट्रीम के भीतर नहीं बल्कि अपनी पसन्द के अनुसार अपने पाठ्य विषय का चयन कर सकता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत छात्रों को अपने विषयों को चयन करने की स्वतन्त्रता दी गई है। छात्र साइंस के विषयों के साथ कॉमर्स अथवा आर्ट्स के विषयों को चुन सकता है। इस प्रकार से एक स्ट्रीम के साथ बाकी स्ट्रीम की पढ़ाई स्वेच्छा अनुसार करने की पूरी छूट है।

पाठ्यक्रम व गृहकार्य

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठयक्रम में भी बदलाव किया गया है। कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक के छात्रों को प्रतिदिन 2 घण्टे का गृहकार्य दिया जाएगा। कक्षा छठवी से आठवी के विधार्थियों को 1 घण्टे का गृहकार्य दिया जाएगा तथा कक्षा 9वीं से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को 2 घण्टे का गृह कार्य होगा। यह भी निर्धारित किया गया है कि छात्रों का बैग उनके वजन से केवल 10 प्रतिशत होना चाहिए।

एल के जी एवं यू के जी में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को कोई होमवर्क नहीं दिया जाएगा, इसके अलावा पहली कक्षा एवं दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले विधार्थियों को भी गृह कार्य नहीं दिया जाएगा। विद्यार्थियों के पुस्तकों का चयन करते समय उनके किताबों का वजन का भी ध्यान रखा जाएगा। विद्यार्थियों के पढ़ने वाले स्कूलों में पीने के स्वच्छ पानी व बाथरूम तथा कक्षा में बैठने की व्यवस्था का समुचित ध्यान रखा जाएगा। नेशनल एजुकेशन पालिसी के तहत

...टेरियर सुंदरलाल शर्मा ग्रन्थालय रायपुर, महानदी भवन शासकीय ग्रंथालय रायपुर आधुनिक शिक्षा नीति से संबंधित समय–समय पर प्रकाशित समाचार पत्र पत्रिका एवं प्रकाशित दस्तावेज आदि को अध्ययन में शामिल किया गया है तथा इसे अपने शोध पत्र में संकलित किया गया है।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्र की प्रारंभिक शिक्षा को उच्च श्रेणी में परिवर्तित करना।

कक्षावार स्कूली शिक्षा का विभाजन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में, शिक्षा अधिकार कानून के दायरे में 6 से 14 वर्ष के आयु वाले बच्चों की बात की गई है। इसके पूर्व पिछली शिक्षा नीति में प्राथमिक कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक शिक्षा कानून लागू करने की बात की गई थी। डॉ. के. कस्तूरी रंगन ने नर्सरी से 12वीं कक्षा की पढ़ाई को 5+3+3+4 के फार्मूले के तहत चार चरणों में विभाजित किया है। जो इस प्रकार है

पहला चरण

3 से 8 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए। इसे फंडामेन्टल स्टेज कहा गया है, जिसमें 3 साल की प्री स्कूली शिक्षा को सम्मिलित किया गया है, जिसके अन्तर्गत छात्रों का भाषा कौशल और शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन होगा।

दूसरा चरण

तीसरी से 5वीं तक के बच्चों के लिए। इसे प्रिपेटरी स्टेज कहा गया है, जिसमें नई शिक्षा नीति के स्टेज में छात्रों का संख्यात्मक कौशल मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा तथा सभी बच्चों को क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान दिया जाएगा।

तीसरा चरण

छठी से 8वीं तक के बच्चों के लिए। इसे मीडिल स्टेज कहा गया है, इसमें छठवीं से आठवीं तक के बच्चों को शामिल किया गया है। जिसमें छठवीं कक्षा के बच्चों से कोडिंग सिखाना शुरू किया जाएगा। चौथा अंतिम चरण 9वीं से 12वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए इसे सेकेन्ड्री स्टेज कहा गया है। इस स्टेज में 9वीं से 12 वीं कक्षा तक के छात्रों को सम्मिलित किया गया है, इसके अन्तर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम को समाप्त करके बहुवैकल्पिक शैक्षिक पाठ्यक्रम को प्रारम्भ किया जाएगा, जिसमें छात्र किसी निर्धारित स्ट्रीम के भीतर नहीं बल्कि अपनी पसन्द के अनुसार अपने पाठ्य विषय का चयन कर सकता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत छात्रों को अपने विषयों को चयन करने की स्वतन्त्रता दी गई है। छात्र साइंस के विषयों के साथ कॉमर्स अथवा आर्ट्स के विषयों को चुन सकता है। इस प्रकार से एक स्ट्रीम के साथ बाकी स्ट्रीम की पढ़ाई स्वेच्छा अनुसार करने की पूरी छूट है।

पाठ्यक्रम व गृहकार्य

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम में भी बदलाव किया गया है। कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक के छात्रों को प्रतिदिन 2 घण्टे का गृहकार्य दिया जाएगा। कक्षा छठवीं से आठवीं के विधार्थियों को 1 घण्टे का गृहकार्य दिया जाएगा तथा कक्षा 9वीं से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को 2 घण्टे का गृह कार्य होगा। यह भी निर्धारित किया गया है कि छात्रों का बैग उनके वजन से केवल 10 प्रतिशत होना चाहिए।

एल के जी एवं यू के जी में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को कोई होमवर्क नहीं दिया जाएगा, इसके अलावा पहली कक्षा एवं दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले विधार्थियों को भी गृह कार्य नहीं दिया जाएगा। विद्यार्थियों के पुस्तकों का चयन करते समय उनके किताबों का वजन का भी ध्यान रखा जाएगा। विद्यार्थियों के पढ़ने वाले स्कूलों में पीने के स्वच्छ पानी व बाथरूम तथा कक्षा में बैठने की व्यवस्था का समुचित ध्यान रखा जाएगा। नेशनल एजुकेशन पालिसी के तहत

विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा तथा एकेडमिक स्ट्रीम आदि को बाँटा नहीं जाएगा। इस प्रकार से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों के शिक्षा स्तर को और छात्रों के शैक्षिक क्षमता को और अधिक विकसित करना है।

नीति आधार भूत सिद्धान्त

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसान का विकास करना है, जो तर्क संगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो। जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पना शक्ति एवं नैतिक मूल्यों का आधार हो। एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह होती है, जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत हो और उसकी समुचित देखभाल की जाय एवं एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद हो, जहाँ सभी छात्रों को सीखने की विविध प्रकार नवीन तकनीकी प्रणाली उपलब्ध हो। हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति पहचान और उनके विकास हेतु सफल बुनियादी प्रयास होगा। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना जिसमें सभी बच्चे कक्षा 3 तक साक्षरता, संख्याज्ञान जैसे सीखने मूलभूत कौशल को हासिल कर सकें। शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है, गुणवत्ता पूर्ण मनोवांछित शिक्षा तक पहुँचाना नई शिक्षा नीति का आधारभूत सिद्धान्त है।

एक समग्र और बहु–विषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं, बौद्धिक सौन्दर्यात्मक, सामाजिक शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक को एकीकृत तरीके से विकसित होगी। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास कला, मानविकी, भाषा विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व्यवसायिक तकनीकी शिक्षा आदि को आधारभूत संरचना प्रदान करेगी।

व्यवसायिक शिक्षा का नवीन आंकलन

व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की कम संख्या होने के पीछे एक प्रमुख कारण यह तथ्य है कि अतीत में व्यवसायिक परीक्षा मुख्य रूप से कक्षा 11–12 और कक्षा 8वीं और उससे ऊपर की कक्षा के ड्राप आउट्स पर केन्द्रित थी। इसके अलावा, व्यवसायिक विषयों के साथ 11वीं, 12वीं पास करने वाले विद्यार्थियों के पास अक्सर उच्चतर शिक्षा में अपने चुने गए व्यवसाय क्षेत्र में आगे बढ़ने का स्पष्ट मार्ग नहीं होता है। सामान्य उच्चतर शिक्षा के लिए प्रवेश मापदंड भी व्यवसायिक शिक्षा की योग्यता वाले विद्यार्थियों के लिए अवसरों की उपलब्धता को सुनिश्चित करने की दृष्टि से डिजाइन नहीं किए गए थे। फलस्वरूप वे अपने ही देश अन्य लोगों के सापेक्ष "मुख्य धारा की शिक्षा" या "एकेडमिक शिक्षा" से वंचित रह जा रहे थे। इसने व्यवसायिक शिक्षा के विषयों से सम्बन्धित विद्यार्थियों लिए शिक्षा में सीधे–सीधे आगे बढ़ने के रास्तों को पूरी तरह से बंद ही कर दिया और एक ऐसा मुद्दा है जिसे अभी वर्ष 2013 राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) की घोषणा के माध्यम सम्बोधित करने का प्रयास किया गया है। इस नीति का उद्देश्य व्यवसायिक शिक्षा से जुड़ी सामजिक पदानुक्रम की स्थिति को दूर करना है और उसके लिए आवश्यक होता समस्त शिक्षण संस्थान जैसे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय चरणबद्ध तरीके से व्यवसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्य धारा की शिक्षा से एकीकृत करे। इसकी शुरुआत आरंभिक वर्षों में व्यवसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान करने से हो जो कि फिर सुचारू रूप से उच्चतर माध्यमिक,माध्यमिक, कक्षाओं से होते हुए उच्चतर शिक्षा तक जाए। इस तरह से व्यवसायिक शिक्षा को एकीकृत करना यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े, कौशलों को सीखें और अन्य कई व्यवसायों से इस प्रकार परिचित हो। ऐसा करने के परिणामस्वरूप वह श्रम की महत्ता और भारतीय कलाओं और कारीगरी सहित अन्य विभिन्न व्यवसायों के महत्व से परिचित होगा।

वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य है। अगले दशक में चरणबद्ध तरीके से सभी माध्यमिक स्कूलों के शैक्षणिक विषयों में व्यवसायिक शिक्षा को एकीकृत किया जाएगा। इसके लिए माध्यमिक विद्यालय, आई टी आई, पोलिटेक्निक और स्थानीय उद्योगों को स्थापित किया जाएगा ।

इस प्रक्रिया को प्रारम्भ करने वाले संस्थानों के लिए आवश्यक है कि वे नवाचार के माध्यम से ऐसे मॉडल और प्रक्रियाओं की खोज करें जो कि सफल हो और फिर उन्हें एनसीईआरटी द्वारा स्थापित तंत्र के माध्यम से अन्य संस्थानों के साथ साझा करें, ताकि व्यावसायिक शिक्षा की पहुँच को विस्तार देने में सहायता मिल सके। व्यावसायिक शिक्षा और अप्रेंटिसशिप प्रदान करने वाले विभिन्न मॉडलों को उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा भी प्रयोग में लाया जाएगा। उद्योगों के साथ साझेदारी के तहत उच्चतर शिक्षा संस्थानों में इनक्यूबेशन केन्द्र स्थापित किए जाएंगे। राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क को प्रत्येक विषय व्यवसाय/रोजगार के लिए अधिक विस्तारपूर्वक निर्मित किया जाएगा। यह फ्रेमवर्क पूर्ववर्ती शिक्षा की आवश्यकता के लिए आधार प्रदान करेगा। इस माध्यम से ड्रॉप आउट हो चुके बच्चों के व्यावहारिक अनुभव को फ्रेमवर्क के प्रासंगिक स्तर के साथ जोड़कर उन्हें पुनः औपचारिक प्रणाली में जोड़ा जाएगा। क्रेडिट आधारित यह फ्रेमवर्क, छात्रों को सामान्य से व्यावसायिक शिक्षा तक जाने को सुगम बनाएगा।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक सुदृढ़ नवीन नवाचार से युक्त शिक्षा नीति है जिसमें छात्रों को विद्यालयी शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था करने की योजना है। पिछली शिक्षा प्रणाली जो 1986 में लागू की गयी थी उसमें केवल शैक्षिणिक व्यवस्था का प्रावधान था। हॉलाकि 1992 में कुछ संशोधन किया गया था परन्तु उसमें बहुत सी खामिया शेष रह गयी थी, जिसको नयी शिक्षा नीति 2020 के तहत दूर करने सफल प्रयास किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत को विकसित, सुशिक्षित रोजगार परक, लक्ष्य प्रेरित राष्ट्र बनाने में सुदृढ़ कड़ी का काम करेगी। छात्रों को गुणवत्ता पूर्ण, तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरी रंगन ने शैक्षिक, व्यावसायिक, अन्य विकासात्मक दक्षताओं को प्रभावी ढंग से विद्यालयी शिक्षा में शामिल कर छात्र हितग्राही किया है।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2000।
2. केस फॉर टीचर्स इन न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020।
3. ग्रोवर जी. एस., वेकेशन एनवायरमेंट एंड एजुकेशन नेशनल चॉइस, साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा

———□———

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और अध्यापक शिक्षा

मीना पाण्डेय,
सहायक प्राध्यापक
संदीपनी एकेडमी, अछोटी, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़

सार

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, जो भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति शिक्षा पर पिछली राष्ट्रीय नीति, 1986 की जगह लेती है। नीति ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में प्रारंभिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक परीक्षण के लिए एक व्यापक ढांचा है। नीति का लक्ष्य 2040 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है।

एन. ई. पी. 2020 में शिक्षको की शक्ति को स्वीकार करते हुये उसमे प्रणालीगत सुधार किए है और शिक्षक शिक्षा के मामले मे कई नीतिगत बदलावो को सामने रखता है। शिक्षक बनने के लिए 2030 तक चार वर्षीय बेचलर ऑफ एजुकेशन न्युनतम आवश्यकता होगी। शिक्षक भर्ती प्रक्रिया को भी मजबूत और पारदर्शी बनाया जाएगा। शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय परिषद, शिक्षक शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2021 तक, शिक्षको के लिए 2022 तक फ्रेम किया जायेगा और एक राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक नीति तैयार किया जायेगा जो पदोन्नति और वेतन वृद्धि का आधार होगा।

एक की शक्ति

हमारा जनसांख्यिकीय आकार और घर हमें पराजित कर सकते है, हालांकि, यह एक सामान्य कारक है जो ज्वार को मोड़ सकता है और एक प्रगतिशील, लचीली, बहु–विषय प्रौद्योगिकी और कौशल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली बनने के लिए भारतीय प्रणाली को लक्ष्यहीनता और अनम्यता के वर्तमान दलदल से बाहर निकाल सकता है, जिसमे कुशल, रोजगार योग्य और नैतिक शिक्षार्थी पैदा करने की क्षमता होगी। यह सामान्य कारक है– शिक्षक। कोठारी आयोग, 1966 ने कहा, "शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न कारको मे से गुणवत्ता, क्षमता और चरित्र शिक्षको की संख्या निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण है।", एनईपी 2020 भी प्रोत्साहित करता है। शिक्षक वास्तव मे हमारे बच्चों के भविष्य को आकार देते है, और इसलिए, हमारे राष्ट्र का भविष्य, जिसका अर्थ है कि शिक्षक अपनी कक्षाओ मे मानव संसाधन की उच्च गुणवत्ता बनाकर राष्ट्र निर्माण मे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। एनईपी 2020 ने भारतीय कक्षाओ में खराब परिणामों के लिए शिक्षको को दोष देने के बजाय, शिक्षको को सशक्त बनाने और इस पेशे के लिए, उच्च सम्मान और स्थिति बहाल करने के लिए नई सुधारो का प्रस्ताव करता है।

अध्यापक शिक्षा

- अगली पीढ़ी को आकार देने वाले शिक्षकों की एक टीम के निर्माण में अध्यापक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को तैयार करना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके लिए बहु–विषयक दृष्टिकोण और ज्ञान की आवश्यकता के साथ ही साथ बेहतरीन मेंटरों के निर्देशन में मान्यताओं और मूल्यों के निर्माण के साथ ही साथ उनके अभ्यास की भी आवश्यकता होती है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अध्यापक शिक्षा और शिक्षण प्रक्रियाओं से संबंधित अद्यतन प्रगति के साथ ही साथ भारतीय मूल्यों, भाषाओं, ज्ञान, लोकाचार, और परंपराओं जनजातीय परंपराओं सहित के प्रति भी जागरूक रहें।
- उच्चतम न्यायालय द्वारा गठित न्यायमूर्ति जे. एस. वर्मा. आयोग (2012) के अनुसार, स्टैंड–अलोन टीईआई, जिनकी संख्या 10,000 से अधिक है, अध्यापक शिक्षा के प्रति लेशमात्र गंभीरता से प्रयास नहीं कर रहे है,

बल्कि इसके स्थान पर ऊंचे दामों पर डिग्रियों को बेच रहे हैं। इस दिशा में अब तक किए गए विनियामक प्रयास न तो सिस्टम में बड़े पैमाने पर व्याप्त भ्रष्टाचार को रोक पाए हैं, और न ही गुणवत्ता के लिए निर्धारित बुनियादी मानकों को ही लागू कर पाए हैं, बल्कि इन प्रयासों का इस क्षेत्र में उत्कृष्टता और नवाचार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अतः इस सेक्टर और इसकी नियामक प्रणालियों में महत्वपूर्ण कार्यवाहियों के द्वारा पुनरूद्धार की तात्कालिक आवश्यकता है, जिससे कि गुणवत्ता के उच्चतर मानकों को निर्धारित किया जा सके और शिक्षक शिक्षा प्रणाली में अखंडता, विश्वसनीयता, प्रभाविता और उच्चतर गुणवत्ता को बहाल किया जा सके।

- शिक्षण पेशे की प्रतिष्ठा को बहाल करने के लिए आवश्यक नैतिकता और विश्वसनीयता के स्तरों में सुधार को सुनिश्चित करने और फिर इसके द्वारा एक सफल विद्यालयी प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए, नियामक प्रणाली को, उन निम्न स्तरीय और बेकार अध्यापक शिक्षा संस्थानों (टीईआई) के खिलाफ उल्लंघन के लिए एक वर्ष का समय दिये जाने के पश्चात्, कठोर कार्यवाही करने का अधिकार होगा जो बुनियादी शैक्षिक मानदंडों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। वर्ष 2030 तक, केवल शैक्षिक रूप से सुदृढ़, बहु–विषयक और एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम ही कार्यान्वित होंगे।

- चूंकि, अध्यापक शिक्षा के लिए बहु–विषयक / बहु–विषयक इनपुट के साथ ही साथ उच्चतर गुणवत्तायुक्त विषयवस्तु और शैक्षणिक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है, अतः इसे ध्यान में रखते हुए सभी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को समग्र बहु–विषयी संस्थानों में ही आयोजित किया जाना चाहिए। इसके लिए, सभी बड़े बहु–विषयक विश्व विद्यालयों के साथ–साथ सभी सार्वजनिक विश्वविद्यालय और बड़े बहु–विषयक महाविद्यालय का लक्ष्य होगा कि वे अपने यहाँ ऐसे उत्कृष्ट शिक्षा विभागों की स्थापना और विकास करें, जो कि शिक्षा में अत्याधुनिक अनुसंधानो को अंजाम देने के साथ ही साथ मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, तंत्रिकाविज्ञान, भारतीय भाषाओं, कला, संगीत, इतिहास और साहित्य के साथ–साथ विज्ञान और गणित जैसे अन्य विशिष्ट विषयों से संबंधित विभागों के सहयोग से भविष्य के शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए बी.एड. कार्यक्रम भी संचालित करेंगे। इसके साथ ही साथ वर्ष 2030 तक सभी एकल शिक्षक शिक्षा के संस्थानों को बहु–विषयक संस्थानों के रूप में बदलने की आवश्यकता होगी क्योंकि उन्हें भी 4–वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संचालित करना होगा।

- वर्ष 2030 तक बहु–विषयक उच्चतर शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाने वाला यह 4–वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम स्कूली शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जाएगा। यह 4–वर्षीय एकीकृत बी.एड. शिक्षा और इसके ही एक अन्य विशेष विषय जैसे भाषा, इतिहास, संगीत, गणित कम्प्यूटर विज्ञान, रसायनविज्ञान, अर्थशास्त्र, आदि में एक समग्र डयुअल मेजर स्नातक डिग्री होगी। अत्याधुनिक शिक्षा शास्त्र के शिक्षण के साथ ही साथ शिक्षक–शिक्षा में समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञान, मनोविज्ञान, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान, भारत से जुड़े ज्ञान और इसके मूल्यों / लोकाचार / कला / परंपराएं और भी बहुत कुछ शामिल होगा। 4–वर्षीय एकीकृत बी.एड. प्रदान करने वाला प्रत्येक उच्चतर शिक्षण संस्थान, किसी एक विषय विशेष में पहले से ही स्नातक की डिग्री हासिल कर चुके ऐसे उत्कृष्ट विद्यार्थी जो आगे चलकर शिक्षण करना चाहते हैं, के लिए अपने परिसर में 2–वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम भी डिजाइन कर सकते हैं। विशेष रूप से ऐसे उत्कृष्ट विद्यार्थी जिन्होंने किसी विशेष विषय में 4 वर्ष की स्नातक की डिग्री प्राप्त की है, के लिए 1–वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम भी ऑफर किया जा सकता है। इन 4–वर्षीय, 2–वर्षीय और 1–वर्षीय, बी.एड. कार्यक्रमों के लिए उत्कृष्ट उम्मीद्वारों को आकर्षित करने के उद्देश्य से मेधावी विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियों की स्थापना की जाएगी।

- अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले उच्चतर शिक्षण संस्थान, शिक्षा और इससे संबंधित विषयों के साथ ही साथ विशेष विषयों में विशेषज्ञों की उपलब्धता को सुनिश्चित करेंगे। प्रत्येक उच्चतर शिक्षा संस्थान के पास सघन

जुड़ाव के साथ काम करने के लिए सार्वजनिक और निजी स्कूलों और स्कूल परिसरों का एक नेटवर्क होगा, जहाँ भावी शिक्षक अन्य सहायक गतिविधियों जैसे सामुदायिक सेवा, वयस्क और व्यावसायिक शिक्षा, आदि में सहभागिता के साथ शिक्षण का कार्य करेंगे।

- शिक्षक शिक्षा के लिए एकसमान मानकों को बनाए रखने के लिए, पूर्व–सेवा शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा आयोजित उपयुक्त विषय ओर योग्यता परीक्षणों के माध्यम से होगा, और देश की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए मानकीकृत किया जाएगा।
- शिक्षा विभाग में संकाय सदस्यों की प्रोफाइल में विविधता होना एक आवश्यक लक्ष्य होगा, लेकिन शिक्षण / फील्ड / शोध के अनुभवों को महत्ता प्रदान की जाएगी। सीधे–सीधे विद्यालयी शिक्षा से जुड़ने वाले सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों (जैसे, मनोविज्ञान, बालविकास, भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान) के साथ ही साथ विज्ञान शिक्षा, गणित शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा और भाषा शिक्षा जैसे कार्यक्रमों से संबंधित विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त संकाय सदस्यों को शिक्षक शिक्षा संस्थानों में आकर्षित और नियुक्त किया जाएगा, जिससे कि शिक्षकों की बहु–विषयी शिक्षा को और उनके अवधारणात्मक विकास को मजबूती प्रदान की जा सके।
- सभी नए पीएच–डी. प्रवेशकर्ताओं, चाहे वे किसी भी विषय में प्रवेश लें, से अपेक्षित होगा कि वे अपनी डोकटोरल प्रशिक्षण अवधि के दौरान उनके द्वारा चुने गए पीएच–डी विषय से संबंधित शिक्षण / शिक्षा / अध्यापन / लेखन में क्रेडिट आधारित पाठयक्रम लें। उनकी डॉक्टरेट प्रशिक्षण अवधि के दौरान उन्हें शैक्षणिक प्रक्रियाओं, पाठयक्रम निर्माण, विश्वसनीय मूल्यांकन प्रणाली, और संचार जैसे क्षेत्रों का अनुभव प्रदान किया जाएगा, क्योंकि संभव है कि इनमें कई शोध विद्वान अपने चुने हुए विषयों के संकाय सदस्य या सार्वजनिक प्रतिनिधि / संचारक बनेंगे। पीएच–डी छात्रों के लिए शिक्षण सहायक और अन्य साधनों के माध्यम से अर्जित किए गए वास्तविक शिक्षण अनुभव के न्यूनतम घंटे भी तय होंगे। देशभर के विश्वविद्यालयों में संचालित पीएच–डी. कार्यक्रमों का इस उद्देश्य के लिए पुनरुन्मुखीकरण किया जाएगा।
- कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए सेवारत सतत् व्यावसायिक विकास का प्रशिक्षण मौजूदा संस्थागत व्यवस्था और जारी पहलों के माध्यम से ही जारी रहेगा। हालांकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक समृद्ध शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं की आवश्कताओं को पूरा करने के लिए इनका सुदृढ़ीकरण और विस्तार किया जाएगा। शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए स्वयं / दीक्षा जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा, ताकि मानकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रमों को कम समय के भीतर अधिक शिक्षकों को मुहैया कराया जा सके।
- सहाल (मेंटरिंग) के लिए एक राष्ट्रीय मिशन को स्थापित किया जाएगा जिसमें बड़ी संख्या में वरिष्ठ / सेवानिवृत्त उत्कृष्ट संकाय सदस्यों को जोड़ा जाएगा। इनमें वे संकाय सदस्य भी शामिल होंगे जिनमें भारतीय भाषाओं में पढ़ाने की क्षमता है और जो विश्वविद्यालय / कॉलेज शिक्षकों को लघु और दीर्घकालिक परामर्श / व्यावसायिक सहायता प्रदान करने के लिए तैयार होंगे।

निष्कर्ष

बेजामिन डिसरायली ने कहा था, 'सफलता का रहस्य यह है कि जब अवसर आये तैयार रहना।' भारतीय शिक्षको के लिए अवसर का लाभ, उनके और अपने भाग्य का निर्माता बनने का समय आ गया है। ऐसा करने के लिए मेहनत करे और एक जागरूक, उत्साही सशक्त व्यवसायी बने, अपने विचार साझा करे, प्रयोग और शोध करके आगे बढे। अपने साथियों के विचारो, विश्वासो और अनुभवो से भी अंतदृष्टि प्राप्त करे। शिक्षार्थियों की पीढ़ियो के साथ सुंदर संबंध बनाकर अपनी यात्रा का आनंद ले, जो आपनी कक्षाओं के माध्यम से परिवर्तन होते है और जीवन भर सीखने वाले बने रहते है।

नई शिक्षा नीति और स्कूल शिक्षा

विवेक कुमार गौतम,
शोधार्थी
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वी शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य देश के शिक्षा में नवाचार के साथ संशोधन कर नवीन शिक्षा प्रणाली को लागू करना है। नई शिक्षा नीति के तहत सभी विद्यार्थियों के लिए चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना। यह शिक्षा नीति केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की संरचना करती है जो छात्रों को उच्च गुणवत्ता से युक्त शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हो। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा जी से जिसे 1992 में संशोधित किया गया था के अधूरे कार्य को इस नीति के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराने में पूर्णतः सक्षम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समिति का गठन 2016 में अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की प्रारम्भिक शिक्षा को उच्चतर श्रेणी में परिवर्तित कर नया आगाम देने में पूर्णतः सक्षम है। इसमें पठन–पाठन के साथ–साथ छात्रों के व्यवसायिक परीक्षण हेतु व्यापक टाँचा निहित है, जिसका एक मात्र लक्ष्य विद्यार्थियों व्यवसायिक शिक्षा प्रदान कर सुयोग्य कामयाब नागरिक बनाना है। छात्रों के सार्वभौमिक विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा और रोजगार व्यक्ति के विकास अहम कड़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों को प्रारंभिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में देने की कार्य योजना है, जिससे वे शीघ्र अधिगम कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यवसायिक शिक्षा पर ज्यादा बल देती है, विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षण द्वारा छात्रों को प्रशिक्षित करना इस शिक्षा नीति लक्ष्य है। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य 2040 तक पूर्ण रूप से भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, तकनीकी, गुरुकुल, राष्ट्र, भाषा, कौशल।

प्रस्तावना

मानव व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। समुचित शिक्षा ही मानव को पूर्ण बनने में अद्भुत सहयोग प्रदान करती है। यों कहें तो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का अहम रोल है। इन्हीं स्थितियों को ध्यान में रखते हुए 1986 में तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी ने नई शिक्षा नीति पर शिक्षाविदो का ध्यान केन्द्रित कर लागू किया था। पिछली शिक्षा नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा के मुद्दों तक पहुँचने का था। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति जिसे 1992 एन पीई 1986–92 में संशोधित किया गया था, के अधूरे काम को इस नीति के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है। 1986–92 की पिछली नीति के बाद से एक बड़ा कदम नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहा है जिसने सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध करवाया। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने पूर्व (पिछली) शिक्षा नीति में संशोधन कर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने हेतु 2016 में अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरी रंगन के नेतृत्व एक कमेटी का गठन किया।

प्रविधि

प्रभावी अध्ययन के लिए शोध पत्र से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर के स्रोत विभिन्न रिपोर्ट, सोर्स नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन आगरा ए.पी.ए. पब्लिकेशन कारपोरेशन नई दिल्ली, नई शिक्षा नीति 2020 की रिपोर्ट,

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 12, December 2017
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

Inclusion in Ancient India and it's Necessity in Present Context

Dr. Najiya Ahemad (Assistant Professor)
Sandipani Academy Achhoti, Murmunda -Durg

Abstract

This paper presents that how the practice of inclusive education is beneficial for disabled children as well as their non disabled peers and their teachers. Research done by McKinsey & Company has been mentioned in the paper. In the second section, an inclusive education system of the Vedic period has been explained and the importance of an inclusive society has been described. In the third section background of India's efforts after independence has been mentioned, this includes different policies and programs launched by government of India. In the forth section the importance of Proposed Advance Education Policy in making an inclusive society and an inclusive education system has been mentioned with some of the steps that government should take.

Introduction

In inclusive education, all students are supported to learn, contribute and participate in all aspects of school life and are welcomed by their neighborhood schools for regular studies according to age.

Throughout the world, students with disabilities are progressively educated along with their nondisabled peers in an exercise known as inclusion (Kumar and Kumar, 2007). Inclusion is glaringly featured in a number of global declarations, education policies and national laws. These policies, tied with the hard work of advocates for the rights of people with disabilitieshave led to a significant upsurge in the number of students with disabilities who receive education alongside their non-disabled peers.

There is clear and reliable indication that inclusive educational settings can impart considerable short-term and long-term advantages for students with or without disabilities (Hehir et. al, 2016). Involved students develop stronger skills in math and reading that reduce

for Principal (Education) Sandipani Academy Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचारी प्रयोग एवं तकनीकी का योगदान

डॉ. संध्या पुजारी (सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, मुरमुंदा (दुर्ग)

सारांश

शिक्षण अधिगम को सार्थक और प्रभावशाली बनाने का प्रयास अनवरत् रूप से जारी है तकनीकी क्षेत्र में हुए आविष्कारों द्वारा शिक्षण की प्रक्रिया को कैसे सबल बनाया जाये, शिक्षण विधि, प्रविधि ,शिक्षण सामग्री में क्या परिवर्तन किये जायें ? उद्देश्यों कि अधिकतम प्राप्ति कैसे की जाये ? जब शिक्षा के क्षेत्र में इन बिन्दुओं पर गहन चिन्तन के बाद एक नया क्षेत्र उभर कर आया जिसे शैक्षिक तकनीकी कहा गया । अत : शैक्षिक तकनीकी एक ऐसा सम्प्रत्यय है जिसमें अधिगम परिस्थितियों का समुचित नियोजन एवं व्यवस्था करके शिक्षण अधिगम प्रकिया की प्रभावशीलता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है । शैक्षिक तकनीकी को शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनायी गयी उन समन्वित, सम्बद्ध, सार्थक शैक्षिक प्रौद्योगिकी की श्रृंखला कहा जा सकता है जिनका उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रकिया को व्यापक स्तर पर सरल, सरस , प्रभावी तथा तीव्रगामी बनाना होता है इसने शिक्षा के सभी पक्षों को प्रभावित किया है ।

कीवर्ड – प्रोद्योगिकी, शिक्षण– आधिगम प्रकिया, बहुमाध्यम उपागम, शैक्षिक तकनीकी

प्रस्तावना

सर्वप्रथम, शिक्षण में तकनीकी का प्रयोग 1926 में अमेरिका में ओहियो राज्य विश्वविद्यालय में सिडनी प्रैसी ने शिक्षण मशीन के निर्माण द्वारा प्रारम्भ किया। इस मशीन का निर्माण एक शिक्षण युक्ति के रूप में जाँच हेतु किया गया था। तत्पश्चात् 1930–40 के लगभग लम्सडेन तथा ग्लैसर आदि तकनीकी विशेषज्ञों ने शिक्षण को यंत्रीकरण करने का प्रयत्न किया। यह कार्य कुछ विशेष प्रकार की पुस्तकों, कार्डों व बोड़ों के रूप में प्रस्तुत किया गया।

किन्तु वास्तव में शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सन् 1954 में बी. एफ. स्किनर के प्रयोगों द्वारा प्रारम्भ हुआ। स्किनर ने जानवरों पर किये गये परीक्षणों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के लिए किया। उसके इन्हीं परीक्षणों के फलस्वरूप अभिक्रमित अधिगम का विकास हुआ। इसी के अनुरूप इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम ब्राइनमौर ने प्रयोग किया। तत्पश्चात् औद्योगिक क्रान्ति तथा अन्य क्षेत्रों

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सतत विकास में नवीन शिक्षा पध्दति का योगदान

श्रीमति एम. सुजाता राव (सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी, अछोटी, (मुरमुंदा), दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

सतत विकास के लिए नवीन शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा एक ऐसी शक्ति है जो ना केवल राष्ट्रीय विकास में बल्कि सतत विकास में भी योगदान देता है। यह सामाजिक आर्थिक राजनीतिक या पर्यावरण विकास की कुंजी है।सतत विकास को प्राप्त करने के लिए शिक्षा आवश्यक ज्ञान और कौशल के विकास को बढ़ावा देता है। यह आर्थिक कल्याण सामाजिक समानता लोकतांत्रिक मूल्यों और बहुत सी चीजों को प्रोत्साहित करती है। सतत विकास के लिए शिक्षा लोगों और नागरिकों को यह जानने में सक्षम बनाती है। कि पृथ्वी के संसाधन को कैसे सुरक्षित किया जाए जो सीमित मात्रा में उपलब्ध है। कि एसडी का उद्देश्य एसडी के आर्थिक सामाजिक आयामों के लिए एक संतुलित एकीकृत दृष्टिकोण का उपयोग कर वर्तमान और भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें सामर्थ बनाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व और रचनात्मकता को विकसित करने की एक प्रक्रिया है ताकि वे स्वस्थ समाज और प्रगति को बढ़ावा देने में सहायता कर सकें। शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है। जो व्यक्ति क्षमताओं सामाजिक वातावरण, आर्थिक विकास ,आसपास के नैतिक और विशेषकर सभी अनुकूलन क्षमताओं को प्रभावित करता है।शिक्षा से अपेक्षा की जाती है, कि वह ज्ञान के अनुसरण के लिए सिद्धांतों विधियों दिशानिर्देशों कर विकसित करें। ताकि समाज को लाभ पहुंचाया जा सके । विकास की समस्या के समाधान के लिए ज्ञान और कौशल प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। लोगों छात्रों के शारीरिक और सामाजिक वातावरण के बगैर ने समाज और दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम होती है। सतत विकास जून 1992 में ब्राजील में आयोजित पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का मुख्य केंद्र था विश्व स्तर पर सतत विकास की उपलब्धि जनसंख्या वृद्धि में प्रति व्यक्ति खपत के बढ़ते स्तर के कारण विश्व समुदाय के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सिद्ध होने की संभावना है। जैसे कि पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग ने निरीक्षण किया, कि जलवायु परिवर्तन ओजोन अधिकरण और प्रजाति हानि जैसे वैश्विक कठिनाइयों के अतिरिक्त दबाव के बीच सतत विकास को प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। सतत विकास पर्यावरण और विकास पर वित्त आयोग की रिपोर्ट जिसका शिक्षक रखा गया था हमारा सामुदायिक भविष्य को जिम्मेदार ठहराया गया को परिभाषित करती है सतत विकास आर्थिक विकास परिस्थिति सत्ता के बीच संतुलन को सुरक्षित रखने के लिए कोशिश करता है, दोनों आर्थिक और पर्यावरणीय प्रणालियों को जीवित रखने के लिए एक निश्चित न्यूनतम

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at :http://euroasiapub.org
Vol.9 Issue4, April-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

"शिक्षण अधिगम में बहुमाध्यम उपागम ,विज्ञान एवं तकनीकी की बढती हुई उपलब्धिया"

श्रीमति मीना पाण्डे (सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, दुर्ग

सारांश

शिक्षा में तकनीकी पर गहन चर्चा की आवश्यकता महसूस होती है। क्योंकि जहाँ एक ओर तकनीकी व्यक्ति की जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान देने में सक्षम है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति को दिमागी एवं शारीरिक कसरतों से बचाते हुए अपने ऊपर निर्भरता बढ़ाकर पंगु भी कर रही है। समय के साथ बदलते एवं बढ़ते हुए तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी विकास ने मानव को पृथ्वी ही नहीं अपितु अन्तरिक्ष तक को समझने हेतु सक्षम कर दिया है। आज बच्चों को तकनीकी उपक्रमों के साथ खेलना, उनको समझना ज्यादा रुचिपूर्ण लगता है और इनके माध्यम से वे बेहतर तरीके से सीखने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे में उनके इस कौशल एवं रुचि को देखते हुए शिक्षण हेतु सही एवं उपयुक्त तकनीकी का चयन व उसका सही एवं उपयुक्त इस्तेमाल, उच्च अधिगम स्तर प्राप्त करने में सहायक हो सकता है। ऐसे में जरूरत है एक शिक्षक का इस आवश्यकता को समझना व सही एवं सटीक तरीकों द्वारा इन सभी बातों को लागू करना। उनकी खुद की कुशलता एवं रुचि एक बड़ा सवाल हो सकता है। परन्तु समय के साथ–साथ शिक्षण में आ रहे बदलाव और नवाचार में खुद को ढालना शिक्षक के लिए अनिवार्य हो जाता है।

शब्द कुंजी– शिक्षण, सीखना, तकनीकी शिक्षण, बहुमाध्यम उपागम, आईसीटी, प्रौद्योगिकी, जटिल।

प्रस्तावना–

वर्तमान युग में विज्ञान का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें दिखाई देता है। आज विज्ञान के बिना समाज की कल्पना करना असंभव है। हमारी संस्कृति में विज्ञान घुल–मिल गया है। विज्ञान की पिक्षा के प्रचार व प्रसार से मानव की विचारधारा में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन ने व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक एव सांस्कृतिक स्थिति को भी प्रमावित किया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों से हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार तो हुआ है वहीं कुछ नवीन समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है जिससे व्यक्ति बदलते हुए परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित कर सकें। विज्ञान और उसकी प्रकृति के बारे में हमारे देश के राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र छ.ग. 2005 में कुछ इस प्रकार लिखा है–"विज्ञान एक जीवंत नए से नए से नए अनुभवों के अनुसार विस्तार पाता हुआ गतिमान ज्ञान है लेकिन सवाल यह है कि यह ज्ञान कैसे उत्पन्न होता है? आखिर क्या है वैज्ञानिक प्रक्रिया? आखिर क्या है वैज्ञानिक प्रक्रिया? अन्य कोई जटिल चीजों की

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 12, December 2017
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

Inclusion in Ancient India and it's Necessity in Present Context

Dr. Najiya Ahemad (Assistant Professor)
Sandipani Academy Achhoti, Murmunda -Durg

Abstract

This paper presents that how the practice of inclusive education is beneficial for disabled children as well as their non disabled peers and their teachers. Research done by McKinsey & Company has been mentioned in the paper. In the second section, an inclusive education system of the Vedic period has been explained and the importance of an inclusive society has been described. In the third section background of India's efforts after independence has been mentioned, this includes different policies and programs launched by government of India. In the forth section the importance of Proposed Advance Education Policy in making an inclusive society and an inclusive education system has been mentioned with some of the steps that government should take.

Introduction

In inclusive education, all students are supported to learn, contribute and participate in all aspects of school life and are welcomed by their neighborhood schools for regular studies according to age.

Throughout the world, students with disabilities are progressively educated along with their nondisabled peers in an exercise known as inclusion (Kumar and Kumar, 2007). Inclusion is glaringly featured in a number of global declarations, education policies and national laws. These policies, tied with the hard work of advocates for the rights of people with disabilitieshave led to a significant upsurge in the number of students with disabilities who receive education alongside their non-disabled peers.

There is clear and reliable indication that inclusive educational settings can impart considerable short-term and long-term advantages for students with or without disabilities (Hehir et. al, 2016). Involved students develop stronger skills in math and reading that reduce

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

for Principal (Education) Sandipani Academy Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचारी प्रयोग एवं तकनीकी का योगदान

डॉ. संध्या पुजारी (सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, मुरमुंदा (दुर्ग)

सारांश

शिक्षण अधिगम को सार्थक और प्रभावशाली बनाने का प्रयास अनवरत् रूप से जारी है तकनीकी क्षेत्र में हुए आविष्कारों द्वारा शिक्षण की प्रक्रिया को कैसे सबल बनाया जाये, शिक्षण विधि, प्रविधि ,शिक्षण सामग्री में क्या परिवर्तन किये जायें ? उद्देश्यों कि अधिकतम प्राप्ति कैसे की जाये ? जब शिक्षा के क्षेत्र में इन बिन्दुओं पर गहन चिन्तन के बाद एक नया क्षेत्र उभर कर आया जिसे शैक्षिक तकनीकी कहा गया । अत : शैक्षिक तकनीकी एक ऐसा सम्प्रत्यय है जिसमें अधिगम परिस्थितियों का समुचित नियोजन एवं व्यवस्था करके शिक्षण अधिगम प्रकिया की प्रभावशीलता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है । शैक्षिक तकनीकी को शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनायी गयी उन समन्वित, सम्बद्ध, सार्थक शैक्षिक प्रौद्योगिकी की श्रृंखला कहा जा सकता है जिनका उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रकिया को व्यापक स्तर पर सरल, सरस , प्रभावी तथा तीव्रगामी बनाना होता है इसने शिक्षा के सभी पक्षों को प्रभावित किया है ।

कीवर्ड – प्रोद्योगिकी, शिक्षण– आधिगम प्रकिया, बहुमाध्यम उपागम, शैक्षिक तकनीकी

प्रस्तावना

सर्वप्रथम, शिक्षण में तकनीकी का प्रयोग 1926 में अमेरिका में ओहियो राज्य विश्वविद्यालय में सिडनी प्रैसी ने शिक्षण मशीन के निर्माण द्वारा प्रारम्भ किया। इस मशीन का निर्माण एक शिक्षण युक्ति के रूप में जाँच हेतु किया गया था। तत्पश्चात् 1930–40 के लगभग लम्सडेन तथा ग्लैसर आदि तकनीकी विशेषज्ञों ने शिक्षण को यंत्रीकरण करने का प्रयत्न किया। यह कार्य कुछ विशेष प्रकार की पुस्तकों, कार्डों व बोड़ों के रूप में प्रस्तुत किया गया।

किन्तु वास्तव में शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सन् 1954 में बी. एफ. स्किनर के प्रयोगों द्वारा प्रारम्भ हुआ। स्किनर ने जानवरों पर किये गये परीक्षणों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के लिए किया। उसके इन्हीं परीक्षणों के फलस्वरूप अभिक्रमित अधिगम का विकास हुआ। इसी के अनुरूप इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम ब्राइनमौर ने प्रयोग किया। तत्पश्चात् औद्योगिक क्रान्ति तथा अन्य क्षेत्रों

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सतत विकास में नवीन शिक्षा पध्दति का योगदान

श्रीमति एम. सुजाता राव (सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी, अछोटी, (मुरमुंदा), दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

सतत विकास के लिए नवीन शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा एक ऐसी शक्ति है जो ना केवल राष्ट्रीय विकास में बल्कि सतत विकास में भी योगदान देता है। यह सामाजिक आर्थिक राजनीतिक या पर्यावरण विकास की कुंजी है।सतत विकास को प्राप्त करने के लिए शिक्षा आवश्यक ज्ञान और कौशल के विकास को बढ़ावा देता है। यह आर्थिक कल्याण सामाजिक समानता लोकतांत्रिक मूल्यों और बहुत सी चीजों को प्रोत्साहित करती है। सतत विकास के लिए शिक्षा लोगों और नागरिकों को यह जानने में सक्षम बनाती है। कि पृथ्वी के संसाधन को कैसे सुरक्षित किया जाए जो सीमित मात्रा में उपलब्ध है। कि एसडी का उद्देश्य एसडी के आर्थिक सामाजिक आयामों के लिए एक संतुलित एकीकृत दृष्टिकोण का उपयोग कर वर्तमान और भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें सामर्थ बनाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व और रचनात्मकता को विकसित करने की एक प्रक्रिया है ताकि वे स्वस्थ समाज और प्रगति को बढ़ावा देने में सहायता कर सकें। शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है। जो व्यक्ति क्षमताओं सामाजिक वातावरण, आर्थिक विकास ,आसपास के नैतिक और विशेषकर सभी अनुकूलन क्षमताओं को प्रभावित करता है।शिक्षा से अपेक्षा की जाती है, कि वह ज्ञान के अनुसरण के लिए सिद्धांतों विधियों दिशानिर्देशों कर विकसित करें। ताकि समाज को लाभ पहुंचाया जा सके । विकास की समस्या के समाधान के लिए ज्ञान और कौशल प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। लोगों छात्रों के शारीरिक और सामाजिक वातावरण के बगैर ने समाज और दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम होती है। सतत विकास जून 1992 में ब्राजील में आयोजित पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का मुख्य केंद्र था विश्व स्तर पर सतत विकास की उपलब्धि जनसंख्या वृद्धि में प्रति व्यक्ति खपत के बढ़ते स्तर के कारण विश्व समुदाय के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सिद्ध होने की संभावना है। जैसे कि पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग ने निरीक्षण किया, कि जलवायु परिवर्तन ओजोन अधिकरण और प्रजाति हानि जैसे वैश्विक कठिनाइयों के अतिरिक्त दबाव के बीच सतत विकास को प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। सतत विकास पर्यावरण और विकास पर वित्त आयोग की रिपोर्ट जिसका शिक्षक रखा गया था हमारा सामुदायिक भविष्य को जिम्मेदार ठहराया गया को परिभाषित करती है सतत विकास आर्थिक विकास परिस्थिति सत्ता के बीच संतुलन को सुरक्षित रखने के लिए कोशिश करता है, दोनों आर्थिक और पर्यावरणीय प्रणालियों को जीवित रखने के लिए एक निश्चित न्यूनतम

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at :http://euroasiapub.org
Vol.9 Issue4, April-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

"शिक्षण अधिगम में बहुमाध्यम उपागम ,विज्ञान एवं तकनीकी की बढती हुई उपलब्धिया"

श्रीमति मीना पाण्डे (सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, दुर्ग

सारांश

शिक्षा में तकनीकी पर गहन चर्चा की आवश्यकता महसूस होती है। क्योंकि जहाँ एक ओर तकनीकी व्यक्ति की जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान देने में सक्षम है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति को दिमागी एवं शारीरिक कसरतों से बचाते हुए अपने ऊपर निर्भरता बढ़ाकर पंगु भी कर रही है। समय के साथ बदलते एवं बढ़ते हुए तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी विकास ने मानव को पृथ्वी ही नहीं अपितु अन्तरिक्ष तक को समझने हेतु सक्षम कर दिया है। आज बच्चों को तकनीकी उपक्रमों के साथ खेलना, उनको समझना ज्यादा रुचिपूर्ण लगता है और इनके माध्यम से वे बेहतर तरीके से सीखने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे में उनके इस कौशल एवं रुचि को देखते हुए शिक्षण हेतु सही एवं उपयुक्त तकनीकी का चयन व उसका सही एवं उपयुक्त इस्तेमाल, उच्च अधिगम स्तर प्राप्त करने में सहायक हो सकता है। ऐसे में जरूरत है एक शिक्षक का इस आवश्यकता को समझना व सही एवं सटीक तरीकों द्वारा इन सभी बातों को लागू करना। उनकी खुद की कुशलता एवं रुचि एक बड़ा सवाल हो सकता है। परन्तु समय के साथ–साथ शिक्षण में आ रहे बदलाव और नवाचार में खुद को ढालना शिक्षक के लिए अनिवार्य हो जाता है।

शब्द कुंजी– शिक्षण, सीखना, तकनीकी शिक्षण, बहुमाध्यम उपागम, आईसीटी, प्रौद्योगिकी, जटिल।

प्रस्तावना–

वर्तमान युग में विज्ञान का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें दिखाई देता है। आज विज्ञान के बिना समाज की कल्पना करना असंभव है। हमारी संस्कृति में विज्ञान घुल–मिल गया है। विज्ञान की पिक्षा के प्रचार व प्रसार से मानव की विचारधारा में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन ने व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक एव सांस्कृतिक स्थिति को भी प्रमावित किया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों से हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार तो हुआ है वहीं कुछ नवीन समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है जिससे व्यक्ति बदलते हुए परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित कर सकें। विज्ञान और उसकी प्रकृति के बारे में हमारे देश के राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र छ.ग. 2005 में कुछ इस प्रकार लिखा है–"विज्ञान एक जीवंत नए से नए से नए अनुभवों के अनुसार विस्तार पाता हुआ गतिमान ज्ञान है लेकिन सवाल यह है कि यह ज्ञान कैसे उत्पन्न होता है? आखिर क्या है वैज्ञानिक प्रक्रिया? आखिर क्या है वैज्ञानिक प्रक्रिया? अन्य कोई जटिल चीजों की

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

ISSN :2582-1792

शोधसमागम®

A DOUBLE BLIND, PEER REVIEWED QUARTERLY MULTI DISCIPLINARY AND BILINGUAL RESEARCH JOURNAL

SANDIPANI ACADEMY

Special issue for Conference
National Conference on

"The Impact of National Education Policy (2020) on the Higher Education Sector"

30[th] November 2021

Organised by:
Department of Education
Sandipani Academy,
Kumhari-Ahiwara Road, Achhoti (Murmunda)
Dist- Durg (Chhattisgarh)

&

SHODH SAMAGAM
Double - Blind, peer-reviewed, quarterly, multidisciplinary and bilingual research journal

Publisher

Aditi Publication

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

60

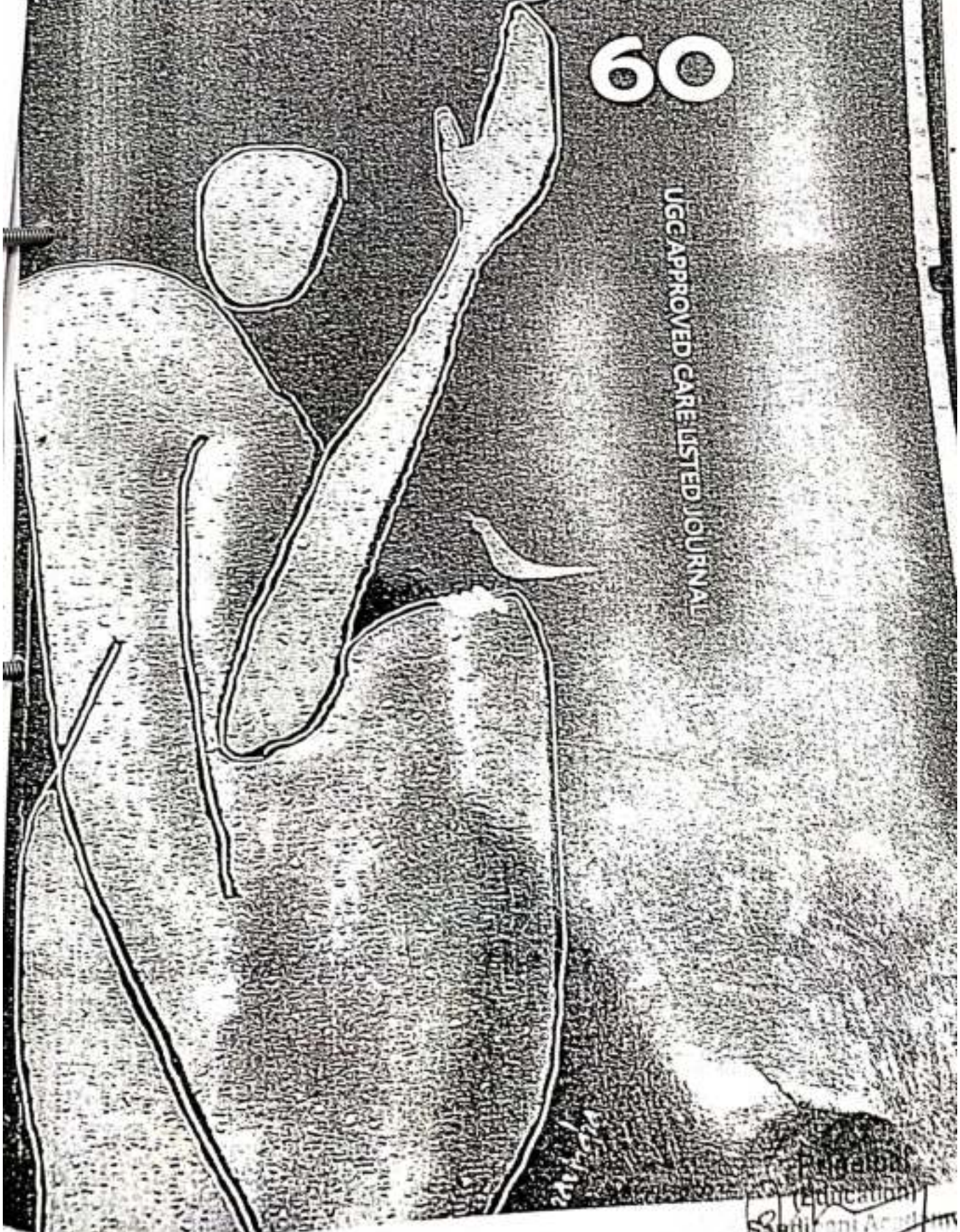

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

(Education)

ISBN: 978-81-947826-1-2

Eureka Publication

National Education Policy 2020: Vision for India's future Education

Principal
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Editors

Dr. Riya Tiwari

Dr. S.G. Sharma

Dr. Yogita Jiwane

Sandipani Academy

ISBN : 978-93-92568-07-7

GENDER PERSPECTIVES IN EDUCATION

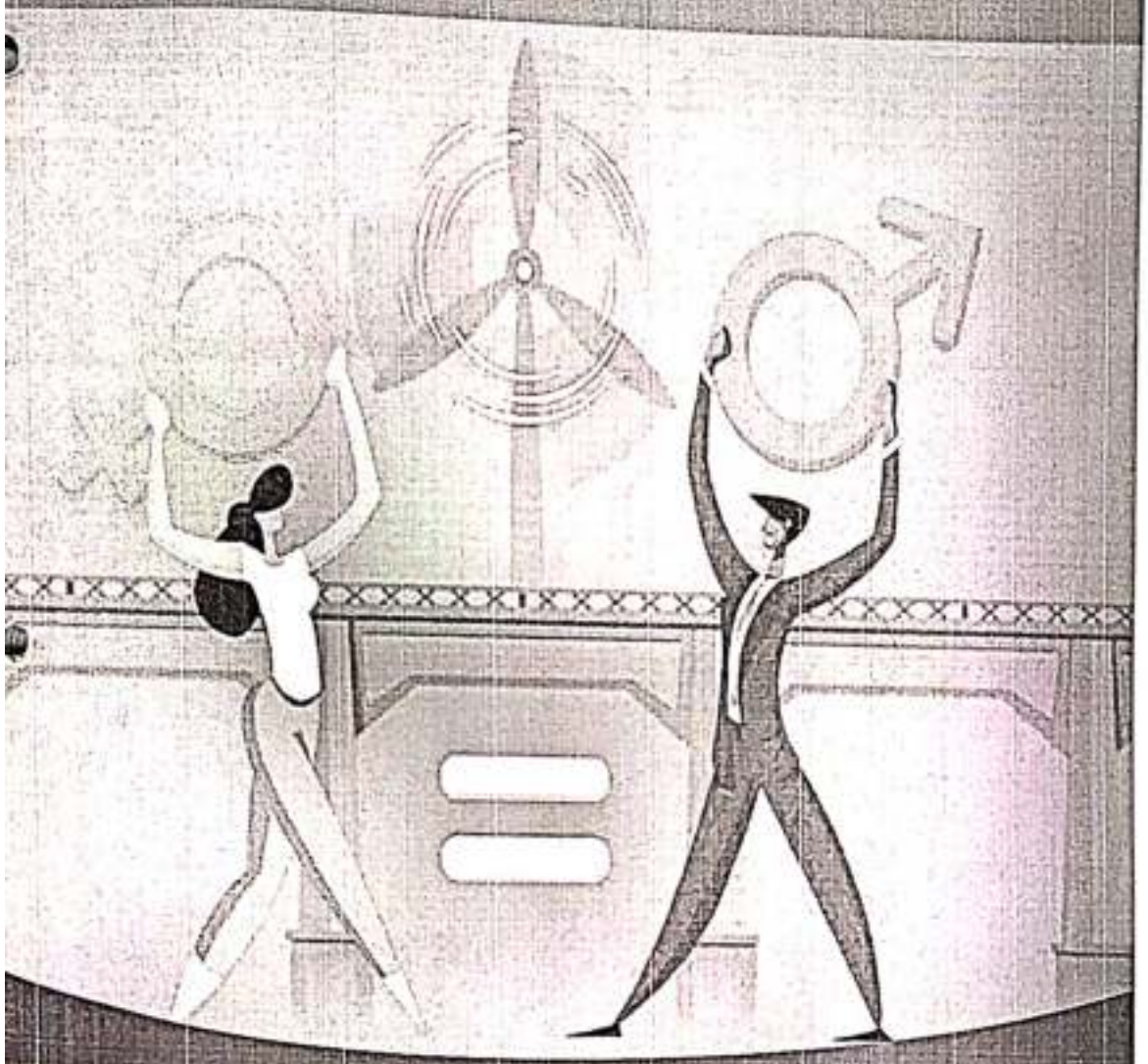

DR. DIVYA SHARMA

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

ISBN : 978-93-92568-07-7

GENDER PERSPECTIVES IN EDUCATION

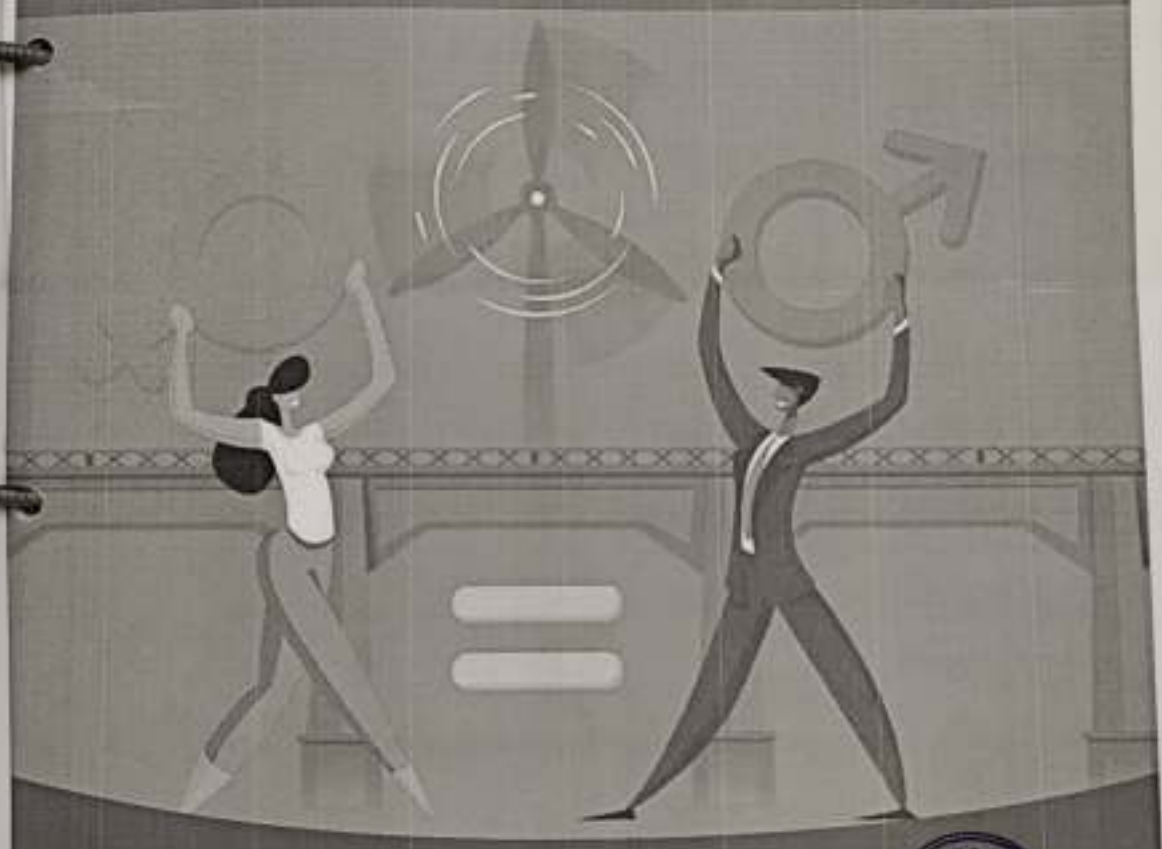

DR. DIVYA SHARMA

Principal

Aditi Publication

&

SHODH SAMAGAM
Double - Blind, peer-reviewed, quarterly,
multidisciplinary and bilingual research journal

ISBN : 978-93-92568-13-8

Global Citizenship Education: A Pressing Priority of the Era

Dr. Arun Kumar Dubey ● Dr. Abha Dubey

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

ISBN: 978-81-947826-1-2
National Education Policy 2020:
Vision for India's future Education
Editors
Dr. Riya Tiwari
Dr. S.G. Sharma
Dr. Yogita Jiwane
Principal
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

OUR PUBLICATIONS
A HANDBOOK ON GST IN INDIA
INNOVATION AND ENTREPRENEURSHIP
Empowerment and Social Development
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916
ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021
दृष्टिकोण
India's Leading Refereed Hindi Language Journal
IMPACT FACTOR : 5.051

ISSN: 2347-3142 (Print)
ISSN: 2454-2687 (Online)

International Journal of Reviews and Research in Social Sciences

IJRRSS

International Peer-reviewed Journal of Humanities and Social Sciences

January
ISSN-2347-5145 (Print)
ISSN-2454-2687 (Online)

nternational Journal of Reviews and Research in Social Sciences

JRRSS

n International Peer-reviewed
urnal of Humanities and Social Sciences

ISSN 0975-119

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119

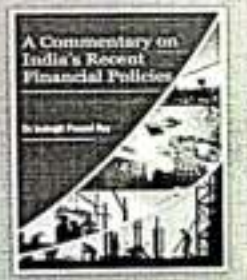

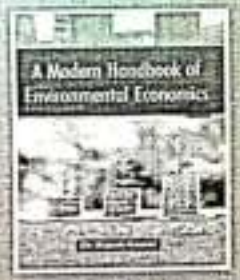

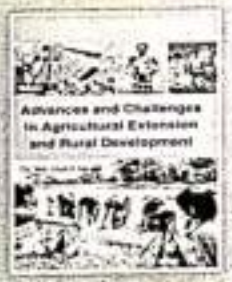

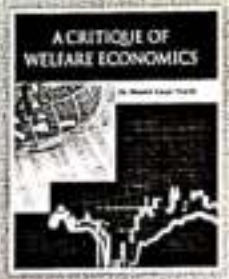

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journ

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

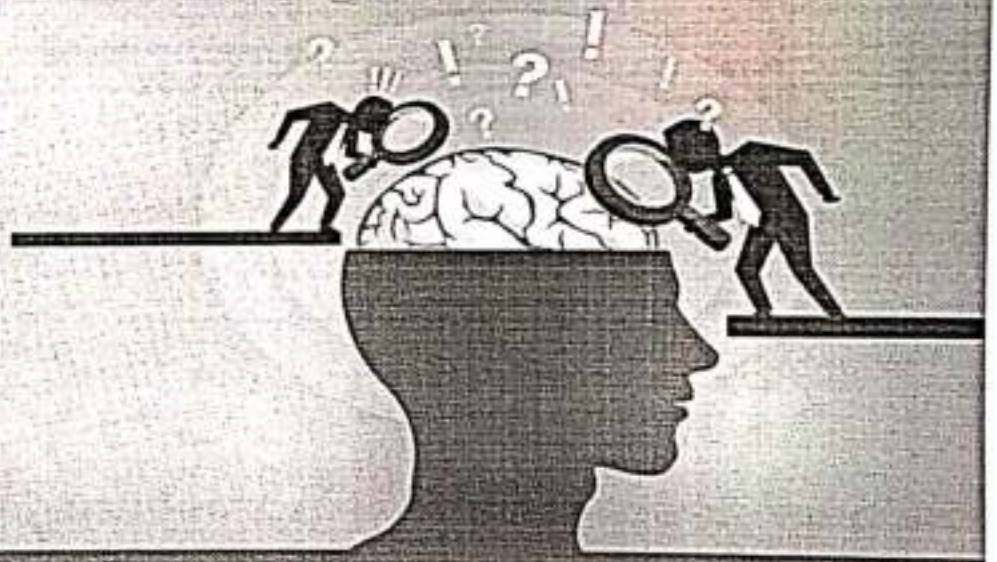

Impact Factor: 2.02

ISSN: 2582-1377

Global Journal of Emerging Trends in Education and Social Science

Peer Reviewed, Referred Journal

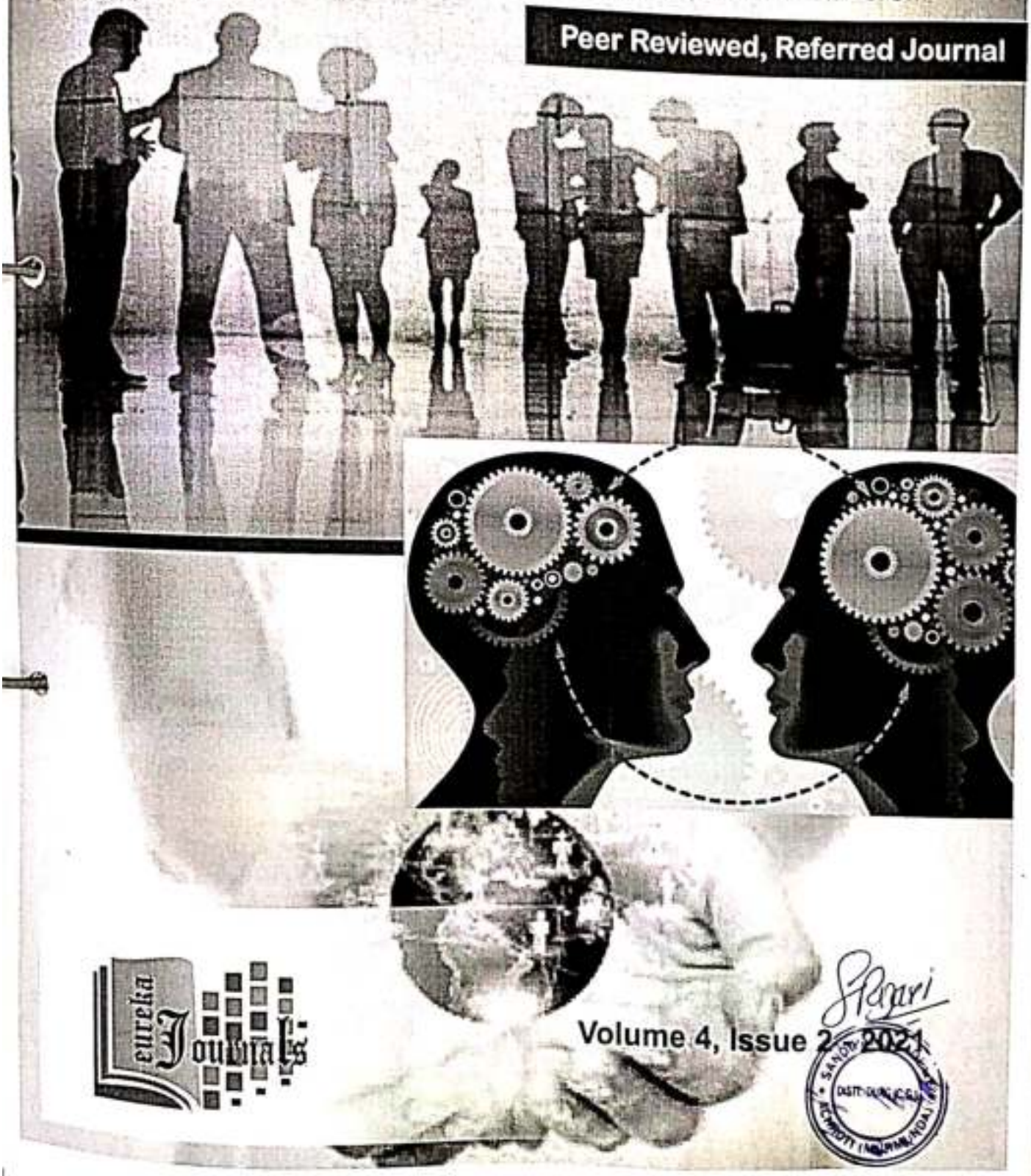

Eureka Journals

Volume 4, Issue 2, 2021

SANDIPANI ACADEMY

Kumhari – Ahiwara Road, Achhoti, (Murmunda), Dist.- Durg (C.G.)
Affiliated to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Certificate
of Appreciation

This is to certify that

Meena Pandey

Assistant professor

Sandipani Academy , Achhoti

has presented a paper entitled

New Education policy and Teacher Education

in the National Conference on "The Impact of New Education Policy (2020) on Higher Education Sector" organized by Department of Education, Sandipani Academy on 30th November 2021.

MR. MAHENDRA CHOUBEY
Patron

DR. NAZIA AHMED
Convener

DR. ABHA DUBEY
Convener

DR. SANDHYA PUJARI
Organising Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
DIST. DURG (C.G.)

NATIONAL SEMINAR

on

PUNARJAGRAN:

"Relevance of Ancient Indian Consciousness of Knowledge in Global Context"

13 -14 September 2022

Sponsored By

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Indian Council of Social Science Research, New Delhi

Organized By

MANSA COLLEGE OF EDUCATION

Recognized By NCTE, Accredited By NAAC (B 2.68),
Affiliated to Hemchand Yadav University,Durg

Certificate of Appreciation

This certificate is proudly awarded to

Meena Pandey

Of

Sandipini Academy Achoti Durg CG

in recognition of participation / presentation of paper on

योग व आध्यात्मिकता

In the interdisciplinary national seminar.
We wish to appreciate your valuable presence and active participation in the event.

B.S. SAXENA
Chairman

Dr. SMITA SAXENA
Convener

Dr. RITIKA SONI
Organizing Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

Chhattisgarh TRTI
Tribal Research and Training Institute

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर-24, नवा रायपुर, अटल नगर, छत्तीसगढ़

राष्ट्रीय जनजातीय साहित्य महोत्सव 2022

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, डॉ./श्री/श्रीमती/कु. ......ममता ध्रुव...... द्वारा छत्तीसगढ़ आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा दिनांक 19-21 अप्रैल 2022 तक आयोजित 'राष्ट्रीय जनजातीय साहित्य महोत्सव में ......छत्तीसगढ़ का जनजातीय समाज : विकास और उनकी वर्तमान चुनौतियां...... विषय पर अपना आलेख/शोधपत्र का प्रस्तुतीकरण किया गया।

शुभकामनाओं के साथ ....

स्थान : पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम रायपुर, छत्तीसगढ़

दिनांक : 21-04-2022

(श्रीमती शम्मी आबिदी, IAS)
आयुक्त सह संचालक
आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti Durg (C.G.)

आयोजक

गोंडवाना स्वदेश

गढ़बो नवा छत्तीसगढ़

गोंडवाना स्वदेश- मासिक पत्रिका, रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा आयोजित
एवं संस्कृति विभाग व आदिवासी विकास विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी

दिनांक : 27, 28 एवं 29 दिसंबर 2019

आदिवासी अस्मिता: कल, आज और कल

(आदिवासी संस्कृति, कला, शिक्षा, साहित्य, विस्थापन, समस्या एवं निदान पर केन्द्रित)

:प्रमाण-पत्र:

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./ डॉ./ श्री/ श्रीमती/ सुश्री ममता ध्रुव ने दिनांक 27,28 एवं 29 दिसंबर 2019 को गोंडवाना स्वदेश मासिक पत्रिका द्वारा "आदिवासी अस्मिता: कल, आज और कल" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में प्रतिभागी/ विषय विशेषज्ञ/ अध्यक्ष/ वक्ता/ सत्र-अध्यक्ष/ सत्र संचालक/ स्पोर्टियर/ आयोजन समिति के सदस्य के रूप में सहभागिता की। इन्होंने छ. ग. मे मराठा शासन काल मे जनजातियो की सामाजिक स्थिति विषय पर शोध पत्र/ शोध आलेख/ व्याख्यान प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी संरक्षक	संगोष्ठी संयोजक	संगोष्ठी सह-संयोजक	संगोष्ठी सह-संयोजक
मान. श्री अमरजीत भगत	**श्री रमेश ठाकुर**	**डॉ. नरेश कुमार साहू**	**श्री जितेन्द्र सोनकर**
कैबिनेट मंत्री	संपादक, गोंडवाना स्वदेश	सदस्य, संपादक मंडल गोंडवाना स्वदेश	सदस्य, संपादक मंडल गोंडवाना स्वदेश
संस्कृति, सांख्यिकी एवं योजना विभाग	जन जागरण के लिए प्रतिबद्ध	जन जागरण के लिए प्रतिबद्ध	जन जागरण के लिए प्रतिबद्ध
छत्तीसगढ़ शासन	मासिक पत्रिका	मासिक पत्रिका	मासिक पत्रिका

Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION SPONSORED

NATIONAL SEMINAR ON GANDHIWADI VICHARDHARA KI SARTHAKTA

21-23 FEBRUARY 2020

ORGANIZED BY

SCHOOL OF STUDIES IN HISTORY PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY

RAIPUR, C.G.

(ACCREDITED "A" GRADE BY "NAAC")

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Mr./Mrs./Ms. ममता ध्रुव of एम. फिल, पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर (छ.ग.) has attended National Seminar on "Gandhiwadi Vichardhara Ki Sarthakta" as Chairperson/ Invited speaker /Participant and presented paper entitled महात्मा गाँधी और स्वच्छता।

Prof.(Smt.) Abha R. Pal Convener	Dr. Dishwar Nath Khute Organizing Secretary	Prof. Keshari Lal Verma Vice-Chancellor

Principal

मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् 39वाँ अधिवेशन

एवं

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विविध आयाम – मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में

26 एवं 27 मार्च, 2022

आयोजक - इतिहास विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/ श्रीमती/ डॉ./ प्रो. ममता ध्रुव, शोध छात्रा, प० र० वि० वि०, रायपुर, छत्तीसगढ़

मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् 39 वें अधिवेशन एवं "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विविध आयाम- मध्यप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिनांक 26-27 मार्च को अपनी सहभागिता दी एवं अपना शोध पत्र शीर्षक "छत्तीसगढ़ का आदिवासी समाज और उनकी वर्तमान चुनौतियाँ"

प्रस्तुत/ वाचन/ सत्र संचालन/ अध्यक्षता की ।

डॉ. पंकज सिंह
स्थानीय सचिव
मध्यप्रदेश इतिहास परिषद्

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg

प्रो. नवीन गिडियन
सचिव
मध्यप्रदेश इतिहास परिषद्

प्रो. बी. के. श्रीवास्तव
अध्यक्ष
मध्यप्रदेश इतिहास परिषद्

SANDIPANI ACADEMY • ACHHOTI • DISTT.-DURG (C.G.)

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

INTERNATIONAL SEMINAR

On

Struggle for 'Self' : With Special Reference to the Freedom Movement

06 to 08 August 2022

Organised by Bhartiya Itihas Sankalan Samiti, Chhattisgarh Prant

In collaboration with

Indira Gandhi National Centre for the Arts, under the Ministry of Culture, Govt. of India, New Delhi,
& Indian Council of Historical Research, Ministry of Education, Govt. of India, New Delhi

On the occasion of

'Azadi Ka Amrit Mahotsav'

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Ms./Mr. ममता ध्रुव
of पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर has delivered and invited lecture / chaired a session / participated / presented a paper entitled छत्तीसगढ़ की अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन
in the International Seminar on "Struggle for 'Self' : With Special Reference to the Freedom Movement" held at Raipur, Chhattisgarh.

Dr. Nitesh Kumar Mishra	Prof. Praveen Kumar Mishra	Mr. Dhal Singh Dewangan
Adhyaksh	Mahasachiv	Yuva Pramukh
(BISS, Chhattisgarh Prant)	(BISS, Chhattisgarh Prant)	(BISS, Chhattisgarh Prant)

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to certify that

DR. ABHA DUBEY

Assistant Professor (Advisor), Sandipani Academy, Achhoti, Durg, Chhattisgarh

has participated in the **"Three Day Workshop on Basic Statistical Data Analysis using SPSS"** organized by A2Z EduLearningHub on 5th , 6th & 7th November 2021.

Venue: Online
Credential ID: SPD033N

A2Z EDULEARNINGHUB LLP ★ PIN:685 595 ★ UDUMBANNOOR

Director
A2Z EduLearningHub LLP

Regd. office: Door No. X/374, Kuthukallinkal, Udumbannoor, Kerala, India-685595

*Authorities accepting the certificate may check its authenticity at the web portal https://edulearninghub.com/credential-id-verification/

WhiteCode
Organizing Partner

Certificate of Participation

Maharashtra Association of Social Work Educators (MASWE) & Bhagini Mandal Chopda's College of Social Work, Chopda, Dist-Jalgaon

Jointly Organized Two Days National Level Webinar On

"Social Work Intervention in 'Corona Pandemic Crisis'-Issues, Challenges, Strategies, and Role"

This is to certify that

Dr. Abha Dubey

From: Sandipani Academy

has participated in the National Level webinar on the theme "Social Work Intervention in 'Corona Pandemic Crisis'-Issues, Challenges, Strategies, and Role" held on 8th May to 9th May. 2020 (6 hours).

Certificate ID: W3615

Prof. Ashish Gujrathi	Dr. Anant Deshmukh	Dr. I. M. Saundankar	Dr. Deepak Walokar	Mr. Amit Patil
Convener, National Webinar	IQAC Coordinator	Principal, BMC's College Of Social Work, Chopda	President MASWE, Director, Karve Institute of Social Service, Pune	CEO, WhiteCode

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt.

TheUniversal Talks with History Talks by Param

Consigns

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

THIS IS PRESENTED TO

Dr. Nazia Abid Khan

Sandipani Academy, Achhoti, Durg

for participating in the webinar on July 12, 2020

on the topic

"Contribution of Ancient India in Science and Technology"

By Param Kumar and Ojas Dubey

CHIEF GUEST
MR. DHIRENDRA SHARMA
STATE COORDINATOR
IPE GLOBAL

MR. SANTOSH DUBEY
PRESIDENT
CESCO

DR SAURABH KUMAR
NODAL OFFICER & CONSULTANT
SPIU CHHATTISGARH

GUEST OF HONOUR
MR. ASHUTOSH TRIPATHI
EXECUTIVE DIRECTOR
RAIPUR REGION
KRISHNA PUBLIC SCHOOL

CNI NEWS

Principal
(Edu...)
Sandipani Academy
Achhoti, ... (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Achhoti (Murmunda), Kumhari – Ahiwara Road, Dist.- Durg (C.G.)
Affiliated to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Participation Certificate

This certificate hereby presented to

Dr. Nazia Ahmed
Principal
Sandipani Academy, Achhoti

for attending "Faculty Development Program on Innovation in E-learning and Learning Management System" organised by Department of Education, Sandipani Academy on 8th & 9th June 2021

Mr. Mahendra Choubey	Mr. Vineet Choubey	Dr. Nazia Ahmed	Dr. Abha Dubey	Dr. Sandhya Pujari
Chief Patron	Patron	Principal	Convener	Organising Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Achhoti (Murmunda), Kumhari – Ahiwara Road, Dist.- Durg (C.G.)
Affiliated to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Participation Certificate

This certificate hereby presented to

Dr. Nazia Ahmed
Principal
Sandipani Academy

for attending IQAC Initiative National Webinar on "समय की पुकार योग बने जीवन का आधार"
organised by Sandipani Academy on 25-26 June 2021.

Mr. Mahendra Choubey
Patron

Dr. Nazia Ahmed
Principal

Dr. Abha Dubey
Convener

Dr. Sandhya Pujari
Convener

Mrs. Meena Pandey
Organising Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Vipra Arts,Commerce and Physical Education College Raipur C.G.

NAAC Accredited with CGPA 2.73

International Webinar

On

Standing of teachers in providing a stress free platform for learning during & post pandemic COVID-19

Certificate of Participation

This is to certify that ***Dr. Nazia Ahmed*** *from* ***Sandipani Academy, Achhoti, Durg*** *participated in the International Webinar on Standing of Teachers in providing a stress free platform for learning and post Pandemic COVID-19 organized by Department of Education,* ***Vipra Arts Commerce and Physical Education College*** *Raipur, Chhattisgarh dated on* ***06 to 08 August 2020.***

Dr. Divya Sharma

Convener

Dr. Meghesh Tiwari

Principal

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

Certificate ID
2YSQXU-CE000176

BHANUPRATAPDEO GOVT PG COLLEGE

UTTAR BASTAR, KANKER (CG) INDIA

(Affiliated to Bastar University, Jagdalpur)
Accredited by NAAC with GRADE 'B'

International Webinar on

COVID-19 PANDEMIC: PSYCHOSOCIAL PROBLEMS AND SOLUTIONS

Organized by: Department of Psychology, English and Zoology

This is to certify that

Dr. Nazia Abid Khan

of Sandipani Academy, Achhoti, Durg

has actively participated in the international webinar on "Covid-19 Pandemic: Psychosocial Problems and Solutions" organized by Bhanupratapdeo Govt PG College, Kanker (CG) on Friday, 26 June 2020. We wish him/her all the success.

Dr. Archana Singh
Convener

Dr. Manoj K Rao
Organizing Secretary

Mrs. Sumita Pande
Organizing Secretary

Dr. K.R.Dhruv
Principal

Principal
(Education)
Sandipani Academy

Govt. Nehru PG College, Dongargarh

Dist. - Rajnandgaon (C.G.)
Email ID – collegedgg@gmail.com , Website – www.gnpgcollege.in
LL: 07823-233885 Accredited by NAAC with Grade "B" (CGPA – 2.21)

E- Certificate

PLT8NY-CE000184

Dated : 30th June 2020

This is to Certify that Dr./Mr./Mrs./Ms. Dr. Nazia Abid Khan has successfully participated in the National Webinar On Stress Management in Adolescents During Covid-19 : Nutritional and Psychological Aspects, organized by Department of Home Science & I.Q.A.C. Govt. Nehru PG College, Dongargarh, Dated on 30th June 2020.

Dr. Tarrannum
Organizer Secretory

Dr. (Smt.) E.V. Revaty
Convenor

Dr . K.L. Tande[illegible]
Principal & Pat[illegible]

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Ach[illegible]ti, Distt. Durg (C.G.)

Govt. Arts & Comm. Girls College, Devendra Nagar, Raipur (CG)

NATIONAL WEBINAR ON "EMERGING TRENDS IN ONLINE EDUCATION: PRESENT AND FUTURE PROSPECTS"

CERTIFICATE

This is to certify that Dr. Nazia Abid Khan

participated in the national webinar on "Emerging Trends in Online Education: Present and Future Prospects" conducted by IQAC Govt. Arts and Commerce Girls College, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

IQAC Coordinator
Dr. Kavita Sharma

In-Principal
Dr. Ushakiran Agrawal

10-05-2020

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

HEMCHAND YADAV UNIVERSITY, DURG (C.G.)

&

GOVT. VISHWANATH YADAV TAMASKAR PG AUTONOMOUS COLLEGE, DURG (C.G.)

JOINTLY ORGANIZED

10 DAYS FACULTY DEVELOPMENT PROGRAM

(FROM 22 JULY TO 31 JULY 2020)

CERTIFICATE OF MERIT

It is certified that Shri/Smt/Dr. Dr. Nazia Ahmed Professor/ Assistant Professor of Sandipani Academy, Achhoti, Durg has participated in 10 days Faculty Development Program jointly organized by Hemchand Yadav University, Durg (C.G) & Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg (C.G.) on the theme " ONLINE EDUCATION : BOON FOR UPLIFTMENT OF HIGHER EDUCATION INSTITUTES" from 22nd july 2020 to 31st july 2020.

It is further certified that He/She has cleared test examination conducted after the completion of Faculty Development Program with good percentage of marks. We wish him/her success in life

Dr. Prashant Kumar Shrivastava	Dr. R.N. Singh	Dr. C.L. Dewangan	Dr. Aruna Patla
Dean Student Welfare	Govt. V.Y.T. PG. Autonomous College, Durg (C.G)	Registrar	Vice Chancellor

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA, DURG (C.G.)

10 Days online workshop for college Principals, IQAC coordinators and NAAC coordinators
From 7th May 2021 to 16th May 2021

THEMES

- Seven Criterias of New NAAC Accreditation Framework
- Health Hygiene (Yoga, Meditation & Psychological Issues)
- Legal Awareness Program.

Certificate of Participation

It is certified that Dr./Shri/Smt/Miss Dr. Nazia Ahmed Principal/IQAC Coordinator/NAAC Coordinator/Professor/Researcher of Sandipani Academy, Vill- Achhoti, Dist- Durg, C.G. has participated in 10 days online workshop organized by Hemchand Yadav University, Durg (C.G.) from 7th May 2021 to 16 th May 2021.

Hemchand Yadav University, Durg appreciates his/her contribution in successful organization of 10 days online workshop and wish every success in his/her life .

Dr. Prashant Shrivatava
Dean, Students walfare

Dr. C.L. Dewangan
Registrar

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor

Made for free with Certify'em

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Five Days Online Workshop on "New NAAC Accreditation Framework"
From 9th April To 14th April 2021

CERTIFICATE

It is certified that Dr./Shri/Smt./Miss **Dr. Nazia Ahmed** Principal/ IQAC Coordinator/ NAAC Coordinator/ Professor/Research Scholar/ University Officer of **Sandipani Academy , Vil- Achhoti , Dist-Durg** has participated in five days online workshop on '**New NAAC Accreditation Framework**' From 9th April To 14th April 2021 organized by Hemchand Yadav University, Durg (C.G.).

Hemchand Yadav University appreciates his/her contribution in successful organization of online workshop and wish every success in his/her life.

Dr. Prashant Shrivastava
Dean, Students Welfare

Dr. C.L. Dewangan
Registrar

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor

Made for free with Certify'em

Certificate Id
H4Y5PI-CE000042

SHRI SHANKARACHARYA MAHAVIDYALAYA

Junwani- Bhilai, Distt- Durg, C.G., India

NAAC Reaccredited with "B" Grade; an ISO 9001:2015 Certified Institute
{Recognised by Govt. of C.G. & UGC u/s 2(f) and 12(B) of the UGC Act, 1956 ; Affiliated to Hemchand Yadav University, Durg, C.G.}

"Role of Music in Personality Development of Students: In Perspective of Corona"

"CERTIFICATE OF PARTICIPATION"

This Certificate of Participation is awarded to **Dr. Nazia Ahmed** *from* **Sandipani Academy, Achhoti, Durg** *for being a virtual participant in One day National Webinar of "Role of Music in Personality Development of Student: In Perspective of Corona" on 21st July, 2020.*

Director & Principal
Dr. Raksha Singh

Addl. Director
Dr. J. Durga Prasad Rao

Organising Secretary
Dr. Shraddha Mishra

SANDIPANI ACADEMY • DISTT.-DURG (C.G.) • ACHHOTI (MURMUNDA)

Organised by Cultural Cell, Shri Shankaracharya Mahavidyalaya, Junwani- Bhilai, Distt- Durg (C.G.) India

ISSN :2582-1792

शोधसमागम®

A DOUBLE BLIND, PEER REVIEWED QUARTERLY MULTI DISCIPLINARY AND BILINGUAL RESEARCH JOURNAL

SANDIPANI ACADEMY

Special issue for Conference
National Conference on

"The Impact of National Education Policy (2020) on the Higher Education Sector"

30th November 2021

Organised by:
Department of Education
Sandipani Academy,
Kumhari-Ahiwara Road, Achhoti (Murmunda)
Dist- Durg (Chhattisgarh)

&

SHODH SAMAGAM
Double - Blind, peer-reviewed, quarterly, multidisciplinary and bilingual research journal

Publisher

Aditi Publication

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

६०

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

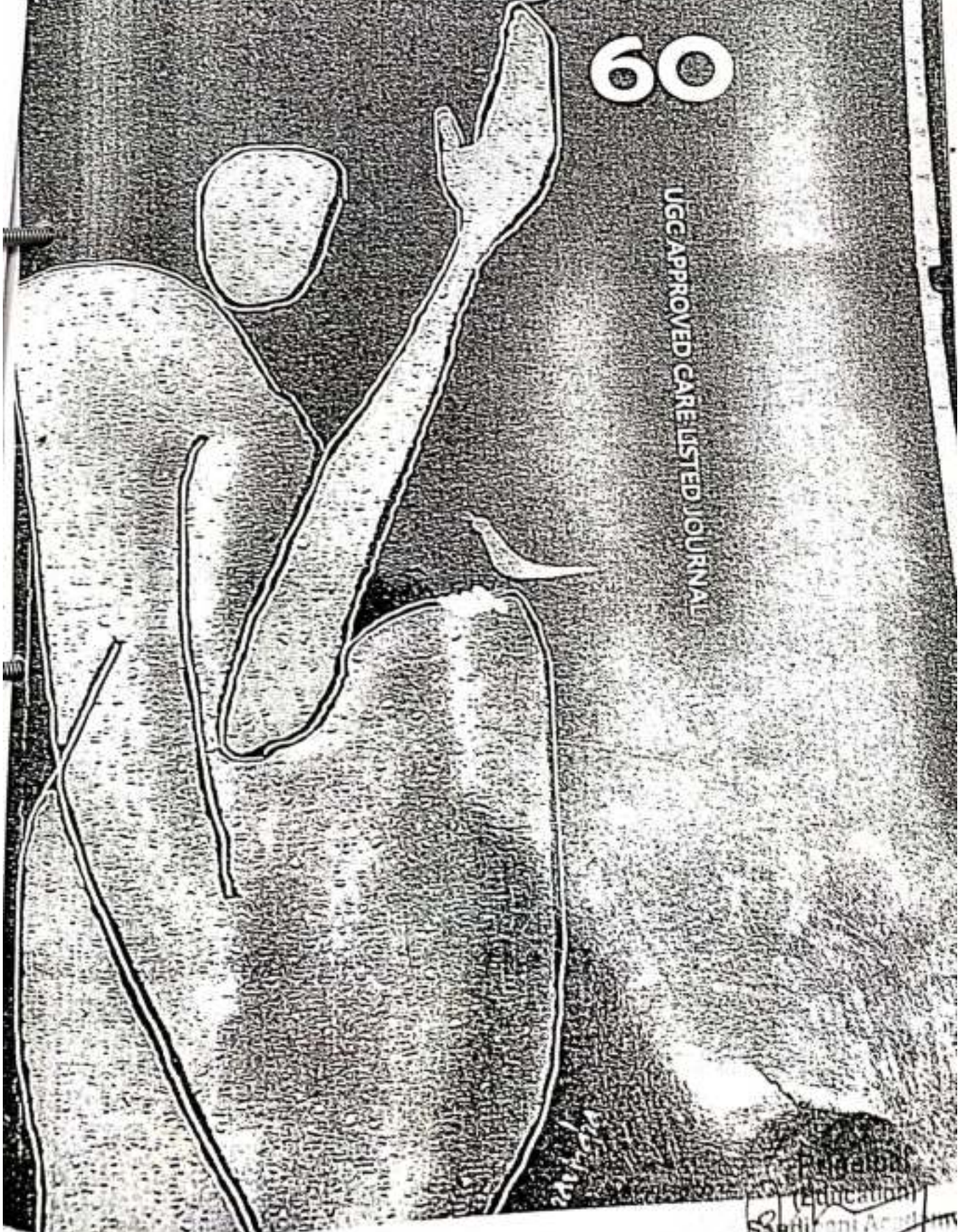

Principal
(Education)

ISBN: 978-81-947826-1-2

Eureka Publication

National Education Policy 2020: Vision for India's future Education

Principal
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Editors

Dr. Riya Tiwari

Dr. S.G. Sharma

Dr. Yogita Jiwane

Sandipani Academy

ISBN : 978-93-92568-07-7

GENDER PERSPECTIVES IN EDUCATION

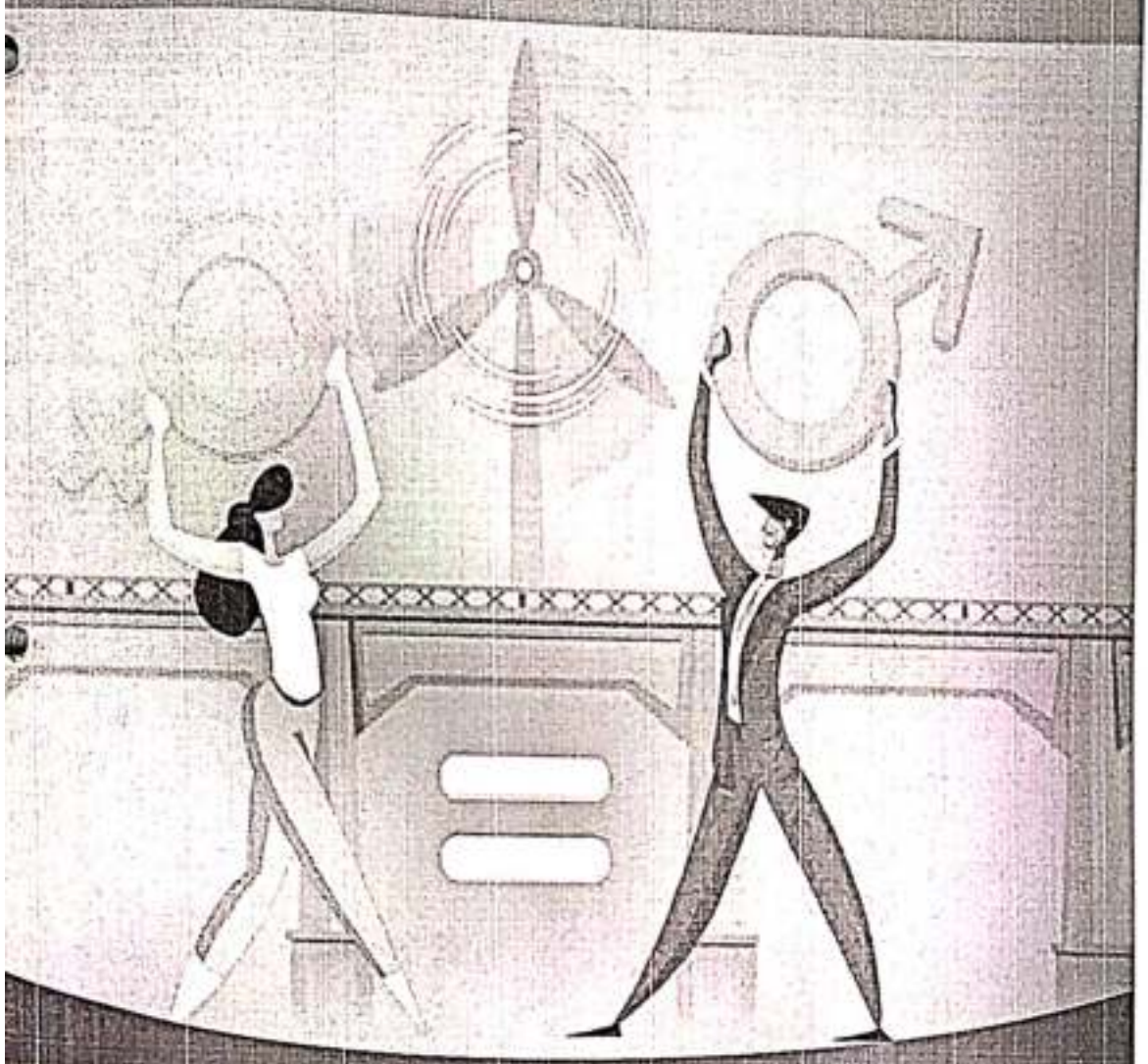

DR. DIVYA SHARMA

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

ISBN : 978-93-92568-07-7

GENDER PERSPECTIVES IN EDUCATION

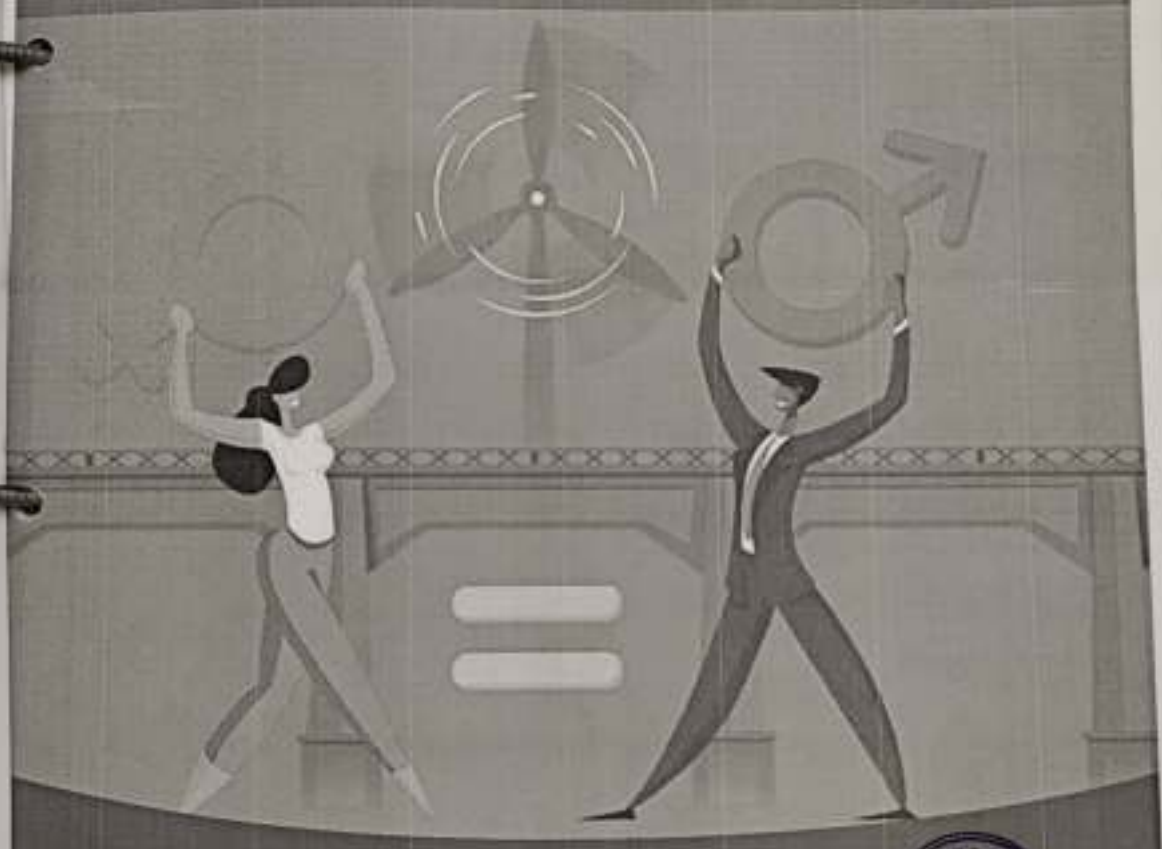

DR. DIVYA SHARMA

Principal

Aditi Publication

&

SHODH SAMAGAM
Double - Blind, peer-reviewed, quarterly,
multidisciplinary and bilingual research journal

ISBN : 978-93-92568-13-8

Global Citizenship Education: A Pressing Priority of the Era

Dr. Arun Kumar Dubey ● Dr. Abha Dubey

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

ISBN: 978-81-947826-1-2

National Education Policy 2020: Vision for India's future Education

Principal
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Editors

Dr. Riya Tiwari
Dr. S.G. Sharma
Dr. Yogita Jiwane

Sandipani Academy

OUR PUBLICATIONS
A Commentary on India's Recent Financial Policies
Advanced Study in Money and Banking
A HANDBOOK ON GST IN INDIA
INNOVATION AND ENTREPRENEURSHIP
Empowerment and Social Development
Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph : 011-22753916
ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021
दृष्टिकोण
India's Leading Refereed Hindi Language Journal
IMPACT FACTOR : 5.051

ISSN: 2347-3142 (Print)
ISSN: 2454-2687 (Online)

International Journal of Reviews and Research in Social Sciences

IJRRSS

International Peer-reviewed Journal of Humanities and Social Sciences

January-March [illegible]
ISSN- 2347-5145 (Print)
ISSN- 2454-2687 (Online)

nternational Journal of

Reviews and Research in Social Sciences

JRRSS

n International Peer-reviewed
urnal of Humanities and Social Sciences

ISSN 0975-119

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

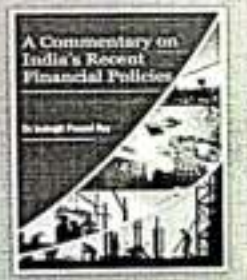

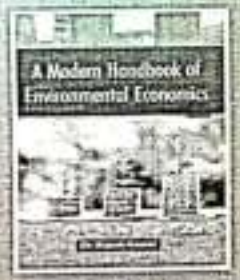

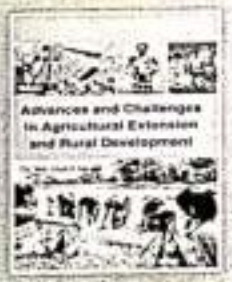

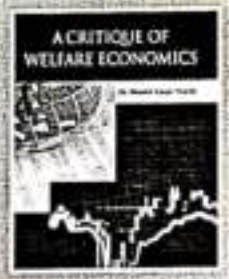

ISSN 0975-119
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021
दृष्टिकोण
कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका
India's Leading Refereed Hindi Language Journ
IMPACT FACTOR : 5.051
OUR PUBLICATIONS
25 Years of Renewable Energy in India
A Commentary on India's Recent Financial Policies
Advanced Study in Money and Banking
A Modern Handbook of Environmental Economics
A HANDBOOK ON GST IN INDIA
Advances and Challenges in Agricultural Extension and Rural Development
INNOVATION AND ENTREPRENEURSHIP
Empowerment and Social Development
A CRITIQUE OF WELFARE ECONOMICS
Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916
Principal

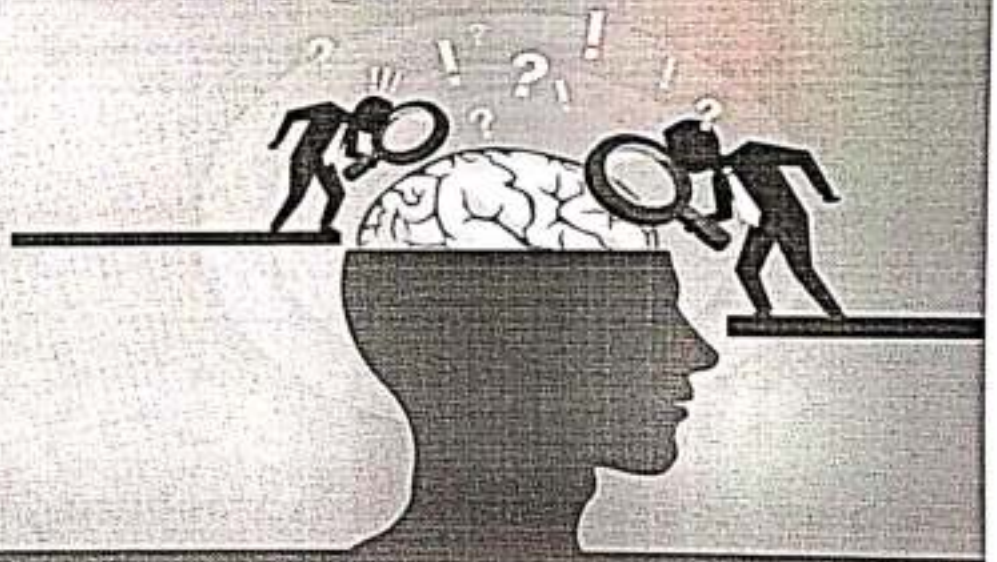

Impact Factor: 2.02

ISSN: 2582-1377

Global Journal of Emerging Trends in Education and Social Science

Peer Reviewed, Referred Journal

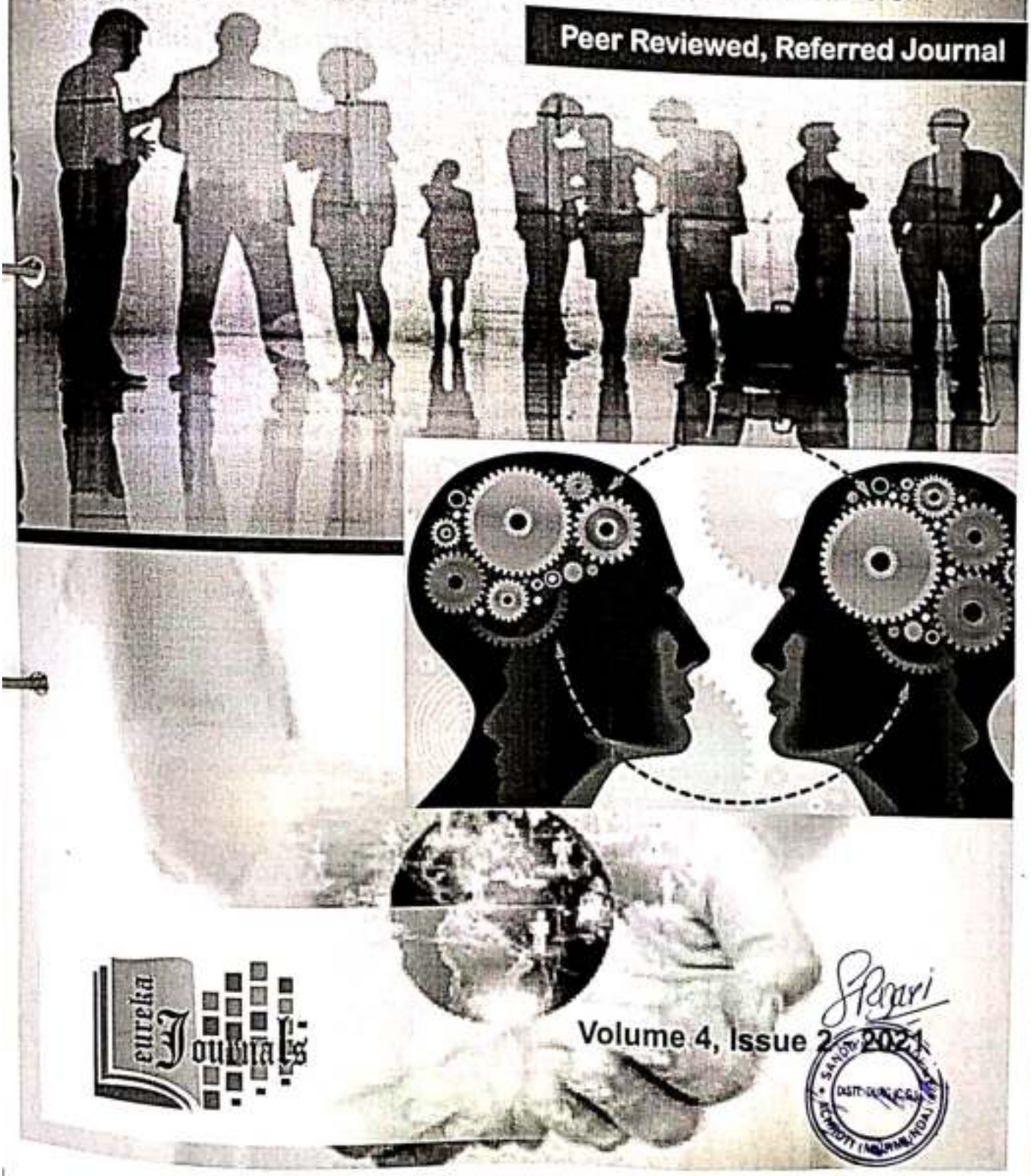

Eureka Journals

Volume 4, Issue 2, 2021

SANDIPANI ACADEMY

Kumhari – Ahiwara Road, Achhoti, (Murmunda), Dist.- Durg (C.G.)
Affiliated to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Certificate
of Appreciation

This is to certify that

Meena Pandey

Assistant professor

Sandipani Academy , Achhoti

has presented a paper entitled

New Education policy and Teacher Education

in the National Conference on "The Impact of New Education Policy (2020) on Higher Education Sector" organized by Department of Education, Sandipani Academy on 30th November 2021.

MR. MAHENDRA CHOUBEY
Patron

DR. NAZIA AHMED
Convener

DR. ABHA DUBEY
Convener

DR. SANDHYA PUJARI
Organising Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
DIST. DURG (C.G.)

NATIONAL SEMINAR

on

PUNARJAGRAN:

"Relevance of Ancient Indian Consciousness of Knowledge in Global Context"

13 -14 September 2022

Sponsored By

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Indian Council of Social Science Research, New Delhi

Organized By

MANSA COLLEGE OF EDUCATION

Recognized By NCTE, Accredited By NAAC (B 2.68),
Affiliated to Hemchand Yadav University,Durg

Certificate of Appreciation

This certificate is proudly awarded to

Meena Pandey

Of

Sandipini Academy Achoti Durg CG

in recognition of participation / presentation of paper on

योग व आध्यात्मिकता

In the interdisciplinary national seminar.
We wish to appreciate your valuable presence and active participation in the event.

B.S. SAXENA
Chairman

Dr. SMITA SAXENA
Convener

Dr. RITIKA SONI
Organizing Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

Chhattisgarh TRTI Tribal Research and Training Institute

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर-24, नवा रायपुर, अटल नगर, छत्तीसगढ़

राष्ट्रीय जनजातीय साहित्य महोत्सव 2022

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, डॉ./श्री/श्रीमती/कु. ......*ममता ध्रुव*...................................द्वारा छत्तीसगढ़ आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा दिनांक 19-21 अप्रैल 2022 तक आयोजित 'राष्ट्रीय जनजातीय साहित्य महोत्सव में ...*छत्तीसगढ़ का जनजातीय समाज : विकास और उनकी वर्तमान चुनौतियां*... ....विषय पर अपना आलेख/शोधपत्र का प्रस्तुतीकरण किया गया।

शुभकामनाओं के साथ ....

स्थान : पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम रायपुर, छत्तीसगढ़

दिनांक : 21-04-2022

(श्रीमती शम्मी आबिदी, IAS)
आयुक्त सह संचालक
आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

Principal
(Education)
Sandipani Academy

आयोजक

गोंडवाना स्वदेश

गढ़बो नवा छत्तीसगढ़

गोंडवाना स्वदेश- मासिक पत्रिका, रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा आयोजित
एवं संस्कृति विभाग व आदिवासी विकास विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी

दिनांक : 27, 28 एवं 29 दिसंबर 2019

आदिवासी अस्मिता: कल, आज और कल

(आदिवासी संस्कृति, कला, शिक्षा, साहित्य, विस्थापन, समस्या एवं निदान पर केन्द्रित)

:प्रमाण-पत्र:

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./ डॉ./ श्री/ श्रीमती/ सुश्री ममता ध्रुव ने दिनांक 27,28 एवं 29 दिसंबर 2019 को गोंडवाना स्वदेश मासिक पत्रिका द्वारा "आदिवासी अस्मिता: कल, आज और कल" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में प्रतिभागी/ विषय विशेषज्ञ/ अध्यक्ष/ वक्ता/ सत्र-अध्यक्ष/ सत्र संचालक/ रिपोर्टियर/ आयोजन समिति के सदस्य के रूप में सहभागिता की। इन्होंने छ. ग. मे मराठा शासन काल मे जनजातियो की सामाजिक स्थिति विषय पर शोध पत्र/ शोध आलेख/ व्याख्यान प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी संरक्षक	संगोष्ठी संयोजक	संगोष्ठी सह-संयोजक	संगोष्ठी सह-संयोजक
मान. श्री अमरजीत भगत	**श्री रमेश ठाकुर**	**डॉ. नरेश कुमार साहू**	**श्री जितेन्द्र सोनकर**
कैबिनेट मंत्री	संपादक, गोंडवाना स्वदेश	सदस्य, संपादक मंडल गोंडवाना स्वदेश	सदस्य, संपादक मंडल गोंडवाना स्वदेश
संस्कृति, सांख्यिकी एवं योजना विभाग	जन जागरण के लिए प्रतिबद्ध	जन जागरण के लिए प्रतिबद्ध	जन जागरण के लिए प्रतिबद्ध
छत्तीसगढ़ शासन	मासिक पत्रिका	मासिक पत्रिका	मासिक पत्रिका

Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION SPONSORED

NATIONAL SEMINAR ON GANDHIWADI VICHARDHARA KI SARTHAKTA

ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

21-23 FEBRUARY 2020

ORGANIZED BY

SCHOOL OF STUDIES IN HISTORY PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY

RAIPUR, C.G.

(ACCREDITED "A" GRADE BY "NAAC")

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Mr./Mrs./Ms. ममता ध्रुव
of एम. फिल, पं. रविं शुक्ल वि. वि. रायपुर (छ.ग.)
has attended National Seminar on "Gandhiwadi Vichardhara Ki Sarthakta" as Chairperson/Invited speaker /Participant and presented paper entitled महात्मा गाँधी और स्वच्छता।

Prof.(Smt.) Abha R. Pal
Convener

Dr. Dishwar Nath Khute
Organizing Secretary

Prof. Keshari Lal Verma
Vice-Chancellor

Principal

मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् 39वाँ अधिवेशन

एवं

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विविध आयाम – मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में

26 एवं 27 मार्च, 2022

आयोजक - इतिहास विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/ श्रीमती/ डॉ./ प्रो. ममता ध्रुव, शोध छात्रा, प० र० वि० वि०, रायपुर, छत्तीसगढ़

मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् 39 वें अधिवेशन एवं "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विविध आयाम- मध्यप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिनांक 26-27 मार्च को अपनी सहभागिता दी एवं अपना शोध पत्र शीर्षक "छत्तीसगढ़ का आदिवासी समाज और उनकी वर्तमान चुनौतियाँ"

प्रस्तुत/ वाचन/ सत्र संचालन/ अध्यक्षता की ।

डॉ. पंकज सिंह स्थानीय सचिव मध्यप्रदेश इतिहास परिषद्	प्रो. नवीन गिडियन सचिव मध्यप्रदेश इतिहास परिषद्	प्रो. बी. के. श्रीवास्तव अध्यक्ष मध्यप्रदेश इतिहास परिषद्

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Dr...

SANDIPANI ACADEMY ACHHOTI, MURMUNDA (DISTT.-DURG C.G.)

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

INTERNATIONAL SEMINAR

On

Struggle for 'Self' : With Special Reference to the Freedom Movement

06 to 08 August 2022

Organised by Bhartiya Itihas Sankalan Samiti, Chhattisgarh Prant

In collaboration with

Indira Gandhi National Centre for the Arts, under the Ministry of Culture, Govt. of India, New Delhi,
& Indian Council of Historical Research, Ministry of Education, Govt. of India, New Delhi

On the occasion of

'Azadi Ka Amrit Mahotsav'

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Ms./Mr. ममता ध्रुव
of पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर has delivered and invited lecture / chaired a session / participated / presented a paper entitled छत्तीसगढ़ की अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन
in the International Seminar on "Struggle for 'Self' : With Special Reference to the Freedom Movement" held at Raipur, Chhattisgarh.

Dr. Nitesh Kumar Mishra	Prof. Praveen Kumar Mishra	Mr. Dhal Singh Dewangan
Adhyaksh	Mahasachiv	Yuva Pramukh
(BISS, Chhattisgarh Prant)	(BISS, Chhattisgarh Prant)	(BISS, Chhattisgarh Prant)

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to certify that

DR. ABHA DUBEY

Assistant Professor (Advisor), Sandipani Academy, Achhoti, Durg, Chhattisgarh

has participated in the **"Three Day Workshop on Basic Statistical Data Analysis using SPSS"** organized by A2Z EduLearningHub on 5th , 6th & 7th November 2021.

Venue: Online
Credential ID: SPD033N

A2Z EDULEARNINGHUB LLP ★ PIN:685 595 ★ UDUMBANNOOR

Director
A2Z EduLearningHub LLP

Regd. office: Door No. X/374, Kuthukallinkal, Udumbannoor, Kerala, India-685595

*Authorities accepting the certificate may check its authenticity at the web portal https://edulearninghub.com/credential-id-verification/

WhiteCode
Organizing Partner

Certificate of Participation

Maharashtra Association of Social Work Educators (MASWE) & Bhagini Mandal Chopda's College of Social Work, Chopda, Dist-Jalgaon

Jointly Organized Two Days National Level Webinar On

"Social Work Intervention in 'Corona Pandemic Crisis'-Issues, Challenges, Strategies, and Role"

This is to certify that

Dr. Abha Dubey

From: Sandipani Academy

has participated in the National Level webinar on the theme "Social Work Intervention in 'Corona Pandemic Crisis'-Issues, Challenges, Strategies, and Role" held on 8th May to 9th May. 2020 (6 hours).

Certificate ID: W3615

Prof. Ashish Gujrathi	Dr. Anant Deshmukh	Dr. I. M. Saundankar	Dr. Deepak Walokar	Mr. Amit Patil
Convener, National Webinar	IQAC Coordinator	Principal, BMC's College Of Social Work, Chopda	President MASWE, Director, Karve Institute of Social Service, Pune	CEO, WhiteCode

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt.

TheUniversal Talks with History Talks by Param

Consigns

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

THIS IS PRESENTED TO

Dr. Nazia Abid Khan

Sandipani Academy, Achhoti, Durg

for participating in the webinar on July 12, 2020

on the topic

"Contribution of Ancient India in Science and Technology"

By Param Kumar and Ojas Dubey

CHIEF GUEST
MR. DHIRENDRA SHARMA
STATE COORDINATOR
IPE GLOBAL

MR. SANTOSH DUBEY
PRESIDENT
CESCO

DR SAURABH KUMAR
NODAL OFFICER & CONSULTANT
SPIU CHHATTISGARH

GUEST OF HONOUR
MR. ASHUTOSH TRIPATHI
EXECUTIVE DIRECTOR
RAIPUR REGION
KRISHNA PUBLIC SCHO...

CNI
Central News INDIA
NEWS

Principal
(Edu...)
Sandipa... ...my
Achhoti, Dis... (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Achhoti (Murmunda), Kumhari – Ahiwara Road, Dist.- Durg (C.G.)
Affiliated to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Participation Certificate

This certificate hereby presented to

Dr. Nazia Ahmed
Principal
Sandipani Academy, Achhoti

for attending "Faculty Development Program on Innovation in E-learning and Learning Management System" organised by Department of Education, Sandipani Academy on 8th & 9th June 2021

Mr. Mahendra Choubey	Mr. Vineet Choubey	Dr. Nazia Ahmed	Dr. Abha Dubey	Dr. Sandhya Pujari
Chief Patron	Patron	Principal	Convener	Organising Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Achhoti (Murmunda), Kumhari – Ahiwara Road, Dist.- Durg (C.G.)
Affiliated to Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Participation Certificate

This certificate hereby presented to

Dr. Nazia Ahmed
Principal
Sandipani Academy

for attending IQAC Initiative National Webinar on "समय की पुकार योग बने जीवन का आधार"
organised by Sandipani Academy on 25-26 June 2021.

Mr. Mahendra Choubey
Patron

Dr. Nazia Ahmed
Principal

Dr. Abha Dubey
Convener

Dr. Sandhya Pujari
Convener

Mrs. Meena Pandey
Organising Secretary

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Vipra Arts,Commerce and Physical Education College Raipur C.G.

NAAC Accredited with CGPA 2.73

International Webinar

On

Standing of teachers in providing a stress free platform for learning during & post pandemic COVID-19

Certificate of Participation

This is to certify that ***Dr. Nazia Ahmed*** *from* ***Sandipani Academy, Achhoti, Durg*** *participated in the International Webinar on Standing of Teachers in providing a stress free platform for learning and post Pandemic COVID-19 organized by Department of Education,* ***Vipra Arts Commerce and Physical Education College*** *Raipur, Chhattisgarh dated on* ***06 to 08 August 2020.***

Dr. Divya Sharma

Convener

Dr. Meghesh Tiwari

Principal

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

Certificate ID
2YSQXU-CE000176

BHANUPRATAPDEO GOVT PG COLLEGE

UTTAR BASTAR, KANKER (CG) INDIA

(Affiliated to Bastar University, Jagdalpur)
Accredited by NAAC with GRADE 'B'

International Webinar on

COVID-19 PANDEMIC: PSYCHOSOCIAL PROBLEMS AND SOLUTIONS

Organized by: Department of Psychology, English and Zoology

This is to certify that

Dr. Nazia Abid Khan

of Sandipani Academy, Achhoti, Durg

has actively participated in the international webinar on "Covid-19 Pandemic: Psychosocial Problems and Solutions" organized by Bhanupratapdeo Govt PG College, Kanker (CG) on Friday, 26 June 2020. We wish him/her all the success.

Dr. Archana Singh
Convener

Dr. Manoj K Rao
Organizing Secretary

Mrs. Sumita Pande
Organizing Secretary

Dr. K.R.Dhruv
Principal

Principal
(Education)
Sandipani Academy

Govt. Nehru PG College, Dongargarh

Dist. - Rajnandgaon (C.G.)
Email ID – collegedgg@gmail.com , Website – www.gnpgcollege.in
LL: 07823-233885 Accredited by NAAC with Grade "B" (CGPA – 2.21)

E- Certificate

PLT8NY-CE000184

Dated : 30th June 2020

This is to Certify that Dr./Mr./Mrs./Ms. Dr. Nazia Abid Khan has successfully participated in the National Webinar On Stress Management in Adolescents During Covid-19 : Nutritional and Psychological Aspects, organized by Department of Home Science & I.Q.A.C. Govt. Nehru PG College, Dongargarh, Dated on 30th June 2020.

Dr. Tarrannum
Organizer Secretory

Dr. (Smt.) E.V. Revaty
Convenor

Dr . K.L. Tande[illegible]
Principal & Patr[illegible]

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Ach[illegible]ti, Distt. Durg (C G)

Govt. Arts & Comm. Girls College, Devendra Nagar, Raipur (CG)

NATIONAL WEBINAR ON "EMERGING TRENDS IN ONLINE EDUCATION: PRESENT AND FUTURE PROSPECTS"

CERTIFICATE

This is to certify that Dr. Nazia Abid Khan

participated in the national webinar on "Emerging Trends in Online Education: Present and Future Prospects" conducted by IQAC Govt. Arts and Commerce Girls College, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

IQAC Coordinator
Dr. Kavita Sharma

In-Principal
Dr. Ushakiran Agrawal

10-05-2020

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

HEMCHAND YADAV UNIVERSITY, DURG (C.G.)

&

GOVT. VISHWANATH YADAV TAMASKAR PG AUTONOMOUS COLLEGE, DURG (C.G.)

JOINTLY ORGANIZED

10 DAYS FACULTY DEVELOPMENT PROGRAM

(FROM 22 JULY TO 31 JULY 2020)

CERTIFICATE OF MERIT

It is certified that Shri/Smt/Dr. Dr. Nazia Ahmed Professor/ Assistant Professor of Sandipani Academy, Achhoti, Durg has participated in 10 days Faculty Development Program jointly organized by Hemchand Yadav University, Durg (C.G) & Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg (C.G.) on the theme " ONLINE EDUCATION : BOON FOR UPLIFTMENT OF HIGHER EDUCATION INSTITUTES" from 22nd july 2020 to 31st july 2020.

It is further certified that He/She has cleared test examination conducted after the completion of Faculty Development Program with good percentage of marks. We wish him/her success in life

Dr. Prashant Kumar Shrivastava	Dr. R.N. Singh	Dr. C.L. Dewangan	Dr. Aruna Patla
Dean Student Welfare	Govt. V.Y.T. PG. Autonomous College, Durg (C.G)	Registrar	Vice Chancellor

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA, DURG (C.G.)

10 Days online workshop for college Principals, IQAC coordinators and NAAC coordinators
From 7th May 2021 to 16th May 2021

THEMES

- Seven Criterias of New NAAC Accreditation Framework
- Health Hygiene (Yoga, Meditation & Psychological Issues)
- Legal Awareness Program.

Certificate of Participation

It is certified that Dr./Shri/Smt/Miss Dr. Nazia Ahmed Principal/IQAC Coordinator/NAAC Coordinator/Professor/Researcher of Sandipani Academy, Vill- Achhoti, Dist- Durg, C.G. has participated in 10 days online workshop organized by Hemchand Yadav University, Durg (C.G.) from 7th May 2021 to 16 th May 2021.

Hemchand Yadav University, Durg appreciates his/her contribution in successful organization of 10 days online workshop and wish every success in his/her life .

Dr. Prashant Shrivatava
Dean, Students walfare

Dr. C.L. Dewangan
Registrar

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor

Made for free with Certify'em

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Hemchand Yadav Vishwavidyalaya, Durg (C.G.)

Five Days Online Workshop on "New NAAC Accreditation Framework"
From 9th April To 14th April 2021

CERTIFICATE

It is certified that Dr./Shri/Smt./Miss **Dr. Nazia Ahmed** Principal/ IQAC Coordinator/ NAAC Coordinator/ Professor/Research Scholar/ University Officer of **Sandipani Academy , Vil- Achhoti , Dist-Durg** has participated in five days online workshop on '**New NAAC Accreditation Framework**' From 9th April To 14th April 2021 organized by Hemchand Yadav University, Durg (C.G.).

Hemchand Yadav University appreciates his/her contribution in successful organization of online workshop and wish every success in his/her life.

Dr. Prashant Shrivastava
Dean, Students Welfare

Dr. C.L. Dewangan
Registrar

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor

Made for free with Certify'em

Certificate Id
H4Y5PI-CE000042

SHRI SHANKARACHARYA MAHAVIDYALAYA

Junwani- Bhilai, Distt- Durg, C.G., India

NAAC Reaccredited with "B" Grade; an ISO 9001:2015 Certified Institute

{Recognised by Govt. of C.G. & UGC u/s 2(f) and 12(B) of the UGC Act, 1956 ; Affiliated to Hemchand Yadav University, Durg, C.G.}

"Role of Music in Personality Development of Students: In Perspective of Corona"

"CERTIFICATE OF PARTICIPATION"

This Certificate of Participation is awarded to **Dr. Nazia Ahmed** *from* **Sandipani Academy, Achhoti, Durg** *for being a virtual participant in One day National Webinar of "Role of Music in Personality Development of Student: In Perspective of Corona" on 21st July, 2020.*

Director & Principal
Dr. Raksha Singh

Addl. Director
Dr. J. Durga Prasad Rao

Organising Secretary
Dr. Shraddha Mishra

SANDIPANI ACADEMY • ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

Organised by Cultural Cell, Shri Shankaracharya Mahavidyalaya, Junwani- Bhilai, Distt- Durg (C.G.) India